चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन
CHARAN SINGH PATHIK KI KAHANIYON MEIN LOK JEEVAN

(मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध)

A THESIS SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

बर्णाली खाउंड

BORNALI KHOUND

MZU REGN. NO: 2010702

Ph.D. REGN. NO: MZU/Ph.D./1678 of 03.11.2020

हिंदी-विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

फरवरी, 2025

FEBRUARY, 2025

चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन
CHARAN SINGH PATHIK KI KAHANIYON MEIN LOK JEEVAN

अनुसंधित्सु
बर्णाली खाउंड
हिंदी-विभाग
By
BORNALI KHOUND
DEPARTMENT OF HINDI

शोध-निर्देशक
वरिष्ठ आचार्य सुशील कुमार शर्मा
SUPERVISOR
SENIOR PROFESSOR SUSHIL KUMAR SHARMA

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

Submitted
In partial fulfillment of the requirement of the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

प्रो. सुशील कुमार शर्मा
वरिष्ठ आचार्य (लेवल-15)
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइज़ोल-796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Prof. Sushil Kumar Sharma
Senior Professor (Level-15)
Department of Hindi
Mizoram University,
Aizawl-796004

Mobile No. 09436105977; 09366112421; Email: sksharma19672@gmail.com ; Website : www.mzu.edu.in

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि बर्णाली खाउंड ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) हिंदी की उपाधि हेतु **'चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन'** विषय पर शोध-कार्य किया है। प्रस्तुत शोध-कार्य अनुसंधित्सु की अपनी निजी गवेषणा का फल है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध या इसके किसी भी अंश को किसी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) हिंदी की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)

शोध-निर्देशक

हिंदी-विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

आइजॉल

फरवरी, 2025

घोषणा-पत्र

मैं बर्णाली खाउंड एतद् द्वारा घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध की विषय सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्य का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गयी है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबंध लेखन के दौरान जिन ग्रंथों की सहायता ली गयी है, उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के सम्मुख हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.-हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)	(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)	बर्णाली खाउंड
अध्यक्ष	शोध-निर्देशक	अनुसंधित्सु

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है। हिंदी कहानियाँ विविध विशेषताओं के साथ समय का अतिक्रम करके वर्तमान स्थिति तक पहुँची हैं। पहले कहानियाँ मौखिक होती थीं। उन मौखिक कहानियों को लोक कथा की संज्ञा दी गयी। वे कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रचलित रहीं। धीरे-धीरे कहानियों ने लिखित रूप लेना प्रारम्भ किया। हिंदी कहानी का क्रमिक विकास है- प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी (1850-1918), प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी (1919-1936), प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी (1937 से आज तक)। हिंदी कहानियों का उद्देश्य मनोरंजन एवं प्रेरणा देने वाला है। चरण सिंह पथिक समकालीन हिंदी कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है- **"चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन"**। प्रस्तुत शोध-प्रबंध छ: अध्यायों में नियोजित है। शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय- **'चरण सिंह पथिक का जीवन एवं रचना संसार'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय- '**चरण सिंह पथिक का जीवन: विविध पड़ाव'** है। इस उप-अध्याय में चरण सिंह पथिक के जीवन के विभिन्न पड़ावों पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय उप-अध्याय- **'चरण सिंह पथिक का रचना संसार'** है। इस उप-अध्याय में चरण सिंह पथिक के रचना संसार का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय- **"लोक जीवन: अवधारणा और स्वरूप"** है। इसके अंतर्गत 'लोक' शब्द का अर्थ, परिभाषा और लोक संस्कृति का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय- **"समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन"** है। इस अध्याय के दो उप-अध्याय हैं। प्रथम उप-अध्याय **'लोक जीवन और लोक साहित्य'** है। इसमें लोक जीवन और लोक साहित्य का परिचय दिया गया है द्वितीय उप-अध्याय- **'समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन का अंतर्सम्बंध'** है। इस उप-अध्याय में समकालीन हिंदी कहानी की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उन समकालीन कहानीकारों और उनकी कहानियों का विश्लेषण किया गया है, जिनमें लोक जीवन की छवियों को उजागर किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- **'चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन'** है। इस अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय- **'लोक जीवन का सामाजिक पक्ष'** है। इसके अंतर्गत समाज के प्रमुख पहलुओं- जाति व्यवस्था, पारिवारिक जीवन, नारी विषयक धारणा, सामाजिक लोक विश्वास एवं परंपराओं का विवेचन किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय- **'लोक जीवन का राजनीतिक पक्ष'** है। इसके अंतर्गत चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन के राजनीतिक पक्ष का चित्रण किया है। तृतीय उप-अध्याय- **'लोक जीवन का आर्थिक पक्ष'** है। इसके अंतर्गत चरण सिंह पथिक की कहानियों में आर्थिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ उप-अध्याय- **'लोक जीवन का सांस्कृतिक पक्ष'** है। इसके अंतर्गत चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष को उद्घाटित किया गया है।

पंचम अध्याय- **"चरण सिंह पथिक की कहानियों का शिल्प विधान"** है। इस अध्याय के अंतर्गत दो उप-अध्याय हैं। प्रथम उप-अध्याय- **'भाषा'** है। इसके अंतर्गत भाषा का अर्थ, परिभाषा एवं चरण सिंह पथिक की कहानियों की भाषा को विश्लेषित किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय- **'शैली'** है। इसके अंतर्गत शैली का अर्थ, परिभाषा एवं चरण सिंह पथिक की कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों (वर्णनात्मक,विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक, पूर्वदीप्ति, पात्रहीन आदि) को विवेचित किया है।

षष्ठ अध्याय- **"समकालीन हिंदी कहानीकारों में चरण सिंह पथिक का स्थान"** है। इसके अंतर्गत समकालीन हिंदी कहानीकारों की कहानियाँ तथा चरण सिंह पथिक की कहानियों की विवेचना की गई है। समकालीन हिंदी कहानियाँ और चरण सिंह पथिक की कहानियों की समानताओं-असमानताओं को विवेचित किया गया है।

उपसंहार के अंतर्गत शोध प्रबंध का सार प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरे शोध निर्देशक प्रो. सुशील कुमार शर्मा, वरिष्ठ आचार्य, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल का अमूल्य योगदान है। उनके परामर्श के कारण ही इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मैं सफल हो पाई हूँ। मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं प्रो. संजय कुमार, डॉ. सुषमा कुमारी. डॉ. अमिष वर्मा के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध कार्य हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

मैं डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। उन्होंने शोध कार्य के दौरान मेरे विषय से सम्बंधित सामग्री उपलब्ध करवाने में सहायता की।

मैं अपने माता-पिता और भाई का भी आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया। मुझे समय से अपना शोध कार्य पूरा करने के लिए प्रेरित किया। जिनके कारण मैं अपना शोध कार्य पूर्ण करने में सफल हुई।

मैं दिवेश कुमार चंद्रा और कामन सिबोह का भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। जिन्होंने शोध कार्य को पूर्ण करने में पग-पग पर मेरी सहायता की है।

अंत में, मैं अपने सारे मित्रों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य पूर्ण करने में मेरा सहयोग किया।

बर्णाली खाउंड

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन:	**i-iii**
प्रथम अध्याय: चरण सिंह पथिक का जीवन एवं रचना-संसार	**1-30**
1.1 चरण सिंह पथिक का जीवन : विविध पड़ाव	
1.2 चरण सिंह पथिक का रचना-संसार	
द्वितीय अध्याय: लोक जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप	**31-56**
तृतीय अध्याय: समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन	**57-90**
3.1 लोक जीवन और साहित्य	
3.2 समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन	
चतुर्थ अध्याय: चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन	**91-127**
4.1 लोक जीवन का सामाजिक पक्ष	
4.2 लोक जीवन का राजनीतिक पक्ष	
4.3 लोक जीवन का आर्थिक पक्ष	
4.4 लोक जीवन का सांस्कृतिक पक्ष	
पंचम अध्याय: चरण सिंह पथिक की कहानियों का शिल्प-विधान	**128-165**
5.1 भाषा	
5.2 शैली	
षष्ठ अध्याय: समकालीन कहानिकारों में चरण सिंह पथिक का स्थान	**166-200**
उपसंहार:	**201-211**
संदर्भ ग्रंथ-सूची:	**212-215**

प्रथम अध्याय

चरण सिंह पथिक का जीवन एवं रचना-संसार

1.1 चरण सिंह पथिक का जीवन: विविध पड़ाव

चरण सिंह पथिक का जन्म 15 जुलाई, 1963 को ग्राम रौंसी, जिला करौली (राजस्थान) में हुआ। पथिक जी ने कक्षा एक से आठवीं तक की शिक्षा अपने ही गाँव रौंसी से प्राप्त की। उन्होंने दसवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री महावीर जी, करौली (राजस्थान) से 1980 में की। बारहवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1982 में की। एस.टी.सी. (टीचर ट्रेनिंग) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1988 में की। 1 जुलाई, 1989 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बाँसलई, प्रतापगढ़ (राजस्थान) में शिक्षक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वे 31 जुलाई, 2023 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाड़ा नादौती, करौली (राजस्थान) से शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हुए।[1]

पथिक के पिताजी का नाम जमनालाल गुर्जर था। गाँव के गणमान्य व्यक्तियों में से वे एक थे। उन्हें घोड़ी पालने का बेहद शौक रहा। पथिक के पिताजी एक किसान थे। वे बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी वे शिक्षा के प्रति जागरूक थे। वे अपनी बच्चों की शिक्षा को लेकर बहुत ही गंभीर थे। हमेशा वे पथिक के स्कूल जाते थे और शिक्षकों से बात-चीत करते रहते थे। उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा का ध्यान बखूबी रखा। 27 जनवरी, 2022 को उनके पिताजी का निधन हो गया। पथिक की माता का नाम रूमाली देवी था, वे

अशिक्षित थीं। वे एक सहृदय महिला थीं। उनका निधन नवम्बर, 2010 में हुआ। पथिक के तीन भाई हैं। बड़ा भाई का नाम है- भरत सिंह। वे जूनियर टेलीकॉम ऑफिसर थे। वर्तमान में वे सेवानिवृत्त हैं। उनकी पत्नी का नाम विमला है। उनके कुल पाँच बच्चे हैं। दूसरे नम्बर में पथिक खुद है। तीसरे भाई का नाम है आलम सिंह। वे सेना में हवलदार थे और वर्तमान में रिटायर हो गए हैं। उनकी पत्नी का नाम लक्ष्मी है। उनके एक बेटा और तीन बेटियाँ हैं। चौथे भाई का नाम है- निहाल सिंह। वे सी.आर.पी.एफ. में कमांडेंट थे। हृदयगति रुकने से 2019 में उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी पत्नी का नाम शीला है। उनके एक बेटी और तीन बेटें हैं।[2]

पथिक की शादी बहुत ही कम उम्र में हो गई थी। शादी के बाद उन्हें बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक इंटरव्यू में उनसे उनकी शादी और उसके साथ आई चुनौतियों के बारे में पूछा गया तब उन्होंने कहा- "बहुत ही दिग्भ्रमित काल था वह। आपकी शादी जब आप सातवीं में पढ़ते थे तब हो गयी और ग्यारहवी में आपकी बहू आयी। अब धीरे-धीरे पढ़ाई में आप बहुत पीछे छूट जाते हैं।"[3] उनकी पत्नी का नाम अनुसूइया है। उनकी पत्नी ने हर समय उनका साथ दिया है। उनके एक बेटी (प्रिया) और दो बेटे (चन्द्रप्रकाश, अनिरुद्ध) हैं।

सम्मान: चरण सिंह पथिक को विभिन्न सम्मानों से विभूषित किया गया: 'बक्खड़' कहानी के लिए 'नवज्योति कथा सम्मान' (1998), 'सृजनात्मक पुरस्कार' (2009), 'रांगेय राघव पुरस्कार' (2012), 'अनुराग साहित्य सम्मान' (2012), 'कलमकार मंच निर्णायक सम्मान' (2018) तथा 'पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी कथा सम्मान' (2018)।

चरण सिंह पथिक खेलों के जरिए आगे बढ़ना चाहते थे। वे क्रीड़ा के क्षेत्र में अपना जीवन बनाना चाहते थे। वे 16 साल तक अपने गाँव की क्रिकेट टीम के कप्तान रहे। वे खेल के

शौक के विषय में कहते हैं- "खेलों में पहले तो मैं वॉलीबॉल का बहुत अच्छा खिलाड़ी रहा हूँ। मैं ऊँची कूद, लंबी कूद में बहुत अच्छा था। दूसरी चीज ये थी कि उस टाइम क्रिकेट का उत्साह बहुत था, आज भी है और आगे भी रहेगा। मेरा स्वप्न था कि मैं भी राजस्थान के लिए रणजी ट्रॉफी खेलू लेकिन ये संभव नहीं पाया।"[4]

चरण सिंह पथिक की जीवन यात्रा बिल्कुल सजह नहीं रही। उन्होंने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। वर्तमान वे हिंदी के प्रसिद्ध समकालीन कहानीकार हैं। चरण सिंह पथिक की दो कहानियों पर दो फिल्में बन चुकी हैं। उनकी 'दो बहनें' नामक कहानी को आधार बनाकर विशाल भारद्वाज ने 'पटाखा' फिल्म बनाई। यह फिल्म 2018 में रिलीज हुई। चरण सिंह पथिक की दूसरी कहानी 'कसाई' पर 'कसाई' नामक फिल्म बनाई गयी। इस फिल्म के फ़िल्मकार राजेन्द्र एस. श्रोत्रिय हैं। यह फिल्म 2019 में दर्शकों के सामने आई।

1.2. चरण सिंह पथिक का रचना-संसार

चरण सिंह पथिक हिंदी के समकालीन कहानीकार हैं। चरण सिंह पथिक ने 1998 से कहानी लिखना प्रारम्भ किया। उनकी पहली कहानी है- 'बक्खड़'। इससे उनकी कहानी लेखन आरम्भ हुआ। ठेठ ग्रामीण जीवन की छवि हम उनकी कहानियों में देख सकते हैं। ग्राम्य जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियाँ उनकी कहानियों में नजर आती हैं। उनके चार कहानी संग्रह प्रकाशित हैं- 1.बात यह नहीं है (2005), 2.पीपल के फूल (2010) 3.गौरू का लैपटाप और गोर्की की भेंस (2014), 4. मैं बीड़ी पीकर झूठ नी बोलता (2018)।

चरण सिंह पथिक का पहला कहानी संग्रह है 'बात यह नहीं है'। इस संग्रह में कुल 10 कहानियाँ हैं: 1. कलेक्टर आया! कलेक्टर आया, 2. दुकान, 3. खिलौना, 4. बक्खड़, 5. लाल किले का जिन, 6. कसाई, 7. बांध टूट गया, 8. दंगल, 9. बात यह नहीं है, 10. बीमार।

कलेक्टर आया! कलेक्टर आया- यह कहानी मोहरसिंह नामक एक साधारण शिक्षक के जीवन दशा पर आधारित है। लेखक ने मोहरसिंह के जीवन दशा के जरिए समाज के विभिन्न समस्याओं को भी उकेरा हैं। कहानी में पथिक ने ग्राम्य जीवन को दिखाया है लेकिन ग्राम्य जीवन का सहज-सरल रूप नहीं बल्कि भ्रष्टाचार से भरे एक गाँव का यथार्थ चित्रण किया है। राजनीति हर जगह उपस्थित है और राजनीति के साथ-साथ भ्रष्टाचार भी हर जगह मौजूद है चाहे वह नगर हो, महानगर हो या फिर एक गाँव ही क्यों न हो। इसी भ्रष्टाचार ने मोहरसिंह का जीवन नष्ट कर दिया।

मोहरसिंह को प्रतिनिधि बनाकर पथिक ने शिक्षकों के जीवन को भी चित्रित किया है। सरकार हर काम किस प्रकार शिक्षकों पर सौंपते है उसका भी वर्णन इस कहानी में मिलता है।

दुकान- प्रस्तुत कहानी में गाँव का ऐसा चित्रण है जो धीरे धीरे नगर-महानगरों में बदलता जा रहा है। गाँव का गिरधारी सेठ अपनी पाँचवीं दुकान खोलता है। गिरधारी सेठ के दुकान के सामने ही विष्णु सेठ की भी दुकान है। इसी बात को लेकर दोनों में युद्ध आरंभ हो जाता है। दोनों भूल जाते हैं कि दोनों एक ही गाँव के आस-पड़ोस से हैं। दोनों में बात इतनी बढ़ जाती है कि सीधा मार-पीट और पोलिस स्टेशन तक पहुँच जाती है। गाँव में पहले जैसी बात नहीं रही। लोग भाई-चारा भूल गए है, अपनों से ही प्रतियोगिता करने लगे हैं और अपनों को ही धीरे-धीरे भूलने लगे हैं। अब किसी की खुशी में खुश नहीं हुआ जाता और दुख में तो लोग दूर ही भागते हैं। वर्तमान गाँवों के इन बदलते रूपों को पथिक ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

खिलौना- आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार अपने घर में काम करने वाले नौकर को किस प्रकार का व्यवहार करते है उसका यथार्थ चित्रण 'खिलौना' कहानी में मिलता है। अपने आपको शिक्षित समझने वाले समाज के कुछ सभ्य लोग किस प्रकार पैसे और शराब के नशे में आकर जानवर बन पड़ते हैं उसे पथिक ने इस कहानी के जरिए दिखाया है। लोगों में जैसे इंसानियत ही नहीं रही, आज कल लोग इस हद तक भी गिर जाते हैं कि इंसान को खिलौना समझने लगे हैं और वैसे ही इंसान का इस्तेमाल करना चाहते हैं।

इस कहानी में पथिक ने अपनी विषयवस्तु को गाँव से शहर की तरफ लाया है। यह कहानी दो अलग परिवारों के बारे में हैं। जहाँ एक परिवार को दो वक्त की रोटी के लिए चिंतित होना पड़ता है वही दूसरा परिवार ऐसा है जिसे कभी पैसों के बारे में सोचना नहीं पड़ा। भरोसी जो मि.दीपक के घर में काम करता है और भरोसी की पत्नी विमली सड़क पर गिट्ठी डालने का काम करती है। उनके दो बच्चे हैं। चारों जैसे तैसे जीवन का गुजारा कर रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी है कि बच्चों को घूँट भर दूध भी नसीब नहीं होता। सिर्फ एक कप चाय से ही काम चलाना पड़ता है। दूसरी तरफ मि.दीपक सिन्हा है जिसका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का लंबा-चौड़ा कारोबार है। उनकी पत्नी मिसेज सिन्हा कॉलेज में लेक्चरर है। उनका एक बच्चा सोनू जिसका देखभाल भरोसी करता है।

एक बार मि.सिन्हा के घर एक पार्टी चल रही थी। उसी समय सोनू का खिलौना घोड़ा टूट गया। जब उसने यह बात मि.सिन्हा को बताई तब उसने भरोसी को ही घोड़ा बनने के लिए कहा। छोटा बच्चा समझ के भरोसी भी घोड़ा बन गया और सोनू को अपने पीठ में बैठाकर चक्कर लगाने लगा। पार्टी में सब झूमने लगे थे। नशे में आकर मि.सिन्हा और उसके दोस्त भरोसी से बुरा बर्ताव करने लगे। यहाँ तक मि.सिन्हा भरोसी के पीठ पर बैठ गया और उसके कान को बेरहमी से मरोड़ दिया। बेचारा बहुत दर्द में था लेकिन कुछ बोल नहीं पाया। सिर्फ यही नहीं मि.सिन्हा ने अपने दोस्त को भी बुलाया- "कम ऑन मिस्टर कौल...कम ऑन। घोड़े

की सवारी का आप भी आनंद लीजिए"।[5] उस वक्त भरोसी बहुत कुछ बोलना और करना चाहता था लेकिन वह एक असहाय खिलौना बनके रह गया। जब ये सब बात वह अपनी पत्नी को जाकर बताया तो पत्नी बहुत भड़क गयी और दुखी भी हो गयी। वह बोल उठी- "हम गरीबों को खिलौना समझ रखा है निपूतों ने! आग लगे ऐसे पैसे में। किसी की इज्जत ही नहीं समझते।"[6]

बक्खड़- इस कहानी के जरिए पथिक ने विभिन्न विषयों को पाठकों के सामने रखा हैं। कहानी में ठेठ ग्रामीण परिवेश का चित्रण है। कहानी का मूल पात्र मूला के इर्द गिर्द ही पूरी कहानी घूमती है। मूला को पूरे गाँव वाले बक्खड़ बुलाते है। 'बक्खड़' उसे बुलाया जाता है जिसके बाप का कोई पहचान नहीं होता। इसमें मूला की कोई गलती नहीं थी लेकिन उसे यह शब्द गाली की तरह सुनना पड़ता था। मूला का बाप उसकी माँ को बहुत अत्याचार करता था, जिस कारण उसकी माँ को अपने पति का घर छोड़ कर अपने पिता के घर जाना पड़ा।

कहानी में नारी शोषण का यथार्थ चित्रण हुआ है। एक नारी किस प्रकार शादी के बाद अपने ससुराल में शोषित होती है उसका वर्णन कहानी के जरिए मिलता है। विशेषकर एक स्त्री ही अन्य स्त्री को शोषित करती है और इस बात पर पथिक ने ध्यान दिया है। मूला की माँ संतो अपनी सास द्वारा ही शोषित हुई थी। वह कई कई दिनों तक भूखी-प्यासी और घायल अंधेरी कोठरी में पड़ी रहती थी। घर का हर काम उसे ही संभालना पड़ता था जैसे- सवेरे जल्दी उठके आटा पीसना, झाड़ू लगाना, गोबर डालना, कंडे थापना, पानी लाना, दोपहर में रोटी बनाना और बीच बीच में सास ससुर की झिड़की। इतना काम करने के बाद भी संतो को एक रोटी तक नसीब नहीं होती थी। अंत में संतो अपना ससुराल छोड़ मायके चली जाती है और वहाँ उसकी दूसरी शादी हो जाती है। पथिक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से स्त्री के सबल रूप का भी चित्रण किया है।

लाल किले का जिन्न: यह कहानी खलील हिण्डौनवी नामक एक शायर के बारे में है जिन्हे लोग पागल समझते थे। एक बार हिण्डौनवी की मुलाकात समीर पोसवाल से हुई। पोसवाल 'दैनिक प्रजानन' पत्रिका में काम करते थे। जब यह बात हिण्डौनवी को पता चला तब हिण्डौनवी को भी पत्रिका में आने का मन किया। उन्होंने पोसवाल से आग्रह किया कि वह उनके बारे में पत्रिका में कुछ लिखे। पोसवाल ने भी झूठी दिलासा दिया कि वह हिण्डौनवी के बारे में अगले अंक में कुछ लिखेंगे। बहुत कहने के बाद पोसवाल ने हिण्डौनवी के व्यक्तित्व-कृतित्व के बारे में लिखा जहाँ उन्हें गालिब, मीर, फिराक आदि के साथ तुलना किया गया। यह देख हिण्डौनवी बहुत दुखी हुआ और गुस्सा भी। उन्होंने पोसवाल को गुस्से में चिट्ठी लिखा और अपनी हताशा जताई। चिट्ठी पढ़कर पोसवाल को लगा उन्होंने अपराध किया। इस घटना के बाद भी हिण्डौनवी बार बार पोसवाल से कहानी के बारे में पूछते रहे लेकिन पोसवाल ने कहानी के नाम पर कुछ भी नहीं लिखा था। एक बार जब पोसवाल हिण्डौनवी से मिले तब हिण्डौनवी बहुत बीमार थे और उनकी हालत काफी खराब थी। उस हाल में भी हिण्डौनवी को कहानी की ही चिंता थी। कई दिनों बाद पोसवाल को खबर मिली कि हिण्डौनवी लापता है। जब उनके घर जाकर पूछा तब पता चला कि वह 15 दिनों से गायब है। पोसवाल ने कहानी लिखी लेकिन हिण्डौनवी जीवित है या मर गया किसी को कुछ पता नहीं चला।

कसाई: यह कहानी उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए है जिनके अंदर एक कसाई बैठा हुआ है। अन्य कहानियों की तरह इस कहानी में भी पथिक ने ग्राम्य जीवन को दिखाया है। कहानी का मुख्य पात्र सुमेर जो बिना किसी दोष के राजनैतिक लोभ के सामने अपने बाप के हाथों ही मारा गया। सुमेर के दादा गाँव के सरपंच थे। सुमेर को उसके गाँव की ही एक लड़की मिसरी से प्यार था। वह समय चुनाव का था जब सुमेर और मिसरी के प्यार के बारे में सबको पता चला। सुमेर के दादा, पिता लाखन, काका दयाल और बाबू चारों चुनाव के काम में व्यस्त थे। जब सुमेर और मिसरी की बात सामने आ गयी तो चुनाव में कुछ बदलाव होने का संदेह पैदा हो गया

था। मिसरी के घर वाले पहले से ही सरपंच के साथ थे। करीब सवा सौ वोट वहाँ से आ जाती थी लेकिन इस बार सवा सौ वोटों का सवाल था। अपने इन सवा सौ वोटों के लिए लाखन ने बेटे सुमेर को गाँव से बाहर भेंज दिया। सुमेर घर से बाहर रह नहीं पाया इसलिए वह वापस घर लौट आया। जब सुमेर वापस आ गया तब सिर्फ राजनीतिक लाभ के बारे में सोचने वाले पिता के हाथों वह बेरहमी से मारा गया। सुमेर के पिता राजनीति में इतना खो गए थे कि अपने बेटे की मृत्यु के बाद भी उन्हें होश नहीं आया। उन्होंने सुमेर की मृत्यु की बात को भी गाँव वालों के सामने 'ऊपर का हवा' बताकर टाल दिया। अंधविश्वास में डूबे गाँववाले उस बात को आसानी से मान भी लेते हैं। लोग मानने लगे की कोई कसाई है जिसने सुमेर को मार डाला।

बांध टूट गया- इस कहानी में वर्गभेद के साथ-साथ किसान जीवन के समस्याओं को यथार्थ रूप से चित्रण किया गया हैं। किस प्रकार उच्च वर्ग के धनजी पटेल निम्न वर्ग के गोपाल डोम, बच्चू दारोगा, किशोरी कोली, गंगाराम खटीक आदि को शोषित करते हैं उसका वर्णन कहानी में हैं। गाँव का हर किसान सालों से धनजी पटेल से प्रताड़ित हैं। उनमें से एक है भरोसी। धनजी पटेल हर किसान की जमीन हड़प लेता है। अगर कोई किसान प्रतिरोध करने की कोशिश करता है, तो उसे अधमरा बना देता है। यहाँ तक की उसकी पत्नी को भी वह नहीं छोड़ता।

दंगल- कहानी की शुरुआत मच्छीपुरा के दंगल से होती है। दंगल का गवैया है पीरू तेली, बाबु उस्ताद की ढोलक, रमजानी सक्का का हारमोनियम, प्रह्लाद कुम्हार और काडुनाथ के मंजीरे। कहानी पढ़ने से ऐसा लगता है कि कहानी सिर्फ गाँव में होने वाला दंगल और उससे उत्पन्न होता मनमुटाव के बारे में है। कहानी की गहराई में जब हम जाते है तब पता चलता है यह सिर्फ दंगल तक सीमित नहीं है बल्कि साम्प्रदायिकता और जातिवाद जैसे विषयों को भी

पथिक ने उकेरा हैं। जहाँ पहले गाँव में अलग-अलग सम्प्रदाय, जाति और वर्ग के लोग एक साथ भाईचारा के साथ दंगल करते थे वहीं अब साम्प्रदायिकता और जातिवाद ने सबको अलग कर दिया। अब सब अपना-अपना दल बनाने लगे हैं। साम्प्रदायिकता किस प्रकार धीरे-धीरे, बिना शोर किए गाँव तक पहुँच गयी है इसकी उपलब्धि किसी को नहीं है। साम्प्रदायिकता वर्तमान में हर जगह पनप रही है और यही बातें 'दंगल' कहानी में भी दिखाई पड़ता है।

बात यह नहीं है- चरण सिंह पथिक की अन्य कहानियों की तरह ही प्रस्तुत कहानी भी ग्राम्य अंचल पर आधारित है। इस कहानी में भी पथिक ने जातिभेद का चित्रण किया है। साथ ही गाँव की राजनीति का भी चित्रण हुआ है।

उच्च जाति के लोग सिर्फ पुरुष के शोषण करने तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि वे निम्न जाति के बहू बेटियों के ऊपर भी अपनी नजर गढ़ाये हुए रखता है। कहानी का पात्र पून्या उच्च जाति का छुट्टन सिंह द्वारा किए गए शोषण के बारे में बताता है- "जब चुनावों में वोट लेने होते हैं तो ये तुम्हारी ऊंची जाति वाले हमारे बच्चों तक को हाथ जोड़ते फिरते हैं। हमारे घरों में आकार दारू-मीट खाते हैं। तब इनकी जाति कहाँ चली जाती है? तब इनका धर्म भ्रष्ट नहीं होता? लेकिन कोई बात नहीं। आजकल की राजनीति ही यही है। हम ऐसा सोच लेते हैं। मगर एक बाप अपने सामने अपनी जवान बेटी की इज्जत अपने ही घर लूटते बर्दाश्त कर लेगा....? जैसी हमारी बहू-बेटियाँ,ऐसी ही तुम्हारी बहू बेटियाँ!"[7]

बीमार- बीमार कहानी में साधारण भारतीय नारी का जीवन दिखाया है। पितृसतात्मक समाज में एक नारी को कैसे अपने रोजमरा के जीवन में चुनोतियों का सामना करना पड़ता है उसे पथिक ने अपनी कहानी में दिखाया है। इस समाज में नारी ही नारी की प्रधान शत्रु है।

कहानी का पात्र प्रमोद, उसका भाई विनोद और उसकी माँ मिलकर उसकी पत्नी पर बहुत अत्याचार करते थे।

कहानी में पथिक ने बदलाव भी दिखाया है। प्रमोद को पछतावा होता है कि उसने अपनी पत्नी पर कितना अत्याचार किया है और वह उसे सुधारने की कोशिश भी करता है।

चरण सिंह पथिक का दूसरा कहानी संग्रह है- **'पीपल का फूल'**। यह कहानी संग्रह 2010, अरु पब्लिकेशंन्स प्रा.लि. से प्रकाशित है। इस संग्रह में कुल 11 कहानियाँ हैं, जो निम्नलिखित हैं: 1.फिरने वालियाँ, 2.कलुआ, 3.मुंछे, 4.चौकी, 5.जल फोड़वा, 6.बेरी का पेड़, 7.वह अब भी नंगा है, 8.दो बहनें, 9.ठंडी गदूली, 10.प्रधान की कुतिया, 11.पीपल के फूल।

फिरने वालियाँ- प्रस्तुत कहानी में पथिक ने भारतीय ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों को दिखाया हैं। यह कहानी विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं जैसे- रिश्तों का बदलता स्वरूप, कृत्रिमता, असहनशीलता और अपनों के बीच आई दूरियाँ।

कहानी में पथिक ने रिश्तों में आई कृत्रिमता को बहुत सुंदर ढंग से दिखाया है। शोक सभा में जाने के लिए औरतें सजने सँवारने पर ध्यान दे रही थीं। औरतों का ध्यान सिर्फ कपड़ों, चप्पलों, नाक की सींक, कानों की झुमकी और गले की माला आदि पर ही था। सिर्फ यही नहीं। बुआ के घर पहुँचने के बाद कौन रोते हुए जाएगा और कौन गंगा जी का भजन गाते हुए इस बात पर भी औरतों के बीच बहस होने लगी। अंत में कहनीकार की दोनों चाची और गुलबी ताई गंगाजी के भजन गाती आगे आगे चल रही थीं और पीछे कहनीकार की पत्नी और अन्य पाँच औरतें ज़ोर-ज़ोर से रोटी हुई आ रही थीं। कहनीकार यह देखकर एकदम हैरान रह गया।

कलुआ- यह एक निम्न जाति की महिला कलावती की कहानी है। कहानी में पथिक ने कलावती के जीवन की पीड़ा को दिखाया है। कलावती किस प्रकार अपने पति द्वारा घर छोड़े जाने के बाद अपने देवर, जेठ और सास के द्वारा वह शोषित होती है उसका चित्रण कहानी में है। कलावती के जेठ और देवर की नजर सिर्फ उसके शरीर पर रहती थी। इस बात को उसकी सास जानती थी लेकिन उसने कभी अपने पुत्रों को कुछ नहीं कहा बल्कि कलावती को ही अपने देवर और जेठ के बीच में किसी एक को चुनने के लिए कहती है। कलावती अकेले ही अपना जीवन यापन करती है। कलावती एक भैंस पालती है और भैंस का नाम वह कलकत्ती रख देती है। एक समय के बाद कलकत्ती एक पाढ़ा जन्म देती है। कलावती ने उसका नाम कलुआ रख दिया। पाढ़ा देखकर कलावती ने यह तय कर लिया था कि वह अपने कलुआ को गाँव के अन्य भैंसों के गर्भधारण के लिए दे देगी, वह भी बिना मुनाफा लिए। क्योंकि उसके गाँव में सिर्फ पटेलों के पास ही पाढ़ा था और वे बहुत पैसे लेते थे। कलावती ने यह बात पंचायत को सुनाया। गाँव के सरपंच और अन्य लोग इस बात से खुश हो गए थे लेकिन गाँव में सरपंच तो नाम के लिए ही होता है। सब बातों पर विचार-विमर्श और निर्णय पटेलों के द्वारा ही होता है। जब यह बात पटेलों पर आई तो भरती पटेलों ने सीधा मना कर दिया। सिर्फ निम्न जाति के होने के कारण ही उसके पाढ़ा को लेने के लिए मना कर दिया।

मूंछे- यह कहानी एक फौजी की है जो जाटव जाति का है। फौजी का नाम है रामराज। रामराज के जरिए कहानीकार ने राजस्थान में हुए गूजरों और मीणा के आंदोलन की ओर इशारा किया है। रामराज को फौज में भर्ती हुए तीन साल हो गए थे। साल भर से उसने अपनी पत्नी का मुंह नहीं देखा था इसलिए 15 दिन की कैज्वल छुट्टी लेकर वह घर आया था। घर आते ही वह अपनी हीरोहोंडा मोटरसाइकल लेकर पत्नी को लाने ससुराल निकाल गया। रामराज ससुराल पहुँच ही नहीं पाया। वह रास्ते पर ही गुजरों और मीणा के आरक्षण माँग के हिंसक आंदोलन में फँस गया था। उसकी छोटी छोटी मूँछें और फौजी कटिंग बाल देखकर किसी ने

उसका विश्वास नहीं किया। उन लोगों ने उसे गुजर समझकर बेरहमी से मार-पीट की। रामराज जैसे-तैसे अपनी जान बचाते हुए आगे बढ़ा लेकिन वह बच नहीं पाया। कुछ दूर जाने के बाद मीणाओं के झुंड ने उसे घेर लिया। फिर से उससे जात पूछा गया। इस बार उसने झूठ बोला और खुद को मीणा बताया लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसको गोत्र पूछा जाएगा। वह गोत्र नहीं बता पाया और फिर से उस पर लात-घूंसे बरसने लगे। उसकी मूंछे काट दी गयी। आरक्षण माँग कि इस आक्रोश में रामराज ऐसे ही पिसा गया और अधमरी अवस्था में एक पेड़ के नीचे पड़ा रहा।

चौकी- पथिक की यह कहानी ग्राम्य जीवन की उस चित्र को चित्रित करती है जहाँ उच्च-नीच, जात-पात और भ्रष्टाचार भरा हुआ था। कहानी का मुख्य पात्र बाबु जो भंगी जाति का है। वह एक चौकी में झाड़ू लगाने का काम करता था। चौकी पर रहते रहते उसके स्वभाव पर बदलाव आने लगा। जो लोग पहले उसके हाथों से पानी तक नहीं पीते थे वह अब उसके हाथों का बना खाना खाते थे। बाबु का साहस और आत्मविश्वास बढ़ने लगा था। बाबु के गाँव के भंगियों को किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं होती थी। कोई भी सरकारी योजना भंगियों तक नहीं पहुँच पाता। एकबार बाबू के गाँव में कलेक्टार, एस.पी., एस.डी.एम., तहसीलदार, बी.डी.ओ. और रसद अधिकारी आए। लोगों से जब समस्या पूछा गया तब बाबू खड़ा हुआ और बोलने लगा- "हुजूर, सरकार और प्रशासन की तो क्या कमी बताऊँ! कमी तो ग्राम पंचायत के कर्ता-धर्ताओं की है। यहाँ गरीबों की कोई सुनवाई नहीं करता। हम चार घर हरिजनों के आज तक काम से बंचित हैं। हमारे पास बी.पी.एल. होने के कारण मिलने वाला गेहूँ पिछले दो साल से नहीं मिला है। आप इसकी जाँच कर सकते हैं। हमें न कुओं से पानी भरने दिया जाता है और न ही टैंकर से....हमारे बच्चे खाय पानी पी-पीकर बीमार हो गए हैं। हमारी किसी भाई से कोई जाती-दुश्मनी नहीं है। हम तो कम चाहते हैं। अपना हक चाहते हैं। पीने के लिए मीठा पानी चाहते हैं बस!"[8] बाबू की बातें सुनने के बाद कलेक्टर ने रसद अधिकारी और एस.डी.एम. को

ठीक से जाँच कर रिपोर्ट देने का आदेश दिया। कलेक्टर ने ग्राम सचिव और पटवारी को निलम्बित कर दिया। तहसीलदार का तबादला कर दिया गया और साथ ही राशन डीलर का लाइसेन्स छह महीने के लिए निलम्बित किया गया। हर जगह बाबू की तारीफ होने लगी लेकिन तहसीलदार, सरपंच, सचिव और रासन डीलर बाबू की जान के दुश्मन बन चुके थे।

एक दिन बाबू को जलील करने के लिए लेकिन तहसीलदार, सरपंच, सचिव और रासन डीलर मिलकर उसे नंगा कर दिया साथ ही उसको जोर-जबरदस्ती पिलाया गया। इस घटना के बाद मुहल्ले के सभी लोग कलेक्टर के सामने आमरण-अनशन के लिए बैठ चुके थे। दो दिन तक उनको किसी ने पूछा तक नहीं और जब वह एस.पी. और कलेक्टर से मिलना चाह रहे थे उन्हें मिलने नहीं दिया गया। प्रशासन समझौता करना चाहता था लेकिन बाबू और अन्य लोग अपने बात पर अटल रहे। अंत में सरपंच और राशन डीलर की गिरफ्तारी का आदेश दीया गाया और साथ ही मुंशी और थानेदार को निलम्बित किया गया।

जल फोड़वा- इस कहानी से यह पता चलता है कि जल फोड़ना अर्थात किसी कुंए के अंदर जाकर कोई खोई हुई चीज लाना भी एक काम है। लोग सौ दो सौ रूपए के लिए अपनी जान की बाजी भी लगा देते है। कहानी का पात्र रसीद जो एक जल फोड़वा था वह आत्महत्या कर लेता है। कहानीकार के पिताजी और रसीद दोस्त थे। रसीद के मृत्यु के बाद कहानीकार अपने पिताजी से रसीद के बारे में सुन रहा था। जिसे वह चाचा बुलाता था। कहानी में पथिक ने पानी के महत्व के बारे में भी इशारा किया है और साथ ही साथ किस प्रकार धीरे-धीरे गाँवों की गति शहर की तरफ हो रही है उसका भी वर्णन किया है। कहानीकार के पिताजी अपने दोस्त रसीद और उसके बेटे के बारे में कहानीकार को बताते है। लेखक किसी न किसी प्रकार से अपने पिताजी के मुँह से रसीद के मृत्यु का कारण जानना चाहता था लेकिन वह हकीकत बता नहीं रहे थे बल्कि एकटक आसमान में उड़ते बादलों को घूरे जा रहे थे। जैसे-तैसे लेखक के पिताजी ने अपनी चुप्पी तोड़ी और बस चंद शब्दों में उन्होंने हकीकत बया की- “कमबख्त वो

कुआँ और वो पाँच बीघा जमीन रसीद के जाली दस्तखत करके महंगे दामों में शहर के एक सेठ को बेचकर रातों-रात फरार हो गए दोनों। रसीद को पता चला तो भागा-भागा मेरे पास आया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। रसीद को जमीन की ज्यादा फिक्र नहीं थी मगर वो कुआँ उसे अपनी जान से ज्यादा अजीज था। उसे न जाने क्यों यकीन था कि सूखा कुआँ एक दिन जरूर मीठे पानी से लबालब हो जाएगा। गंभीर नदी फिर से बहने लगेगी जमीन के गोशो-गोशो में एक दिन पानी ही पानी होगा। पगला गया था शायद मेरा भाई...?"[9] यह सुनने के बाद लेखक के सामने जैसे पूरी की पूरी सच्चाई खुल गया। उसके मुँह से सिर्फ एक ही बात निकली- "मैं...मैं पानी बचाकर रखूँगा...रसीद चाचा।"[10]

बेरी का पेड़- चरण सिंह पथिक ने इस कहानी में लड़की के जीवन को बेरी के पेड़ के साथ तुलना किया है। जिस प्रकार एक बेरी का पेड़ चारों तरफ कंटीली झाड़िओं से घिरा हुआ होता है और उसके बावजूद वह फल देता है उसी प्रकार एक लड़की का जीवन भी विभिन्न संघर्षों से घिरा हुआ होता हैं। बेरी का पेड़ बिना किसी मेहनत के ही बड़ा हो जाता है और वह फल भी देता है। खुद कंटीली झड़ियों से घिरा होने के बाद भी लोगों को मीठा फल देता है लेकिन लोग उसमें पत्थर फेंकते हैं। उसी प्रकार कहानी में लेखक ने अपनी बेटी के जीवन को दर्शाया है। वह अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ना चाहती है, वह पढ़ना चाहती है। वह अपने कॉलेज में साझा पेंटिंग करती है और उसी में अपना भविष्य भी बनाना चाहती है लेकिन उसको बिना बताए उसकी शादी तय कर दी गई। 'बेरी का पेड़' कहानी की मूल में इन्हीं बातों का उल्लेख किया गया हैं।

वह अब भी नंगा है- इस कहानी के जरिए पथिक ने एक गरीब बाप, उसकी मजबूरी और उसके बच्चे के जीवन का चित्रण किया है। कहानी के पात्र लल्लू और उसके बच्चे के जरिए पथिक ने उन बच्चों की ओर इशारा किया हैं जिसे हम हमेशा कहीं न कहीं देखते रहते हैं। चाहे वह

किसी होटल बॉय के रूप में, रास्तों पर गाडियाँ साफ करने वालों के रूप में या फिर हमारे घरों में काम करनेवालों के रूप में। कहानी के बच्चे के जरिए कहानीकार ने उन बच्चों के बारे में बताया है जो बच्चे कभी स्कूल नहीं जा पाते और किसी स्कूल के ब्रेक टाइम में साफ-सुथरी ड्रेसों में सजे स्कूली बच्चों को देखता रहता है। दूसरे बच्चे जब गोलगप्पा खाते हैं तो उन सबको निहारने के अलावा उसके पास और कोई उपाय नहीं होता है। चाहे गरमी हो या ठंडी वह अधनग्न अवस्था में ही रहता है क्योंकि उसके पास और कोई कपड़ा नहीं होता है। पथिक ने इस कहानी के जरिए उन बच्चों के संघर्षों को दिखाया है जिसेक लिए एक जोड़ा कपड़ा भी बहुत महत्वपूर्ण होता है।

दो बहनें- यह कहानी पथिक की अपनी घर से बनी कहानी है। पथिक ने अपने बड़े भाई की बीवी और छोटे भाई की बीवी की असल ज़िंदगी से प्रेरित होकर यह कहानी लिखी है। यह कहानी दो ऐसे बहनों की कहानी है जो जानी दुश्मन हैं। दोनों सगी बहनें थी लेकिन दोनों के बीच ऐसी अनबन थी जैसे हिंदुस्तान पाकिस्तान हो। बात-बात पर दोनों लड़ाई करती हैं और एक दूसरे को रत्ती भर हजम नहीं कर पाते। बड़ी होने पर दोनों की शादी एक ही घर में सगे भाइयों के साथ हो जाती है और वहाँ भी यह युद्ध जारी रहता है। बड़की की शादी बड़े भाई से और छुटकी की छोटे भाई से हो गई थी। बड़ा भाई दूरसंचार विभाग में अफसार था और छोटा भाई मिलिट्री के पैराशूट ग्रुप में हवलदार था। घर में ससुर नहीं थे, बुरजुर्ग के नाम पर सिर्फ सास थी। समय के साथ-साथ दोनों ने छः बच्चे पैदा किए। बड़की के पति ने उसे एक मोबाइल फोन खरीद कर दिया और वह हमेशा उस फोन को अपने पास ही रखती। जब भी उसके पति का फोन आता है वह बड़े ठसक से मोबाइल निकाल कर छुटकी की तरफ अपना मुँह करके बात करती है- "हल्लू sssआप कौण जी....अच्छा अच्छा गोलू के पापा हैं...जब इसे मैं सोंचू...आधी रात को...नींद खराब....।"[11] बात खत्म करने बाद वह छुटकी को सुनाकर अपनी सास से

कहती- “अफ़सरी का जे sss ई sss तो फायदा है। फौरंट समाचार ले लो।”[12] बड़की की बात सुनकर छुटकी गुस्से में बड्बड़ाती है- “हूँss ह बड़ी आई ओफसर की लुगाई। ऐसे मुबाल और ऐसे धपी तो टिंडे, टमाटरों की तरह खेतों में पड़े रहते हैं।”[13] फिर युद्ध शुरू। फिर बड़की बोलती है- “नाशगई तेरा खसम होगा टिंडा! तू होगी टमाटर की लुगाई। तेरे दीदे चौड़े-फट्ट में फूट गए का sss! गोरमेंट में मेरा धणी अफसर और या घर में मेरी जूती अफसर। समझी....”[14] ऐसे ही लड़-झगड़ कर दोनों बहनें ज़िंदगी काट रही थी। हवलदार एक बार छुट्टी में घर आया। छुट्टी खत्म होने के बाद जब वह लौटने की तैयारी कर रहा था तब छुटकी ने भी साथ चलने की जिद लगाई। अपनी पत्नी की जिद के सामने हारकर हवलदार उसे आगरा अपने क्वार्टर पर ले गया। छुटकी को गए दस दिन भी नहीं हुए थे कि बड़की बीमार हो गई। खाना-पीना बंद। गाँव के डॉक्टर, नील-हकीम सब से दवाई ली लेकिन वह ठीक नहीं हुई। एक रात को बड़की ने छुटकी को फोन लगाई। छुटकी भी वहाँ बीमार थी। दोनों ने फोन पर ही गाली गलौज शुरू कर दिया- “मैं छुटकी। तू कौण?”

“मैं बड़की बोलती।”

“नकटी! मौ सू बोलवै की जुर्रत का है।”

“लाल किला, ताजमहल देखा?”

“तेरा हड्डा। दारी।”

“मैं तो पहले ही बीमार हूँ।”

“घुट-घुटकर मरेगी।”

"चीलगाड़ी में बैठी?"

"बोल मत दे भूतनी। मैं भी बीमार हूँ। आगरे का पानी नी लगा।"

"मुझे अकेली छोड़कर खसम संग मौज करने गई थी। भुगतेगी-भुगत...।"

"तू तो बिल्ली है दारी, पिछले जन्म की...।"

"दूर से शेरनी बनती है छछूँदर! असल बाप की बेटी है तो गाँव में आकर लड़...।"

"बणती है फौजी की लुगाई।"

"दो दिन बाद आ रही हूँ दारी.... । तेरी चुटिया पकड़ फिरा-फिरा के नीं फेंका तो असल बाप की बेटी मत कहियो।"[15] दोनों ने फोन रख दी। हवलदार बस अपनी पत्नी को सुने जा रहा था। उसकी पत्नी बिल्कुल ठीक हो गई थी। उस रात उसने पेट भर रोटियाँ, थाली भरकर दूध और रबड़ी गटकी। दूसरे दिन दवाइयों की पोटली बाहर फेंक आई और बोली- "कल रात जैसी नींद मुझे पिछले बारह-पंद्रह दिनों में कभी नहीं आई।"[16]

ठंडी गड्डूली- यह कहानी घासी और अंगूरी की प्रेम कहानी है। अंगूरी एक विधवा है जो घासी के साथ अपना जीवन बसाना चाहती है। घासी गाँव का एक अनपढ़ और सरल आदमी है। घासी गाँव के पटेल के पास काम करता है लेकिन घासी दिल्ली जाना चाहता था। पटेल को ये बात बिलकुल पसंद नहीं है। अगर घासी दिल्ली चला जाएगा तो उसके पास काम करने के लिए कोई नहीं होगा। पटेल को जब भी मौका मिलता है वह घासी को दिल्ली के बारे में हमेशा बुरा ही बताता है। एक बार दिल्ली में बम फटने की खबर पाकर पटेल घासी से कहता है- "दिल्ली में बम फटा है। तू कह रहा था जाने को... । कहीं मर-मरा गया तो...? सड़क पार नहीं होगी तुझसे। बसें कुचलकर रख देंगी। फिर वहाँ दंगे भी होते रहते हैं। पूछ ले जगन्या

से।"[17] अंगूरी विधवा के साथ-साथ एक बच्ची की माँ भी है फिर भी घासी को अंगूरी से प्रेम है। घासी एक बार अपने गाँव के भरथरी बाबा के मेले में गया था साथ में अंगूरी भी थी। उस रात अंगूरी खुद घासी से बोली- "अंगारे चट-चट चटक रहे हैं। मेरे भीतर भी धुणी सुलग रही है। तू इस धणी बनेगा?"[18] अंगूरी की बात सुनकर घासी चौक गया और वह बोला- "मेरा भी पिंड छूटेगा। तू सोच ले। जात-बिरादर, नाते-रिश्तेदारी में तेरी फजीहत ज्यादा होगी। केस-मुक़द्दमा, पंचायत में साथ देना होगा। नाथ का जाया हूँ, बात पक्की समझना।"[19] तब अंगूरी बोली- "अभी कौन सा सुख भोग रही हूँ मैं। सबकी निगाह इस शरीर पर लगी है। तेरे कौल पर भरोसा है।"[20] कुछ दिनों के बाद घासी और अंगूरी भाग गए लेकिन कब, कहाँ, कैसे यह खबर किसी को नहीं थी। दिल्ली में रहने वाले घासी दोस्त पातीराम को पूछने पर वह कहता है- "दिल्ली में हर रोज हजारों घासी अंगूरी जैसे लोग स्टेशन पर आकर उतरते हैं। किसको किसकी पहचान...? सब एक जैसे लगते हैं।"[21] कहानीकार कहानी के अंत में एक पंक्ति लिखते है- "गरीब की गदुली तो हमेशा से ही ठंडी रहती आई है।"[22]

प्रधान की कुतिया- प्रस्तुत कहानी के जरिए पथिक ने राजनीति और भ्रष्टाचार को दिखाया है। राजनीति के लिए लोग किसी भी हद तक जा सकते हैं और कुछ भी कर सकते हैं। कहानी में कुतिया के जरिए नेताओं के द्वारा किया जाने वाले भ्रष्टाचार को दिखाया गया है। कहानी में प्रधान की कुतिया सफेदी के बारे में भी बात की गई है है जिसपर प्रधान ने बहुत अत्याचार किया था। प्रधान की कुतिया बहुत ही सुंदर थी और हर कोई प्यार करता था। प्रधान की कुतिया को राजधानी के एम.एल.ए. का कुत्ता 'रॉकी' के लिए पसंद किया गया। प्रधान कुछ सेंक्शन के लिए अपनी कुतिया 'सफेदी' का सौदा किया और 'सफेदी' को एम.एल.ए. के घर छोड़कर चला आया। 'सफेदी' भी एम.एल.ए. के घर में रहने वाली नहीं थी वह रॉकी को

घायल करके अपने घर चली आई लेकिन यह बात प्रधान को बिल्कुल पसंद नहीं आयी। एम.एल.ए. ने भी वह सेंक्शन कैन्सल कर दिया। इससे प्रधान को गुस्सा आया और उसने सफेदी को बहुत मारा-पीटा और कमरे में बंद कर दिया। सफेदी मुक्त जीवन जीना चाहती थी और वह बाहर जाने का मौका ढूंढ रही थी। एक दिन सफेदी भाग गई और गाँव में जाकर झबरू नामक कुत्ते से मिली। सफेदी को झबरू से प्यार हो गया लेकिन प्रधान को इस बात की जब खबर हुई तो उसने झबरू को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। झबरू का मालिक एक धोबी था। प्रधान ने उसे भी नहीं छोड़ा। कुछ दिनों बाद सफेदी गर्भवती हुई। जब प्रधान को इस बात की खबर हुई तो प्रधान ने सफेदी का गर्भपात करके उसे बाँझ बना दिया। यहाँ तक भी प्रधान को शांति नहीं मिली। एक दिन नशे में उसने अपने पट्ठों से बोला- "सफेदी को मैंने बेटी जैसा पाला है। मैं इसे अपने हाथ से मारना नहीं चाहता। तुम एक काम करो। इसे आज शाम को गाँव से दूर ले जाओ और इसकी कमर पर मार्शल जीप के टायर फेर दो ताकि ये किसी कुत्ते के काम की न रहे और जीवन भर अपाहिज होकर दर-दर डंडे खाती फिरे। यही आखिरी सजा है इसकी।"[23] प्रधान ने जैसा कहा वैसा ही हुआ। सफेदी की कमर टूट गई, वह दर-दर भटकती रही और अंत में उसकी मृत्यु हो गई।

पीपल के फूल- इस कहानी में पथिक ने भूमंडलीकरण का प्रभाव किस प्रकार गाँवों तक पहुँचा है, उसे चित्रित किया है। यह कहानी एक बूढ़े पीपल के पेड़ की कहानी है। जिस गाँव का नाम उस पेड़ के वजह से ही पिपलपुरा पड़ा था। वह गाँव ही उस पेड़ को काँटने के लिए तैयार हो गए थे। पीपल का पेड़ अपना दुख एक तोते को सुनाता है- "मेरा एक सपना था कि मैं अपने उस वट-वृक्ष पुरखे का इतिहास दोहराऊँ जिसकी छाँव तले सिद्धार्थ तथागत हो गए थे। वरना इसके सिवा है भी क्या? मौत का दिन तो हम...।"[24] फिर वह कहने लगा- "हो सके तो मेरे इन नन्हें दोस्तों का ख्याल रखना और एक साथ किसी सुरक्षित पेड़ पर इनके घोंसले बनवा देना।"[25] उस वृद्ध पेड़ के साथ-साथ कौए, तोते, मोर तथा कई पक्षी दुखी थे क्योंकि उन सबका

घर उजर रहा था। भंडराया परिवार के लोगों ने वह पेड़ काँटने का सलाह दिया। उस परिवार के बूढ़ी औरत ने अपने पोतों को समझाया- "पीपल का भौतिक अस्तित्व तुम नष्ट कर सकते हो लेकिन बिना पीपल के तुम्हारी पहचान न थी और भविष्य में नहीं होगी। तुम तुम और तुम्हारे इस गाँव के बाशिंदे दुनिया के किसी भी कोने में जाकर बस जाँए, 'पिपलपुरा वाले' ही कहलाएंगे।"[26] लेकिन बूढ़ी औरत की बात किसी ने नहीं सुनी उल्टा उन्हें पागल करार दिया गया। कहानी के अंत में पथिक ने मनुष्य पर कटाक्ष करते हुए लिखा है- 'बहरहाल यह किंवदंती गाँव-गाँव खूब सुनी जाती है कि आज तक किसी ने पीपल के फूल नहीं देखे। लेकिन देखने वालों ने महानगर के कई मल्टी स्टोरों पर फलाँ ब्रदर्स मल्टीस्टोर (पिपलपुरा वाले) लिखा हुआ जरूर देखा है।'

चरण सिंह पथिक का तीसरा कहानी संग्रह है **'गौरू का लेपटाप और गोर्की कि भैंस'**। इस संग्रह में 10 कहानियाँ हैं: 1.हत्यारे समय का कोलाज, 2.रुदन, 3.एक निकम्मे की तीन टक्करें, 4.सपने, 5.परछाइयों में गुलाब, 6.यात्रा, 7.कोई जादू है क्या, 8.पागल कुत्ते, 9.रोजड़े, 10.गौरू का लैपटाप और गोर्की की भेंस।

हत्यारे समय का कोलाज- यह कहानी विभिन्न विषयों को साथ लेकर चलती हैं। सांप्रदायिकता, समाज की स्थिति, परिवारों में होने वाली समस्या एवं स्त्री के ऊपर होने वाले अत्याचारों को लेकर यह कहानी चलती है। कहानीकार ने वर्तमान समय को हत्यारा कहा है और इस समय में घटित घटनाओं को ही उन्होंने एक कोलाज के रूप में प्रस्तुत किया है। पथिक ने कहानी के मुसलमान पात्र के द्वारा उन तमाम मुसलमानों की ओर इशारा किया है जो बिल्कुल निर्दोषी हैं लेकिन उनके साथ देशद्रोही जैसा व्यवहार किया जाता हैं। लोग किसी भी विद्रोह के लिए, किसी भी घटना के लिए बिना सोचे ही मुसलमान को दोषी ठहराते है। इसके

साथ-साथ पथिक ने उन पुरुषों को भी हत्यारा कहा है जो अपनी पत्नी के सपनों का हत्या करता है। कहानी के मुख्य पात्र की पत्नी कहती है- "एक पुरुष के सपनों के लिए एक स्त्री अपने तमाम सपनों को ज़िंदगी भर स्थगित कर सकती है, लेकिन क्या पुरुष ऐसा कर सकता है?"[27]

रुदन- रुदन कहानी उन हर पुरुष की कहानी है जो अपने परिवार के लिए अपना सबकुछ छोड़ आता है। वह पुरुष जो हमेशा सबके सामने खुश ही रहता है लेकिन उसका रुदन किसी को सुनाई नहीं देता। वह पुरुष कभी रो नहीं सकता, असल में लोग उसे कभी रोने नहीं देते। हमेशा उसे सिर्फ हँसने के लिए कहा जाता है। उसे कहा जाता है- "इसे हर वक्त रोना सूझता है। अरे यार, हँस। 'हँस' कि छठा वेतन आयोग लागू हो गया है।"[28] लेकिन तब वह सोचता है- "टमाटर बीस-तीस रुपये किलो। दाल पचास को पार करने लगी है। मीठा तेल सत्तर-अस्सी पर ठोकर मारने को तैयार है। पेट्रोल साठ को सलाम करने वाला है और गेहूँ.... । फिर छठे वेतन आयोग से मेरी क्या रिश्तेदारी?"[29] वह फिर कहता है- "मोबाइल, मोटर साइकल, मदिरा और मंदिरों ने लोगों की जेबों से जबरन वसूली कर रखी है। पाँच सौ का नोट बाजार में पाँच मिनट तसल्ली से जेब में नहीं टिक सकता और तुम कहते हो, हँसूँ...?"[30] लोगों को दिखाकर तो वह हँस देता है लेकिन अंदर का रुदन जारी रहता है। वह कभी भी खुलकर रो नहीं पाता है, किसी से अपना दर्द बया नहीं कर पाता है क्योंकि वह एक पुरुष है।

एक निकम्मे की तीन टक्करे- यह कहानी एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसे हर कोई निकम्मा समझता हैं। यहाँ तक उसकी माँ भी कहती है- "मुझे उसके निकम्मेपन का आभास जब वह पेट में था, तभी हो चुका था।"[31] यह आदमी एक कलाकार है और इसके नाते ही उसे विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा। उसके सामान्य माता-पिता जो कला को अच्छा नहीं मानते क्योंकि इससे गुजारा नहीं हो पाता। इसलिए वह घर से भी बेघर हो जाता है। उसके इन

संघर्षों के साथ-साथ एक अधूरी प्रेम कहानी को भी पथिक ने दिखाया है। जीवन में सफल नहीं हो पाने के कारण उसे अपने प्रेम को भी भूलना पड़ा। समाज के हिसाब से कुछ नहीं कर पाने के कारण उससे उसका सबकुछ छीन जाता है- घर-परिवार, उसका प्रेम, यहाँ तक कि उसका सम्मान भी। कहानीकार ने कुछ ऐसे कलाकारों का भी जिक्र किया हैं जो अपने आपको बहुत बड़े, मंजे हुए और महान दिखाने कि कोशिश में किसी भी हद तक गिर जाते हैं।

सपने- यह वंशीलाल नामक पात्र और उसके परिवार की कहानी है। हर व्यक्ति सपना देखता है लेकिन एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के आदमी को सपने देखने के लिए भी सोचना पड़ता है। जब वह एक परिवार का मुखिया होता है तब तो उसे सपने देखने का हक भी नहीं होता। उसका कर्त्यव बन जाता है कि वह सिर्फ अपने परिवार वालों का सपना पूरा करे। कहानी में पथिक ने एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के उन संघर्षों को दिखाया हैं जो उन्हें अपने दैनंदिन जीवन में सामना करना पड़ता है। कहानी का मुख्य पात्र है बंशीलाल। बंशीलाल का बेटा सिर्फ 500 रुपये के लिए एक प्राइवेट जॉब करता है और वेतन से ज्यादा उसे काम करना पड़ता है। एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लिए 500 रुपये का मूल्य क्या होता है उसे पथिक ने बहुत ही सुंदर ढंग से दिखाया है। 'सपने' शीर्षक से पथिक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आशा-आकांक्षा जिस प्रकार से छोटे होते हैं उसी प्रकार उनके सपने भी छोटे होते हैं।

परछाइयों में गुलाब- प्रस्तुत कहानी बसंत और रुखसाना की प्रेम कहानी है जो अधूरी रह गई। सदियों से चलती आ रही साम्प्रदायिकता के कारण यह प्रेम कहानी भी अधूरी रह गई। बसंत हिन्दू है और रुखसाना मुसलमान। जाहिर सी बात है कि दोनों का मिलन होना आसान नहीं था। रुखसाना गूंगी थी लेकिन वह बहुत सुंदर थी। वह बसंत को बहुत चाहती थी और बसंत भी रुखसाना को बहुत चाहता था। गूंगी होने के बावजूद बसंत उसकी हर बात को समझता

था। दोनों चाहे कितना भी प्यार करे लेकिन दोनों अलग संप्रदाय से थे। रुखसाना की शादी दूसरे लड़के से कर दी गई लेकिन वह उसे बहुत मारता-पीटता था, कई-कई दिनों तक उसे खाना नहीं दिया जाता था। रुखसाना इतना कष्ट सह नहीं पाई और अंत में उसने मौत को गले लगा लिया। पथिक ने प्रेम के सहारे साम्प्रदायिकता का चित्रण बहुत ही सुंदर तरीके से किया है।

यात्रा- इस कहानी में पथिक ने ग्राम्य अंचल में होने वाले धार्मिक पदयात्राओं का वर्णन किया है। एक ही गाँव में दो-दो पदयात्रा का आयोजन किया जाता है। एक तरफ बजरंगदास की छत्रछाया में गोवर्धन महाराज की पदयात्रा और दूसरी तरफ भगत शिरोमणि के सान्निध्य में कैलादेवी की पदयात्रा। गाँव के सभी लोग कैसे दो तरफ बट जाते हैं और पदयात्रा में किस प्रकार का परिवेश होता है उसका वास्तविक चित्रण पथिक ने अपने इस कहानी में किया है।

कोई जादू है क्या- यह कहानी भी एक मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र के पास एक पुरानी होंडा मोटर साइकिल है, जिसे वह बहुत सालों से चलाता आ रहा है। वह एक नया मोटरसाइकिल खरीदना चाहता है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह एक नया मोटरसाइकिल खरीद सके। वह एक मास्टर है और उसकी पत्नी मास्टरनी। उनके पास एक भैंस थी और मास्टरनी उसे अपने बच्चे जैसा प्यार करती है। एक दिन मास्टर के घर एक फौजी आया और उस समय मास्टरनी घर पर नहीं थी। फौजी के पास स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल थी जो मास्टर जी को पसंद आ गया और फौजी को मास्टर का भैंस पसंद आ गयी। मास्टर ने मोटरसाइकिल के साथ भैंस का सौदा कर लिया। बाजरवाद के जाल में फँसकर मास्टर ने भैंस का सौदा कर दिया।

पागल कुत्ते- चरण सिंह पथिक ने प्रस्तुत कहानी में गाँव की राजनीति का चित्रण किया है। गाँव में चुनाव लड़ा जा रहा है। चुनाव के हर उम्मीदवार अपने-अपने पैंतरे और तरीकों से वोट

माँग रहा है। उसी समय गाँव का चौथी धोबी को गिरकर कूल्हे में चोट आई। चौथी धोबी की पत्नी बादामी और लड़का श्रीचंद उसके देख-भाल में लग गए। चौथी धोबी धोबियों का पटेल था। उसके इशारे से ही गाँव के सभी धोबी अपना वोट डालेंगे। सभी उम्मीदवारों को पता था कि चौथी धोबी की तरफ से तीस वोट आने वाला हैं इसलिए सभी उम्मीदवार उसकी सेवा में लग गए। चौथी के चारपाई के पास अंगूर, सेब, केले, दूध, बिस्कुट और दवाइयों का इतना ढेर लग चुका था कि वह आँख फाड़े हैरत से बस देखे जा रहा था। हर उम्मीदवार आके बादामी को बोलता था- "पैसों कि फिक्र मत करना ताई। एक से लाख तक लगा देंगे। यहाँ से लेकर जयपुर-दिल्ली तक इलाज होगा।"[32] चौथी का हाल खराब हो गया था और उसे अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में सारे उम्मीदवार चौथी को देखने गया। उन उम्मीदवारों में से ही एक था पृथ्वीराज, जो चौथी से और अन्य धोबियों से ज्यादा आशा लगाकर बैठा हुआ था। चौथी को बीमारी के साथ-साथ चिंता ने जकड़ लिया था। उसको पता था कि चुनाव के बाद सबको पैसा लौटाना होगा। 'सेवा' के नाम पर सब जो खर्च कर रहे हैं वह चुनाव के बाद ही माँगने के लिए टपक जाएँगे। ये सब चिंता में चौथी पगला गया था। गाँव में ये बात आग की तरह फैल गयी। गाँव के ही अंगुरी खटीकन ने कहा- "वो तो इन गैबियों (उम्मीदवारों) ने तरह-तरह कि गोलियाँ खिला खिलाकर यही गाँव में पागल कर दिया था, वरना कूल्हे कि हड्डी तो कभी की ठीक हो गयी थी। आग लगे ऐसे चुनाव और ऐसे इलाज-इलाजियों में...।"[33] चौथी बच नहीं पाया। हरलाल चुनाव जीत गया था और यह बात पृथ्वीराज हजम नहीं कर पा रहे थे, चौथी के घरवालों ने अर्थी तैयार किया और अर्थी उठने ही वाली थी कि वहाँ पृथ्वीराज पहुँच गया और अपने पैसे माँगने लगा। "पहले बीस हजार...फिर अर्थी उठाना।"[34] किस प्रकार चुनाव के

लिए, राजनीति के लिए और पैसों के लिए लोग असंवेदनशील होते जा रहे है पथिक ने उसे यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

चरण सिंह पथिक की अंतिम कहानी संग्रह है **'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता'**। इस संग्रह में कुल 9 कहानियाँ उपलब्ध हैं लेकिन सिर्फ चार कहानियाँ हैं जो पहले प्रकाशित नहीं हुई हैं। वह हैं- 1.मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, 2.सर्पदंश, 3.मुर्गा, 4.कैसे उड़े चिड़िया

मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता- यह कहानी गुठली की जीवन की कहानी है। गुठली उर्फ गुट्ठल के कुल तीन भाई हैं और वह मंझला था। वह दसवीं में फेल हो गया था तभी उसकी पढ़ाई छूट गई थी। पढ़ाई छूटने के बाद भी पड़ोसी गाँवों से लेकर देश के हर बड़े शहर में कमाने के बाद विदेश भी होकर हाल ही में ओमान से लौटा था। लेकिन उसकी एक कमी ने उसकी ज़िंदगी बदल डाली। गुट्ठल की बायीं आँख में फर्क थी जिस कारण वह कभी अपना घर नहीं बसा पाया। एक बार लड़की भी ठीक हो चुकी थी लेकिन लड़की के बाप अचानक बोला- "सा'ब गलती की माफी चाहता हूँ। बिचले लड़के का सम्बंध नहीं करेंगे।"[35] जब उसे कारण पूछा गया तो उसने बताया- "बिचले लड़के की बायीं में फर्क है सा'ब। हम इसे छेक कर छोटे और बड़े लड़के की सगाई के लिए तैयार हैं।"[36] इस घटना के बाद गुट्ठल की शादी के लिए तमाम कौशिश की गयी लेकिन गाँव के कुछ अपने ही इसमें बाधा बन गए। जब कोई सगाई के लिए आता था तो उसे यह कहकर भगा दिया जाता था कि- "लड़का भैंगा है। एक आँख लपझप करती है।"[37] कोई तो यह भी कहता है- "डिपर मारता है।"[38] गुट्ठल हमेशा अकेला ही रह गया और पता नहीं कितने गुट्ठल आज भी अकेला है।

सर्पदंश- इस कहानी का मुख्य पात्र है ग्यारस्या और वह एक किसान है। ग्यारस्या उन तमाम किसानों का प्रतिनधि है जिनके खेत अति बारिश के कारण या अन्य कारणों से नष्ट हो जाते हैं

और अंत में वे मृत्यु को गले लगा लेते हैं। ग्यारस्या कर्ज में डूबा हुआ था। वह कर्ज चुकाने के बारे में सोच ही रहा था कि एक दिन बहुत जोड़ से बारिश होने लगी। खेतों में घुटनों तक पानी भर गयी। पंद्रह-बीस दिन तक खेत पानी में डूबे रहे। ग्यारस्या पागल हो चुका था। जब मौसम साफ हुआ तो अतिवृष्टि से हुए नुकसान का आकलन करने गाँव-गाँव घर-घर में सरकारी लोग जाने लगे। टी.वी. पर किसानों के हुए नुकसान की भरपाई कैसे हो इस पर चैनलों में बहस शुरू हो चुकी थी। उसी सुबह सरकार के लोग ग्यारस्या के गाँव में आए। सरकारी लोगों के साथ गाँव का सरपंच, ग्राम-सचिव, ग्राम-सेवक, पटवारी आदि सब ग्यारस्या के खेतों पर पहुंचे। सरपंच ने ग्यारस्या के झोपड़ी में झाँक कर देखा तो वह खाट पर मरा पड़ा था। खाट के नीचे कीटनाशक की एक खाली शीशी पड़ी हुई थी।

मुर्गा- यह कहानी भ्रष्टाचार पर एक बेहतरीन कहानी है। कहानी में पथिक ने वर्ग भेद को भी स्पष्ट रूप से दिखाया है। कहानी का पात्र दिनेश पंडित कहता है- "सर एससी/एसटी वालों ने हर डिपार्टमेन्ट की बैंड बाजा राखी है। काम के नाम पर गुलसपपा। कुछ कहो तो एससी की धमकी देते हैं।"[39] पथिक ने इस कहानी में भ्रष्टाचार को इस प्रकार दिखाया है कि इंसान चाहे कोई भी हो वह भ्रष्टाचार कर सकता है। अपने जाति-धर्म, भाई-बंधु के साथ भी लोग भ्रष्टाचार करने से नहीं चूकते।

कैसे उड़े चिड़िया- प्रस्तुत कहानी में लेखक ने स्त्री-पुरुष के सम्बंध को दर्शाया है। एक रिश्ते में स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार होना कितना महत्वपूर्ण है उसे पथिक ने सुंदर रूप से दिखाया है। दो चिड़िया के जरिए लेखक ने स्त्री मन का व्याख्यान किया है। किस प्रकार सदियों से स्त्री पुरुष के नीचे दबी आ रही है और अपने अधिकार के लिए तड़पती आ रही है उसकी ओर पथिक ने इशारा किया है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों का हिंदी समकालीन कहानियों में विशेष स्थान है। उनकी कहानियाँ भारतीय साधारण जनता के यथार्थ को व्यक्त करती हैं। उनकी कहानियों में भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, स्त्री चेतना आदि का चित्रण हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन को उकेरा है।

संदर्भ:

1. टेलीफोनिक साक्षात्कार, 16 अप्रैल, 2021

2. वही, 16 अप्रैल, 2021

3. इंटरव्यू.डी.डी.राजस्थान, 20 मार्च, 2019(यूट्यूब)

4.वही, 20 मार्च, 2019(यूट्यूब)

5.बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ.27

6. वही, पृ.28

7. वही, पृ.74

8. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 48

9. वही, पृ.62

10. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ.62

11. वही, पृ.80

12. वही, पृ.81

13. वही, पृ.81

14. वही, पृ.81

15. वही, पृ.89

16. वही, पृ.89

17. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ.92

18. वही, पृ.98

19. वही, पृ.98

20. वही, पृ.98

21. वही, पृ.102

22. वही, पृ.102

23. वही, पृ.112.

24. वही, पृ.114

25. वही, पृ.118

26. वही, पृ.118

27. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ.13

28. वही, पृ.13

29. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ.16

30. वही, पृ.16

31. वही, पृ.16

32. वही, पृ. 59

33. वही, पृ. 117

34. वही, पृ. 118-119

35. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ.05

36. वही, पृ.05

37. वही, पृ.06

38. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ.06

39. वही, पृ.46

द्वितीय अध्याय

लोक जीवन: अवधारणा और स्वरूप

"लोक शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शन' धातु से 'घञ' प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ है- 'देखना', जिसका लट् लकार में अन्य पुरुष एक वचन का रूप 'लोकते' है। अतः 'लोक' शब्द का अर्थ हुआ- देखने वाला। इस प्रकार वह समस्त जन-समुदाय जो इस कार्य को करता है 'लोक' कहा जा सकता है।"[1] "'लोक' शब्द से ही हिंदी के 'लोग' शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है, जिसका तात्पर्य है- सर्वसाधारण जनता। अतः 'लोक' शब्द का अभिप्राय उस समस्त जनसमुदाय से है, जो किसी देश में निवास करता है।"[2]

'लोक' शब्द का प्रयोग वेदों में पाया जाता है। "ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में 'लोक' शब्द का व्यवहार जीव तथा स्थान दोनों अर्थों में किया गया है।"[3]

"जैमिनीय उपनिषद में स्पष्ट है- "लोक अनेक प्रकार से फैला हुआ है। प्रत्येक वस्तु में यह प्रभूत या व्याप्त है।"[4]

"पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' में 'लोक' तथा 'सर्वलोक' शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें ठञ प्रत्यय करने पर 'लौकिक' तथा 'सार्वलौकिक' शब्दों की निष्पत्ति की है।"[5]

भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में भी 'लोक' शब्द को उद्धृत किया है- "इस शास्त्र की रचना लोक मनोरंजनार्थ की जा रही है।"[6]

तुलसी के रामचरित मानस में 'लोक' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस बारे में श्यामसुंदर दुबे कहते है- "रामचरित मानस में तुलसी ने परम्पराओं तथा लोक मानस में गुंथी हुई अनेक धारणाओं को अपनी संग्रहकारिणी प्रतिभा के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है।"[7] उसी प्रकार मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' में भी 'लोक' शब्द का प्रयोग मिलता है। राम का वन गमन उन्होंने वन गमन नहीं बल्कि लोक मन की ओर प्रस्थान माना है।

"प्रस्थान वन की ओर या लोक मन की ओर

होकर न धन की ओर राम जन मन की ओर।"[8]

"हिंदी शब्दकल्पद्रुम में 'लोक' शब्द का अर्थ- मनुष्य, व्याकरण, यम, यश, नाम, कीर्ति, सृष्टि के विभाग आदि के रूप में प्राप्त होता है।"[9]

"हलायुध कोश में लोक का अर्थ- भुवन, जगत, जन-प्रजा, मनुष्य आदि बताया गया है।"[10]

द प्रकटिकल संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी में लोक अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "मान जाति, प्रजा समूह, प्रांत, कक्ष, सात और चौदह की संख्या, संसार आदि।"[11]

'लोक' शब्द अंग्रेजी के 'फोक' (Folk) शब्द का रूपांतर माना जाता है। 'फोक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है। पहला असंस्कृत, अशिक्षित, असभ्य, अर्धसभ्य लोगों के लिए और दूसरा सर्व साधारण के लिए। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका के अनुसार- "फोक का भाव आदिम जाति के उन सभी व्यक्तियों का बोधक है, जिनसे यह समुदाय बना है। यदि इस

शब्द का व्यापक अर्थ ले तो यह सरस राष्ट्र की समग्र जनसंख्या के लिए प्रयोग में आ सकता है।"[12] उपयुक्त विवरणों से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 'लोक' शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से वर्तमान काल तक चलता आ रहा है और साधारण जनता के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता आ रहा है।

लोक की परिभाषा- 'लोक' शब्द के सम्बंध में अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अपना मत व्यक्त किया है-

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद' या ग्राम्य नहीं है बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत, रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती हैं उनको उत्पन्न करते हैं।"[13]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय 'लोक' को परिभाषित करते हुए लिखते है- "आधुनिक सभ्यता से दूर, अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली, तथाकथित अशिक्षित एवं असंस्कृत जनता को 'लोक' कहते है जिनका आचार-विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है।"[14]

डॉ. सत्येन्द्र के मतानुसार- "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य चेतना के अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।"[15]

डॉ. रवीन्द्र भ्रमर 'लोक' शब्द को परिभाषित करते हुए लिखते हैं- "इस शब्द के प्रचलित अर्थ दो हैं- एक तो विश्व अथवा जनसाधारण साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है, किन्तु इस दृष्टि से केवल गाँवों में ही नहीं वरन नगरों, जंगलों, पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव समाज जो अपने परम्परा, रीति-रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित या अल्प सभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है।"[16]

डॉ. वासुदेव अग्रवाल के अनुसार- "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है। उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का स्वरूप है....अर्वाचीन मानव के लिए सर्वोच्च प्रजापति है। लोक, लोक धात्री सर्वभूत गाथा पृथ्वी और लोक व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नये जीवन का आध्यात्म शाख है। इसका कल्याण हमारी मुक्ति का द्वार और निर्वाण का नवीन रूप है।"[17]

डॉ. श्याम परमार के मतानुसार- "आधुनिक साहित्य की नूतन प्रवृत्तियों में 'लोक' का प्रयोग गति, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन समाज जिसमें पूर्वसंचित परम्पराएँ, भावनाएँ, विश्वास और आदर्श सुरक्षित है तथा जिसमें भाषा और

साहित्यगत सामग्री ही नहीं अपितु अनेक विषयों के अनगढ़ किन्तु ठोस रत्न छिपे हैं के अर्थ में होता है।"[18]

डॉ. कुन्दनलाल उप्रेती के अनुसार- "लोक ज्ञानाह, बौद्धिक चेतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रूपी वाले मनुष्यों के समुदाय से इतर आभिजात संस्कार एवं शिक्षा से हीन अथवा अल्प शिक्षित मनुष्यों का एक ऐसा समुदाय है, जो मानव की आदिम प्रवृत्तियों तथा परम्पराओं की धारा में बहता हुआ अकृत्रिम जीवन जीने में विश्वास रखता है।"[19]

डॉ. बापुराव देसाई के अनुसार- "लोक वह मानव समाज है जो अपनी परम्पराओं में प्रचलित रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन, लेन-देन और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने से अशिक्षित कहलाता है।"[20]

डॉ. आनंद मोहन उपाध्याय के अनुसार- "लोक मानव समाज का वह वर्ग है, जो बौद्धिक चेतना, सुसंस्कृत तथा परिष्कृत रुचि रखने वाले वर्ग से असंपृक्त, अशिक्षित, आधुनिकता से परे, अकृत्रिम व सजह जीवन जीने के अभ्यस्त हैं।"[21]

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दिया गया परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं-

आर.आर. मैसेट के अनुसार- "इसके अंतर्गत उस समस्त जनसंस्कृति का समावेश माना जा सकता है जो पौरोहित्य धर्म तथा जनसंस्कृति इतिहास में परिणति नहीं पा सकी जो सदा स्वयंसंवर्धित रही है।"[22]

प्रो. एलेन डंडेस के अनुसार- "लोक शब्द से तात्पर्य मानुष के किसी भी ऐसे समूह या समाज से हो सकता हैं जिसमें समानता का कोई एक आधार हो और यह समानता किसी व्यवसाय, भाषा, अर्थ अथवा परम्परा की हो सकती है। उन्होंने लिखा है-

"The term folk can refer to any group of people who share at least one common factor, it does not maater what tha linking factor is could be a common occupation, language or religion but what is important is a group formed for whatever reason will have some traditions which it calls its own."[23]

डॉ. शार्ल्ट सोफिया बने के अनुसार- "यह एक जातिबोधक शब्द की भाँति प्रतिष्ठित हो गया है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों में अवशिष्ट विश्वास, रीति-रिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावते आती हैं।.... लोकवार्ता वस्तुतः आदिम मानस की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। वह चाहे दर्शन, धर्म विज्ञान, तथा औषध के क्षेत्र में हुई हो, चाहे सामाजिक संगठन तथा अनुष्ठानों में अपना अथवा विशेषतः इतिहास तथा काव्य और साहित्य के अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश में।"[24]

जॉर्ज हरगोज के अनुसार- "लोक वह जनसमुदाय है, जिसमें नागरिक कम होते हैं, और जीवंगत मान्यताएँ, वार्ताएँ, गीत नृत्य आदि में समानता होती है। इस समाज का गीत, संगीत व साहित्य राष्ट्रीय चेतना में मंडित नगरीय साहित्य से भिन्न होता है।"[25]

डॉ. बार्कर के अनुसार- "फोक से सभ्यता से दूर रहने वाली किसी पूरी जाति का बोध होता है, परंतु इसका यदि विस्तृत अर्थ ग्रहण किया जाए तो किसी सुसंस्कृत राष्ट्र की संग्रह जनता, इस नाम से अभिहित की जा सकती है।"[26]

पीयूष दईया के अनुसार- "लोक भोला और सरल होता है। वह विश्वासचालित होता हैं। उसकी मर्यादाएं जटिल विधानों पर नहीं, प्रेम और विकास पर आधृत होती हैं। प्रकृति के साथ उसका नित्य सम्बंध है। वह उसके जीवन का अंग है। ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पशु-पक्षी, वृक्ष-लता, नदी-सरोवर सभी उसके अपने हैं।"[27]

पीयूष दईया फिर कहते है- "लोक मानव समाज का वह वर्ग है, जो आभिजात्य संस्कार, शाष्ट्रीयता, पांडित्य की चेतना और पांडित्य के अहंकार से शून्य है तथा एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।"[28]

डॉ.शकुन्तला वर्मा के अनुसार- "लोक शब्द की निश्चित ब्यूत्पत्ति तो ज्ञात नहीं...सामान्यतया इसका अर्थ 'साधारण जन समाज' ही लगाया जा सकता है। स्पष्ट है कि सीधा सादा, निर्विकार, ऋजुता सम्पन्न, निरभिमान मानव समूह लोक के अंतर्गत है और यह भी कि लोक की स्थिति ग्राम और नगर सवत्र हो सकती है।"[29]

श्रीराम शर्मा के अनुसार- "लोक शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता है जो साज-सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता, शिक्षा एवं परिष्कार आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता है।"[30]

निष्कर्षतः हम यह कह सकते है कि 'लोक' सिर्फ एक समूह को नहीं कहा जा सकता। गाँव की झोपड़ी में रहने वाले लोगों से महानगर के अट्टालिका में जीवन व्यतीत करने वाले लोगों तक 'लोक' कहा जाता है।

लोक मनुष्य के हजारों विश्वासों, रीति-रिवाजों, रूढ़ियों, व्यवहारों एवं संकल्पों से बनता है। समाज में फैले धर्म, अचार-विचार, रीति-रिवाज, परम्पराएँ एवं विश्वास आदि में लोक के बीज बिखरे पड़े हैं। लोक का अपना एक मानस होता है जिससे जीवन और जगत को समझने का अपना एक अलग मानदंड होता है। इसमें प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी अपना दायरा होता है।

"लोक जीवन वह है, जो समस्त समाज के संदर्भ मैन कहा जाता है। लेकिन जब इसके सीमित रूप को देखा जाय तो वह उस गाँव, देहात, जनपद या अंचल या परिवेश के जीवन को लोक जीवन कहा जा सकता है। जिनका जीवन समाज के अन्य लोगों और संस्कृति से अलग है।"[31]

लोक जीवन के बारे में विद्वानों ने परिभाषाएँ प्रदान की है:

देवशंकर नवीन के अनुसार- "असल में लोक जीवन, लोक परम्परा, लोक कला, लोक संस्कृति, लोक साहित्य का मूल स्वरूप वहीं जाकर तलाशा जा सकता है, जहाँ मशीन का प्रवेश अभी भी नहीं हो पाया है। ऐसे स्थानों की स्मृति अभी भी जिनके पास बची हो, वे बता सकते हैं कि रस्सी बटने, चौपाल में बैठकर रात-रात भर किस्सा सुनने, खेतों में धान रोपते हुए...ऋतुगीत अथवा श्रमगीत गाने, तीज-त्यौहारों अथवा अन्य अवसरों पर प्रफुल्लित स्त्रियों को लोकगीतों, लोक नृत्यों में लिप्त देखने...अर्थात जीवन में लोक और लोक में जीवन के अन्योन्याश्रय संबंधों के सूत्र किस रहस्य लोक में समा गए।"[32]

कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार- "लोक-संस्कृति के अंतर्गत जन-जीवन से संबंधित जितने भी अचार-विचार, रहन-सहन, विधि-निषेध, प्रथा-परंपरा, धर्म-कर्म, पूजा-पाठ, खान-पान, वेश-भूषा और अनुष्ठान आदि हैं वे सभी इसके अंतर्गत आते हैं।"[33]

अंतत: यह कहा जा सकता है कि लोक जीवन उन तमाम विषयों का समाविष्ट है, जो लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कला, लोक-कथा एवं लोक-विश्वास आदि से परिपूर्ण है।

लोक जीवन को जानने के लिए 'लोक संस्कृति' को जानना बहुत ही आवश्यक है। लोक जीवन का कोई भी ऐसा अंग नहीं है जो लोक संस्कृति के भीतर अंतर्भुक्त न हो।"[34]

सोफिया वर्न ने लोकसंस्कृति को तीन श्रेणीयों में विभक्त किया है। वह निम्न प्रकार के है- लोक विश्वास, रीति-रिवाज तथा प्रथाएँ, लोक साहित्य।

लोक संस्कृति का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक संस्कृति के विस्तृत क्षेत्र के बारे में उल्लेख करते हुए लिखा है- इसके अंतर्गत पिछड़ी हुई जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों के अवशिष्ट लोक विश्वास, रीति-रिवाज, खान-पान, संस्कार, प्रथाएँ, रहन-सहन एवं आचार-विचार आते हैं। प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत के सम्बंध में भूत-प्रेतों की दुनिया तथा उनके साथ मनुष्यों के सम्बन्धों के विषय में जादू-टोना, संमोहन, वशीकरण, ताबीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु के सम्बंध में आदिम तथा असभ्य जातियों की अंध परम्पराएँ इसके भीतर समाविष्ट होती हैं। इसके साथ ही विवाह, उत्तराधिकार, बाल तथा प्रौढ़ जीवन के रीति-रिवाज, अनुष्ठान और त्यौहार, युद्ध, आखेट, पशु-पालन, मत्स्य-व्यवसाय आदि विषयों के विधि-विधान इसके अंतर्गत आते हैं।

संक्षेप में लोक की मानसिक संपन्नता के अंतर्गत जो भी वस्तुएँ आ सकती हैं वे लोक संस्कृति के क्षेत्र के भीतर हैं।

इसके अतिरिक्त लोक साहित्य की समस्त विधाएँ भी लोक संस्कृति में अन्तर्भूत होती हैं। "लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नाट्य, लोक सुभाषित अर्थात लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, मुहावरे तथा सूक्तियों आदि भी लोक संस्कृति के अध्ययन के विषय हैं। बच्चों के पालने के गीत, खेल के गीत, ऋतु सम्बन्धी उक्तियाँ सभी का इसमें अंतर्भाव होता है।"[35]

प्रस्तुत शोध में लोक संस्कृति के निम्न बिन्दुओं पर चर्चा की जाएगी- 1.लोक विश्वास, 2.लोक संस्कार, 3.त्योहार, 4.धार्मिक मान्यताएँ।

लोक विश्वास- लोक विश्वास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इस जगत में उपलब्ध प्रायः सभी वस्तुओं को लेकर कुछ न कुछ लोक विश्वास प्रचलित है। सूर्य, चन्द्र, विभिन्न गृह, नक्षत्र, नदी, पर्वत, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, वृक्ष-लता सभी से संबन्धित अनेक लोक विश्वास प्रचलित है।

आकाश पिण्ड के अनेक ग्रह-नक्षत्रों को लेकर अनेक लोकविश्वास प्रचलित हैं। इन सबमें प्रधान सूर्य है। "ऋग्वेद में सूर्य के रथ अर्थात रश्मियों को सुवर्णमयी कहा गया है जिसपर चढ़कर वे भुवनों का निरीक्षण करते हुए आते है।"[36]

लोक में सूर्य की पूजा की जाती है। प्रायः हिन्दू सुबह सूर्य को पानी चढ़ाता है और पूजा करता है। गायत्री मंत्र को वास्तव में सूर्य का ही मंत्र है जिसमें उनसे बुद्धि को तीक्ष्ण बनाने के प्रार्थना की गई है।

सूर्य की तरह चाँद को लेकर भी लोक विश्वास प्रचलित है। "वेदों में चाँद को 'सोम' कहा गया है।"[37]

नदियों को लेकर भी विभिन्न लोकविश्वास प्रचलित है। अधिकतर नदियां पवित्र मानी जाती हैं। गंगा नदी को लेकर अधिक लोकविश्वास प्रचलित है।

गंगा नदी को 'स्वर्गपगा' (स्वर्ग की नदी) अथवा 'देवापगा' (देवताओं की नदी) भी कहते है। "गंगा की उत्पत्ति ब्रह्मा के कमंडलु से मानी जाती है। पहले गंगा स्वर्ग में ही स्थित थी। परंतु राजा भागीरथ कठोर तपस्या करके अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए इसे पृथ्वी पर ले आए। भागीरथ के कारण ही गंगा का दूसरा नाम 'भागीरथी' पड़ गया।"[38]

बनस्पति जगत के विभिन्न वृक्ष, पौधे, लता, पुष्प, शाक आदि को लेकर लोक विश्वास प्रचलित है। वृक्षों में पीपल के सम्बन्ध में अनेक लोक विश्वास प्रचलित है। कुछ लोग श्री कृष्ण के पिता वसुदेव का निवास स्थान इस वृक्ष को मानते हैं। इस प्रकार देवता का निवास स्थान होने के कारण यह वृक्ष परम पवित्र माना जाता है।

पौधों में सबसे ज्यादा महत्व तुलसी को दिया जाता है। "संस्कृत में तुलसी को 'हरिप्रिया' कहते है जिसका अर्थ है विष्णु की प्रेमिका। इसे 'भूतघ्नी' भी है, जिसका अभिप्राय भूतों को नष्ट करने वाला होता है। लोगों का ऐसा विश्वास है कि जहाँ तुलसी का पौधा होता है वहाँ भूत भटकने नहीं पाते। इस प्रकार तुलसी का 'भूतघ्नी' नाम सार्थक है।"[39] पशुओं में सबसे अधिक लोकविश्वास गाय को लेकर प्रचलित है। "धार्मिक व्यक्ति भोजन करने के पहले कुछ पकवान गाय के लिए निकाल कर रख देते है, जिसे 'गोग्रास' कहा जाता है।"[40]

पक्षियों में भी विभिन्न पक्षियों सम्बन्धी लोकविश्वास प्रचलित हैं। जैसे-

"'मनहन में नौआ, चिरहन में कौआ' अर्थात मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौआ बड़ा ही चालक होता है। इसीलिए कौवे को मारना बड़ा ही कठिन कार्य है। यह एक स्थान पर बैठा हुआ चारों और दृष्टिपात करता रहटा है। इसकी चेष्टाएँ बड़ी होती है। इसीलिए चंचल वृत्ति वाले मनुष्यों की उपमा 'कौआ' से दी जाती है। कौआ के सम्बंध में यह लोक विश्वास भी प्रसिद्ध है कि इसकी जीभ के मांस को खाने से मनुष्य अमर हो जाता है। कौवे की केवल एक ही आँख होती है। उसके आँख कि एक ही पुतली बारी-बारी दोनों गोलाक्षों में आती-जाती रहती है। लोगों कि यह धारणा है कि यदि कौआ किसी व्यक्ति के सिर पर बैठ जाता है तो उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। परन्तु यदि किसी सम्बन्धी अथवा प्रिय व्यक्ति को उसकी 'झूठी' मृत्यु की सूचना दे दी जाये और वह रोने लगे तो इसका परिहार हो जाता है।"[41]

मानव शरीर के विभिन्न अंगों के सम्बन्ध में भी अनेक लोक विश्वास प्रचलित हैं। सिर से लेकर पैर तक जीतने अंग हैं उनमें से प्रत्येक के विषय में कोई न कोई मान्यता उपलब्ध होती है। जैसे- केश। शरीर के विभिन्न अंगों में केश का स्थान सर्वोपरि है। केश अत्यंत पवित्र माना जाता है। लोग किसी मन्नत की पूर्ति पर अपने बच्चों का मुंडन किसी पवित्र स्थान या नदी के किनारे करते हैं। बच्चों के इन बालों को बालक की बुआ या बहन अपने आँचल में धारण करती है और उन्हें जमीन पर गिरने नहीं देती। इसी प्रकार मानव शरीर के अन्य अंग जैसे- मस्तक तथा ललाट, आँख, कान, मुख, बाँह, बक्षस्थल, मन आदि के सम्बन्ध में भी लोकविश्वास प्रचलित है।

मास और दिन संबन्धित भी अनेक लोकविश्वास प्रचलित हैं। जैसे- सावन मास के प्रत्येक सोमवार को शिव की पूजा का विशेष महत्व है। "काशी में इस मास में प्रत्येक सोमवार को शिव के मंदिर में दर्शन के लिए लोगों की बड़ी भीड़ एकत्रित होती है। सारनाथ में इस दिन

मेला भी लगता है तथा वहाँ के 'सारङ्गनाथ' नामक शिव के मंदिर में दर्शन तथा पूजन किया जाता है। काशी के 'मानस मंदिर' में भक्तों की भीड़ लगती है जहाँ वे यंत्रों से चालित देवी-देवताओं की प्रतिमा का दर्शन करते है।"[42] इसी प्रकार प्रत्येक मास और सप्ताह के हर दिन को लेकर भी कुछ न कुछ लोकविश्वास प्रचलित हैं।

लोक संस्कार- अनेक विद्वानों के मतानुसार संस्कारों की स्वीकृत तथा प्रचलित संख्या सोलह है जिन्हें 'षोडश संस्कार' कहा जाता है।[43] वह निम्नलिखित हैं-

1.गर्भाधान, 2.पुंसवन, 3.सीमंतोंनयन, 4.जात कर्म, 5.नामकरण, 6.निष्क्रमण, 7.अन्नप्राशन, 8.चूड़ा करण, 9.कर्ण वेध, 10.विद्यारम्भ, 11.उपनयन, 12.वेदारम्भ, 13. केशान्त, 14.समावर्तन, 15.विवाह, 16.अन्त्येष्टि।

इन संस्कारों में तीन संस्कार मुख्य रूप से प्रचलित हैं -

1.जन्म, 2.विवाह, 3.मृत्यु।

जन्म- जब कोई स्त्री गर्भवती होती है तब उसको अनेक विधि-विधानों का पालन करना पड़ता है। ऐसा माना जाता है कि गर्भवती स्त्री को 'ग्रहण' नहीं देखना चाहिए क्योंकि भावी शिशु पर इसका बुड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण के समय गर्भवती स्त्री को घर में छिपा कर रखा जाता है। उस समय जिस अन्न से तेल निकलता है वह खाना निषिद्ध होता है। ग्रामीण लोगों का यह विश्वास है कि ऐसा करने से जो बच्चा पैदा होता है वह अनावश्यक रूप से बहुत बोलता है। उसी प्रकार गर्भवस्था में स्त्री की भोजन संबंधी इच्छाओं- जिसे संस्कृत में 'दोहब' कहा जाता है- की पूर्ति करना आवश्यक समझा जाता है। इन इच्छाओं की पूर्ति न होने

पर भावी शिशु के विकास में बाधा पड़ने की आशंका बनी रहती है। गर्भवती स्त्री यदि ज्यादा मीठा खाती है तब लोगों की यह मान्यता है कि संतान के पैदा होने पर उसके मुँह से लार टपकता रहेगा। जिस कक्ष में वह स्त्री सोती हो उसमें महान पुरुषों के यदि चित्र स्थापित हो तो उनका भावी शिशु के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।[44]

विवाह- संसार की सभी जातियों में विवाह प्रधान संस्कार के रूप में पाया जाता है। मानव जीवन में यह सबसे बड़ा तथा महत्वपूर्ण संस्कार है। भारतीय धर्म शास्त्रियों ने आठ प्रकार के विवाहों का विधान किया है।[45] जैसे-

1.ब्राह्म, 2.दैव, 3.आर्ष, 4.प्राजापत्य, 5.आसुर, 6.गांधर्व, 7.शाक्षस, 8.वैशाच।

मृत्यु- यह मानव जीवन का अन्तिम संस्कार है जिसे सभी देशों के लोग संपादित करते हैं। जब किसी व्यक्ति के जीवित रहने की आशा नहीं रहती तब उसे पलंग पर से उतार कर भूमि पर सुला दिया जाता है जिसे 'भुंइ सेज देना' कहते है। उस व्यक्ति के मुँह में गंगा जल और तुलसी दल डालना शुभ माना जाता है। धनी लोग इस अवसर पर उस व्यक्ति के हाथ में गाय की पूंछ का स्पर्श कराकर 'गोदान' भी कराते हैं। लोगों का यह विश्वास है कि ऐसा करने से मृतात्मा के लिए "वैतरणी" नामक नदी को पार करना आसान हो जाता है जो उसके मार्ग में पड़ती है।

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब उसके शव को काँच-बाँस की बनी हुई 'अरथी' पर सुलाकर किसी नदी के किनारे उसे दाह संस्कार करने के लिए ले जाते है। पिता की मृत्यु होने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र दाह संस्कार करने का अधिकारी माना जाता है। मृतात्मा के शव को ढोना पुण्य का कार्य समझा जाता है। मृत व्यक्ति के शव को चिता पर रखकर उस शव की तीन या पाँच बार प्रदक्षिणा कर उसमें आग लगा दी जाती है। चन्दन की लकड़ी, उसके

अभाव में आम अथवा वेल वृक्ष की लकड़ी की चिता प्रशस्त मानी जाती है। जो व्यक्ति मुखाग्नि देता है उसे 'दाही; कहते हैं। इस दाही को अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है- जैसे दस दिनों तक हजामत न बनवाना, शरीर में तेल न लगाना, जूता नहीं पहनना आदि। दसवें दिन दशाह कर्म कर घर के सभी सदस्य मुंडन कराते हैं। बारहवें दिन-द्वादशाह को ब्राह्मणों को भोज देकर श्राद्ध कर्म की समाप्ति हो जाती है।[46]

त्योहार- भारत के प्रत्येक राज्यों में अनेक त्योहार मनाया जाता है। हर राज्यों का अपना त्योहार और अपनी संस्कृति है। जैसे- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों में होली, दिवाली, दशहरा आदि त्योहार प्रसिद्ध है। उसी प्रकार पंजाब, बंगाल, असम साथ ही दक्षिण भारत के प्रत्येक राज्यों में अपना त्योहार प्रचलित है। इन त्योहारों के बारे में नीचे संक्षिप्त रूप से वर्णन किया गया है-

होली- होली हमारा सबसे प्रसिद्ध, लोकप्रिय तथा सर्व साधारण जनता का त्योहार है। इसे सभी वर्गों, वर्णों तथा जातियों के लोग समान रूप से मनाते हैं। यह त्योहार फाल्गुन शुल्क पुर्णिमा को मनाया जाता है। पुर्णिमा की पूर्व रात्रि को 'होलिका' जलाये जाती है जिसे 'संवत जलाना' भी कहा जाता है। इस विषय में यह कथा प्रसिद्ध है कि "हिरण्यकश्यप नामक राक्षस ने अपने भगवान भक्त पुत्र को आग में जला देने के लिए उसकी बुआ होलिका के साथ उसे आग में बैठा दिया। भगवान कि दया से पहलाद बच गा और होलिका जलकर भस्म हो गयी। इसी घटना के उपलक्ष में यह त्योहार मनाया जाता है।"[47]

बैसाखी का त्योहार- पंजाब में बैसाख मास की कृष्ण प्रतिपदा को बैसाखी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन लोगों में बड़ा उत्साह तथा उछाह दिखाई पड़ता है। इस अवसर पर लोग

हरिद्वार में आकर गंगा में स्नान करते हैं। यह गंगा स्नान ही इस त्योहार का प्रधान कृत्य है। यह त्योहार खेती के काटने के अवसर पर होता है। उछाह तथा प्रसन्नता के समय होने के कारण लोग भांगड़ा और गिद्दा नृत्य का प्रदर्शन करते हैं।

बिहू- असम राज्य में 'बिहू' का त्योहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। असम के लोगों का यह सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। यह उत्सव चैत्र मास के अंतिम दिन से प्रारम्भ होकर वैसाख कृष्ण षष्ठी तक चलता रहता है। यह त्योहार तीन प्रकार का होता है-

- बहाग बिहू
- काति बिहू
- माघ बिहू

इन तीनों में बहाग बिहू ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह 'रंगाली बिहू' के नाम से भी प्रसिद्ध है जिसका अर्थ प्रसन्नता तथा आनंद होता है। बहाग बिहू असम के नववर्ष के समय मनाए जाने के कारण सर्वाधिक महत्व रखता है।

दुर्गा पूजा- बंगाल में दुर्गा पूजा का उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। बंगाली लोग शक्ति के उपासक है। अतः शक्ति की देवी दुर्गा की उपासना इनके लिए स्वाभाविक है। बंगाल में राजप्रसाद से लेकर गरीब की झोपड़ी तक इस पुजा का प्रचार है। धनी मानी, अमीर गरीब और ऊंच एवं नीच सभी वर्गों, श्रेणिओं तथा जातियों के लोग समान रूप से इस उत्सव को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।

ओणम- केरल भारत का सबसे दक्षिणी राज्य है। यहाँ 'ओणम' नामक त्योहार अत्यंत प्रसिद्ध है। नौका प्रतियोगिता का यह जलोत्सव 'ओणम' केरल में अपना विशेष आकर्षण रखता है। श्रावण

मास में चार दिनों तक यह त्योहार मनाया जाता है। 'ओणम' के अवसर पर नौकाओं की प्रतियोगिता होती है। इसे 'कलम कलि' भी कहा जाता है जिसका अर्थ होता है नौकाओं का खेल। इस दिन लोग षड़रम भोजन करते हैं और नवीन वस्त्रों के धारण कर नौकाओं का खेल देखने जाते हैं। इसी प्रकार 'विषु' केरल का दूसरा प्रसिद्ध त्योहार है और 'तिरुवारिता' महिलाओं का त्योहार है जो केरल में मनाया जाता है।[48]

उगादि- यह त्योहार अंध्रप्रदेश में मनाया जाता है। "'उगादि' 'युगादि' का अपभ्रंश रूप है। इसे 'सनवत्सरादि' भी कहते हैं जिसका अर्थ वर्ष का प्रथम दिन है।"[49] जिस प्रकार ईसाइयों में नव वर्ष का त्योहार मनाया जाता है 'उगादि' को वैसा ही त्योहार समझना चाहिए। इसके मनाने की तिथि चैत्र शुक्ल पंचमी है। यह समय आंध्र में वसंत के आगमन का भी समय है।

'उगादि' के साथ-साथ एरुवाक पुन्नम, संक्रांति, विनायक ढवाती आदि त्योहार भी आंध्रप्रदेश में मनाए जाते हैं।

पोंगल- तामिलनाडु में सबसे प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण त्योहार पोंगल है। इस राज्य के निवासी इस त्योहार को बड़े ही उत्साह तथा उछाह के साथ मनाते है। इसे मकर संक्रांति के दिन मनाया जाता है। अतः इसकी निश्चित तिथि 14 जनवरी माननी चाहिए। सूर्य जब उत्तरायण होकर मकर राशि में संक्रामण करता है तब उसकी पुजा की जाती है। 'पोंगल' शब्द का अर्थ पकाया गया चावल है। चूंकि सूर्य भगवान को इस दिन यह पदार्थ अर्पित किया जाता है इसलिए इसका नाम पोंगल पड़ गया। इस दिन मिट्टी के नए पात्र को केसर से सुसज्जित कर उसे आग पर चढ़ा देते हैं। घर की कोई बुढ़िया या युवती स्त्री इसमें खेत से काटकर लाये गए चावल को इस पात्र में डालकर पकाती है। यह पका हुआ चावल तीन पत्तियों में रखकर सूर्य

भगवान को अर्पित किया जाता है। कर्पूर जलाकर आरती की जाती है और परिवार के सुखी रहने के लिए उनसे आर्शीवाद की याचना की जाती है।[50]

इस तरह भारत के प्रत्येक प्रांत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं।

धार्मिक मान्यताएँ- भारत के लोगों में विभिन्न धार्मिक मान्यताएँ प्रचलित है और अनेक देवता अत्यंत प्रसिद्ध है। जो देवता गाँव के सभी सर्व साधारण लोगों द्वारा पुजे जाते हैं उसे ग्राम देवता कहा जाता है। परन्तु जिस देवता की पूजा किसी विशेष समाज या सम्प्रदाय के विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा की जाती है उसे गृह देवता कहते हैं। जैसे हनुमान तथा गणेश ग्राम देवता है क्योंकि स्थानीय समस्त जनता इनकी आराधना करते है। किन्तु सीतला माता अथवा त्रिलोकी नाथ बाबा गृह देवता हैं, जिनकी आराधना किसी विशेष परिवार द्वारा की जाती है।[51]

हनुमान- उत्तर भारत में हनुमान सबसे अधिक प्रसिद्ध, लोकप्रिय तथा महत्वपूर्ण देवता हैं। उत्तरी भारत में बहुत कम ही ऐसा कोई घर हो जहाँ इनकी आराधना न होती है। काशी में हनुमान का सुप्रसिद्ध मंदिर 'संकट मोचन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर में शनिवार तथा मंगलवार को दर्शनार्थियों की भयंकर भीड़ एकत्रित होती हैं। मंगलवार हनुमान जी का जन्म दिन होने के कारण इस दिन दर्शन का विशेष महत्व माना जाता है। अगहन की एक विशेष तिथि हनुमान जयंती के रूप में बड़े धूमधाम से काशी तथा अयोध्या में मनाई जाती है।

बाबा त्रिलोकीनाथ- त्रिलोकीनाथ का अर्थ होता है, वह भगवान जो तीनों लोगों का स्वामी है। पहले इनकी पूजा केवल तथाकथित निम्न वर्गों तक ही सीमित थी। किन्तु आज-कल इनकी पूजा का प्रचार सभी वर्गों में समान रूप से पाया जाता है।

इन देवी-देवताओं की तरह ही आदिम लोगों का यह भी विश्वास था कि बीमारी किसी प्राकृतिक कारण से नहीं बल्कि किसी दुष्ट आत्मा अथवा डायन के क्रोध का फल है। इसीलिए लोग बीमारी भगाने के लिए विभिन्न देवी-देवताओं का पूजा करते है। जैसे-

शीतला माता- शीतला माता चेचक रोग की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। जब कोई बालक या अन्य व्यक्ति चेचक से पीड़ित होता है तब यह माना जाता है कि शीतला देवी का प्रकोप इस पर हो गया है। अतः इस देवी की शांति के लिए पूजा-पाठ किया जाता है।

माली को शीतला माता का भक्त माना जाता है। यह भी माना जाता है कि शीतला माता नीम के पेड़ पर निवास करती हैं और यह वृक्ष इन्हें अत्यंत प्रिय है। माली नीम वृक्ष की पत्तियों को लेकर चेचक से पीड़ित व्यक्ति को उससे झाड़ता है। इसके पश्चात उन पत्तियों को वह उस रोगी के बिस्तर पर बिछा देता है। घर तथा कुटुम्ब की स्त्रियाँ उसके पास बैठकर शीतला माता के लोक-गीत गाती हैं जिनमें रोगी को शीघ्र निरोग कर देने की प्रार्थना की जाती है। इस रोग में डाक्टरी दवा कराना नितांत निषिद्ध है। लोगों का विश्वास है, शीतला की कृपा से ही यह रोग दूर हो सकता है, अन्यथा नहीं।[52]

ज्वरहरीश्वर- इनके नाम से ही यह विदित होता है कि ये ज्वर को हरण करने वाले देवता हैं। इनकी पूजा से बुखार से पीड़ित व्यक्ति आरोग्य लाभ करता है। इन्हें दूध और भाँग अर्पित किया जाता है। परंतु इनके मंदिर का कहीं पता नहीं है। बिहार के चाइबासा जनपद के निवासी मँगरा नामक देवता की पूजा की जाती है जो ज्वर का अधिष्ठात्री देव माना जाता है।[53]

गलसुआ माता- गाँवों में जब किसी व्यक्ति का गाल किसी कारण सूज जाता है तब उसे बीमारी के रूप में गलसुआ माता का प्रकोप माना जाता है। इसकी शांति के लिए इनकी पूजा करके

प्रसाद रूप में हलुआ अथवा मालपुआ चढ़ाया जाता है। पूजा के पश्चात प्रसाद- जिसे सीरिनी कहा जाता है- बाँट देने पर इस रोग की शान्ति हो जाती है।[54]

पिलेग मइया- हैजा की ही भाँति प्लेग की भी अधिष्ठात्री देवी की पूजा की जाति है जिसे 'पिलेग मइया' कहते हैं। पिलेग शब्द अँग्रेजी प्लेग का अपभ्रंश रूप है। इस देवी का कोई मंदिर नहीं पाया जाता। घर की कोई वृद्धा स्त्री इस 'मइया' की पूजा करती है। ऐसा समझा जाता है कि इससे रोग दूर हो जाता है।[55]

भारत के विभिन्न स्थानों में मृत आत्माओं संबंधी विश्वास भी देखा जाता है। जैसे- प्रेतात्मा, भूत, चुड़ैल, प्रेत, पिशाच, बैताल, राक्षस, ब्रह्म राक्षस, बीर, दानव, दैत्य, मसान, अचेरी, आदि।

जिस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है उसे प्रेत कहा जाता है। ऐसे आत्माओं का मृत्यु किसी सामान्य स्थिति में होती है और जिसका अंतिम संस्कार सम्पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है।[56]

जिन लोगों की मृत्यु किसी दुर्घटना अथवा आत्महत्या के कारण होती है उन आत्माओं को भूत कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब ऐसे व्यक्ति का विधिवत अंतिम संस्कार नहीं किया जाता तब वह आत्मा और भी भयंकर हो जाती है।[57]

चुड़ैल के लिए यह लोकविश्वास प्रचलित है कि चुड़ैल अत्यंत सुंदरी होती है। चुड़ैल के पाँव आगे नहीं बल्कि पीछे की ओर होते हैं। चुड़ैल सुंदरी रूप धारण कर रात के समय खूबसूरत युवकों से अनैतिक संबंध स्थापित करती है।[58]

किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद श्राद्ध कर्म समाप्त होने के पूर्व बीच के दिनों में मृत व्यक्ति की आत्मा प्रेत के रूप में घूमती रहती है। वह प्रेत अशांत और दुखी अवस्था में विचरण करता फिरता है। जब क्रिया-कर्म समाप्त होता है तभी वह शांत होता है। ऐसा माना जाता है कि जब प्रेत को दुखी किया जाता है तभी वह किसी को क्षति पहुंचाता है अन्यथा वह किसी को कष्ट नहीं देता।[59]

पिशाच शब्द का अर्थ है 'मांस-भक्षी'। इस प्रेतात्मा को इंसान के मांस का भक्षण करना अत्यंत प्रिय है।[60]

मसान शब्द संस्कृत के शमशान शब्द का अपभ्रंश है। मसान उन दुष्ट आत्माओं के भूतों को कहते हैं जो शमशान में घूमा करते हैं। लोगों का यह मानना है कि मसान प्रायः शमशान में रहता है। कभी-कभी वह जंगलों में या अंधकारपूर्ण स्थान में अनेक रूपों में दिखाई देता है। वह कभी भैंस की और कभी बकरे की सी आवाज करता है। लोगों का यह भी मानना है कि पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में भालू तथा अन्य जंगली जानवरों के रूप में घूमता फिरता है।[61]

पहाड़ों में अछेरा नामक एक भूत पाया जाता है। जिन लड़कियों का कम उम्र में ही मृत्यु हो जाती है उनकी आत्मा अचेरी या अछेरी नामक भूत बन जाती है। ऐसा विश्वास है अचेरी पहाड़ों की चोटियों में निवास करती हैं और रात के समय आनंद करने के लिए नीचे आती हैं। पहाड़ों पर जब छोटी लड़कियां बीमार पड़ जाती है तब ऐसा माना जाता है कि उन पर अचेरी की बुरी दृष्टि पड़ गई है।[62]

इसके साथ-साथ अन्य आत्माओं जैसे- जिन्न, बूड़ा, परी आदि के बारे में भी विभिन्न लोक विश्वास प्रचलित है।

लोक हमारे जीवन के सुदीर्घ इतिहास का प्रतिफल है। लोक राष्ट्र की अमूल्य निधि है। हमारे इतिहास में जो भी सुंदर एवं तेजस्वी तत्व है, वह कहीं न कहीं लोक में सुरक्षित है। कृषि, अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य एवं कला के अनेक रूप, भाषा एवं शब्दों के भंडार, नृत्य, संगीत, कथा-वार्ताएँ आदि सभी कुछ लोक से ओत-प्रोत हैं। उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है।

संदर्भ:

1.लोकसाहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.09

2.लोकसंस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.08

3.लोकसाहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.09

4.जैमिनीय उपनिषद, 3/28

5.अष्टाध्यायी, पाणिनी, पृ. 12

6.जैन विश्वभारती संस्थान, संपादक,डॉ सुरेश महेश्वरी, (उद्धृत) पृ.402

7.लोक परम्परा, पहचान और प्रवाह, श्याम सुंदर दुबे, पृ.17

8. वही, पृ.97

9. वही, पृ.93

10. लोक साहित्य, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, पृ.05

11. वी.एस.आपटे. द प्रैक्टिकल संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, पृ.75

12. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका जिल्द-9, पृ.518

13. डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, जनपद(पत्रिका) वर्ष-1, अंक-1, पृ.65

14. लोकसाहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.11

15. लोकसाहित्य विज्ञान, डॉ सत्येंद्र, पृ.30

16. हिंदी साहित्य में लोकतत्व, डॉ रवीन्द्र भ्रमर, पृ.03

17. सम्मेलन, डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ.65

18. मालवी लोक साहित्य, डॉ. श्याम परमार, पृ.02

19. लोकसाहित्य के प्रतिमान, कुंदनलाल उप्रेती, पृ.05

20. लोकसाहित्य, डॉ. बापुराव देसाई, पृ.18

21.फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, डॉ. आनंदमोहन उपाध्याय, पृ.18

22. साइकोलोजी एंड फोबलोर, आर.आर.मेसेट, पृ.76

23. लोकसाहित्य, जैन विश्वभारती संस्थान, पृ.06

24. हैंड बुक आफ फोकलोर, डॉ.शार्ल्ट सोफियाबर्न, पृ.12, अनुवाद, डॉ. सत्येंद्र, पृ.05

25. एन्सक्लोपीडिया ब्रिटानिका, भाग-9, पृ.446

26. वही, पृ.474

27. लोक, पीयूष दईया, पृ.415

28. वही, पृ.385

29. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक तथा मनोवैज्ञानिक अनुशीलन, डॉ. शकुंतला वर्मा, पृ.82

30. लोक साहित्य सिद्धांत और परम्परा, श्रीराम शर्मा, पृ.45

31. लोक साहित्य: स्वरूप एवं सर्वेक्षण, डॉ.जवाहलाल हाँडू, डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.200

32. रंग प्रसंग, जानवरी-जून, 2003, पृ.280

33. लोक संस्कृति की रूपरेखा, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.2

34. लोकसंस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.15

35. वही, पृ.16

36. ऋग्वेद 1/35/21

37. लोकसंस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.51

38. वही, पृ.62

39. वही, पृ.79

40. वही, पृ.88

41. वही, पृ.103

42. वही, पृ.121

43. वही, पृ.125

44. वही, पृ.159

45. वही, पृ.160

46. वही, पृ.160

47. वही, पृ.165

48. वही, पृ.170

49. लोकसंस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.173

50. वही, पृ.174

51. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्य, पृ.252

52. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.196

53. वही, पृ.198

54. ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ बंगाल, रिजेल, भाग-1, पृ.132

55. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.201

56. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.201

57. वही, पृ.203

58. वही, पृ.203

59. वही, पृ.213

60. वही, पृ.206

61. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.210

62. वही, पृ.211

तृतीय अध्याय

समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन

3.1 लोक जीवन और साहित्य

लोक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है, जितना मानव जीवन। लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसकी रचना लोक करता है। “साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, हँसती है, खेलती है उन सबको लोक साहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है।”[1] लोक साहित्य में लोक जीवन के प्रत्येक पहलू का चित्रण मिलता है।

लोक साहित्य के बारे में विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न मत दिए हैं:

लोक साहित्य के मूर्धन्य व्याख्याकार डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के मतानुसार-"सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में वर्तमान में जो निरक्षर जनता है उसकी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्रकट होती है, उसे लोक साहित्य कहते हैं।"[2]

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का लोक साहित्य के संदर्भ में अभिमत है- "ऐसी मौलिक अभिव्यक्ति जो लोक की युग-युगीन साधना में समाहित रहते हुए जिसमें लोकमानस प्रतिबिम्बित रहता है वही लोक साहित्य हैं। वह मौलिक अभिव्यक्ति है और सामान्य जनसमूह उसे अपना मानता है।"[3]

डॉ. रवीन्द्र भ्रमर के मतानुसार "लोक साहित्य लोक मानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौलिक परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है। इस साहित्य के रचयिता का नाम प्रायः अज्ञात रहता है।

लोक का प्राणी जो कुछ कहता सुनता है, उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुल-मिलकर ही कहता है। संभवतः लोक साहित्य लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिंब भी होता है। अभिजात भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है। लोक भाषा के माध्यम से लोक-चिंता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है।"[4]

श्री राम शर्मा के मतानुसार- "लोक में प्रचलित लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोक गीत कहा जा सकता है।"[5]

लोक साहित्य सर्व सामान्य जनता का साहित्य हैं। अतः लोक साहित्य वह साहित्य है, जो साधारण जनता द्वारा, साधारण जनता के लिए रचा गया हो। जैसे-

वर्गीकरण:

कृष्णदेव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'लोक साहित्य की भूमिका' में लोक साहित्य को पाँच भागों में विभक्त किया है- 1. लोकगीत, 2. लोकगाथा, 3. लोककथा, 4. लोकनाट्य, 5. लोक सुभाषित [6]

सत्येंद्र ने कुल दस वर्गों में लोक साहित्य का वर्गीकरण है- 1.धर्मगाथा, 2.परी कथा, 3.लोक कहानी, 4.अवदान, 5.दन्त कथा, 6.तंत्राख्यान, 7.लोकगीत, 8.लोकगाथा, 9.लोकोक्ति, 10.मंत्र[7]।

डॉ. रवीन्द्र भ्रमर ने लोक साहित्य को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है: 1.कथा, 2.गीत, 3.लघुवार्ताएँ[8]।

श्री राम शर्मा ने लोक साहित्य का पाँच वर्गों में वर्गीकृत किया है- 1.लोक गाथा, 2.लोक गीत, 3.लोक नाट्य, 4.लोक कथा, 5.प्रकीर्ण साहित्य[9]।

लोक जीवन की भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक विशेषताओं एवंसामाजिक मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए लोक साहित्य को निम्न रूपों में विभक्त किया जा सकता है- 1.लोक गीत, 2.लोक गाथा, 3.लोक नाट्य, 4.लोक कथा, 5.लोक सुभाषित।

1. लोकगीत:

लोक साहित्य के अंतर्गत लोक गीतों का विशेष स्थान है। लोकगीत का मूल आशय लोक में प्रचलित गीतों से है। सामान्य रूप से लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित और लोक के लिए गाए जाने वाले गीतों को लोकगीत कहा जाता है। 'लोकगीत' शब्द अंग्रेजी के 'फोकसांग' (Folksong) का पर्याय माना जाता है। फोकसांग जर्मनी के 'Valksong' का अपभ्रंश है। लोक गीत साधारण रूप से खेतों में, नदियों एवं पहाड़ों में, मैदानों एवं पथों में, घरों में, आपसी बातों में, विरह में, संयोग में, श्रम में, खेल-कूद या हास-परिहास एवं भिन्न-भिन्न अवसरों पर गीत बनकर कंठों से निस्सृत हुए हैं। लोक में लोक साहित्य के दूसरे रूपों की अपेक्षा लोकगीत सबसे अधिक प्रचलित हैं। इसमें लोक मानस की सच्ची अभिव्यक्ति होती है।

परिभाषा:

कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार- "लोक गीत वह गेय गीत है जिससे जन मन का अनुरंजन सदा होता रहता है। इस गीतों को स्त्री और पुरुष समान रूप से गाते हैं। इन गीतों में कुछ ऐसे गीत उपलब्ध होते हैं जो केवल स्त्रियों द्वारा ही गाये जाते हैं जैसे- संस्कार विषयक गीत, इसके ठीक विपरीत कुछ ऐसे ही गीत हैं जो केवल पुरुषों की ही संपत्ति हैं। जैसे होली के गीत। लोक गाथाएँ तो केवल पुरुष वर्ग के द्वारा ही गाई जाती हैं, मानो इन्हें गाने का पुरुषों को एक मात्र अधिकार प्राप्त हो गया हो।"[10]

कृष्णदेव उपाध्याय के दूसरे मत के अनुसार- “किसी देश के लोकगीत उस देश की जनता के हृदय के उद्गार है वे उनकी हार्दिक भावनाओं के सच्चे प्रतीक होते हैं यदि किसी देश की सभ्यता का अध्ययन करना हो तो सर्वप्रथम उनके लोकगीतों का अध्ययन करना होग। लोकगीत लोकमानस की वस्तु है अतः उनमें जनता का हृदय लिपटा रहता है।”[11]

रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- भारतीय जनता का सामान्य स्वरूप पहचानने के लिए पुराने परिचित ग्राम गीतों की ओर ही ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल पंडितों द्वारा प्रवर्तित काव्य परंपरा का अनुशीलन ही अलग नहीं है। जब जब शिष्टों का काव्य पंडित बांध का निश्चेष्ट और संकुचित होगा तब तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वच्छंद बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से तत्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा।”[12]

डॉ. विद्या चौहान के अनुसार-"मानव हृदय का भाव-विलास अपनी उत्कृष्ट स्थिति में लयात्मक आरोह-अवरोहों में जब भाषाबद्ध होकर प्रवाहित होने लगा तो शब्द शास्त्रियों ने उसे गीत कहा और इस गीत परंपरा की एक धारा जब अपनी देशज बोलियों में लोकवाणी को प्रवाहित करने लगी तो उसे लोकगीत के नाम से ज्ञापित किया गया।"[13]

वैरियर एल्वीन के अनुसार- “लोकगीत केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि उनका संगीत स्वरूप और वर्ण्य विषय जनता के जीवन का अंगभूत बन गया है। प्रत्युत्त उनकी महत्वा इससे अधिक है। इन मनोरम गीतों में इन व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठित लेख पत्रों में हमें मानव विज्ञान संबंधी तथ्यों की प्रमाणीभूत सामग्री उपलब्ध होती है। मानव विज्ञान वेत्ताओं को अपने सिद्धांतों की सत्यता प्रमाणित करने के लिए लोकगीतों को छोड़कर कोई दूसरा सच्चा एवं विश्वासपात्र साक्षी उपलब्ध नहीं हो सकता।”[14]

डॉ.विश्वनाथ के अनुसार- “लोकगीतों में जनजीवन की सच्ची झांखी है। गर्हस्थ का निर्मल दर्पण है। भारतीय संस्कृति की सुनहरी शृंखला है काव्य का सरल सहज सौंदर्य है। नर-नारियों के मनोभावों और सुख-दुख की अनुभूतियों की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भंगिमाएँ तथा

विज्ञान की उपयोगी सामग्री भी है। जिसका जिस पक्ष में रुचि हो उसका स्वाद लें। लोकगीतों के संदर्भ में कहा जाता है, जो जातियाँ जितनी अधिक परंपरा प्रेमी हैं उनके लोकगीतों में उतनी ही अधिक अन्विति रहती है। परंपरा निरी रूढ़ियाँ नहीं हैं, उनमें विकास के बीज वर्तमान में रहते हैं, जबकि रूढ़ियाँ किसी समाज के सिरोभार से अतिरिक्त कुछ नहीं होती। भारतीय जन परम्पराओं के पुजारी हैं, रूढ़ियों के गुलाम नहीं।"[15]

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार-"कोई भी गीत, यहाँ तक कि कैसी भी संगीत लोक गीतों पर निर्भर है। संगीत की दृष्टि से ये गीत बिना किसी वाद्ययंत्र के स्वाभाविक हृदय-स्पर्शी स्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोकगीत मानव जाति हृदय से, अपने भावों द्वारा जन्य, कृति प्रदत्त आवाज के द्वारा अचानक घुमड़कर प्रकट होने वाला संगीत है। जो हृदय का बोझ हल्का करने के लिए भावों की अभिव्यक्ति के निमित्त बोलने की अपेक्षा गाकर गीतों द्वारा व्यक्त किया जाता है।"[16]

डॉ. विद्यासिंह के अनुसार- "लोक साहित्य का सबसे अधिक व्यापक विविध प्रिय प्रचलित रूप लोकगीत है। मनुष्य की अनुभूतियों को उसके सामाजिक जीवन से जुड़ कर जो भाव प्रवण अभिव्यक्ति मिली वही लोकगीतों के विविध प्रकारों में व्यक्त हुई। लोकगीत सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैं। वे मनुष्य प्रकृति और समाज के सहज पारस्परिक सम्बन्धों को अकृत्रिम ग्रामीण जन जीवन के बीच कर्म क्षेत्र जीवन यापन और जिजीविषा के साथ व्यक्त करते है।"[17]

प्रतिभा दुबे के अनुसार- "उच्च वर्गीय शिष्ट समाज ने अपने कृतित्व को लिपिबद्ध किया और अध्ययन-अध्यापन की परंपरा द्वारा समस्त अर्जित ज्ञान को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का प्रयास किया। इसके विपरीत निम्नवर्गीय सामान्य जनता पठन-पाठन की सुविधा से वंचित रही अतः सुविधा विहीन लोकजन ने अपने संस्कारों, रिवाजों, परम्पराओं एवं संस्कृति को

लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोककथाओं एवं लोकनाट्य के माध्यम से सुरक्षित रखने का प्रयास किया अन्य की अपेक्षा लोकगीत लोक-साहित्य की सबसे सशक्त विधा है। लोकमन की रसवती गंगा लोकगीतों में अपने सम्पूर्ण आवेग, संवेग और संवेद के साथ प्रवाहित होती है। इन गीतों में लोक जीवन के समस्त रीति-रिवाज लोकपरम्पराएं धार्मिक कृत्य विधान मिथक लोक कथाएँ युगबोध एवं प्रतिरोध आदि सब कुछ सुरक्षित है।"[18]

अतः लोक संस्कृति और लोक साहित्य का किसी देश या जाति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। भारतीय जनसाधारण के जन्म से लेकर मृत्यु तक के विविध संस्कार लोकगीतों में समाहित है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र के अपने परम्पराओं से जुड़े गीत जैसे- तीज-त्योहार, विवाह, संस्कार तथा अनेक अवसरों पर गाए जाने वाले गीत भारतीय संस्कृति के अमूल्य सम्पदा है। इन गीतों में मानव सभ्यता और संस्कृति का रूप अंकित रहता है।

वर्गीकरण:

पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीतों का वर्गीकरण ग्यारह श्रेणियों में किया है: 1.संस्कार संबंधी गीत, 2.चक्की और चरखे के गीत, 3.धर्मगीत, 4.ऋतु संबंधी गीत, 5.खेती के गीत, 6.भिखमंगी के गीत, 7.मेले का गीत, 8.जाति गीत, 9.वीर गीत, 10.गीत गाथा, 11.अनुभव के वचन[19]।

श्याम परमार ने लोकगीतों का वर्गीकरण चार श्रेणियों में किया है- 1.संस्कार विषयक गीत, 2.माहवारी गीत, 3.सामाजिक ऐतिहासिक गीत, 4.विविध[20]।

पंडित सूर्यकरण पारीक ने लोकगीतों को 29 भागों में विभाजित किया हैं: 1.देवी-देवताओं और पितरों के गीत, 2.ऋतुओं के गीत, 3.तीर्थों के गीत, 4.व्रत-उपवास और त्यौहारों के गीत, 5.संस्कारों के गीत, 6.विवाह के गीत, 7.भाई-बहन के प्रेम गीत, 8.साली-सलहज के गीत, 9.पति-पत्नी के प्रेम गीत, 10.पणिहारियों के गीत, 11.प्रेम के गीत, 12.चक्की पीसते

समय के गीत, 13.बालिकाओं के गीत, 14.चरखे के गीत, 15.प्रभाती गीत, 16.कृष्ण प्रेम के गीत, 17.होली के अवसरों पर पुरुषों द्वारा गेय गीत, 18.देश-प्रेम के गीत, 19.राजकीय गीत, 20.राजदरबार, मजलिस, शिकार, के गीत, 21.जन्मे के गीत, 22.सिद्ध पुरुषों के गीत, 23.वीरों के गीत, 24.ख्यालों के गीत, 25.पशु-पक्षी संबंधी गीत, 26.शान्त रस के गीत, 27.गाँवों के गीत, 28.नाट्य गीत, 29.विविध[21]।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के मतानुसार- 1.संस्कार संबंधी गीत, 2.ऋतु संबंधी गीत, 3.व्रत संबंधी गीत, 4.देवता संबंधी गीत, 5.जाति संबंधी गीत, 6.श्रम संबंधी गीत[22]।

संस्कार संबंधी गीत- भारतीय जनसाधारण का जीवन जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक विभिन्न संस्कारों से सम्बद्ध है। इन संस्कारों के अवसर पर जो गीत गाये जाते है उन्हें संस्कार संबंधी गीत कहा जाता है। जैसे- शिशु जन्म के समय गाए जाने वाले गीत, मुंडन, जनेउ के समय और विवाह के समय गाये जाने वाले गीत।

ऋतु और व्रत संबंधी गीत- विभिन्न ऋतुओं के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को ऋतु संबंधी गीत कहा जाता है। जैसे- सावन ऋतु में कजली, हिंडोला, वसंत ऋतु में होली, बारह मासा और चैत में रोमांस और शृंगार के गीत। उसी प्रकार व्रतों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत ही व्रत संबंधी गीत हैं। जैसे- नाग पंचमी, बहुरा का व्रत, तीज आदि।

देवता संबंधी गीत- देवता संबंधी गीत विभिन्न देवताओं की स्तुति के लिए गाये जाते हैं। जैसे- राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, पार्वती आदि।

जाति संबंधी गीत- जाति विशेष के लोगों द्वारा गाए गए गीतों को जाति संबंधी गीत कहा जाता है। जैसे- अहीर, धोबी, दुसाध, तेली, नट, बनजारा, मुंडा, ओरांव, संताल आदि।

श्रम संबंधी गीत- दिन भर काम करते समय थकान दूर करने के लिए जो गीत गाए जाते हैं, वही श्रम संबंधी गीत हैं। जैसे- खेत में धान रोपते समय, चक्की चलाते समय, चर्खा चलाते समय, कोल्हू पेरते समय ये गीत गाए जाते हैं।

2. लोकगाथा :

लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं में से अन्यतम लोकप्रिय विधा है- 'लोकगाथा'। 'लोकगाथा' के लिए अंग्रेजी में 'बैलेड' शब्द का प्रयोग होता है। 'बैलेड' शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के 'वेल्पर' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- 'नृत्य करना'। लोकगाथा सम्पूर्ण लोक जीवन की सहज-सरल अभिव्यक्ति होती है। इसमें जन जीवन की प्रायः सभी अनुभूतियों जैसे- हर्ष-विषाद, उमंग-उत्साह, आशा-आकांक्षा, भय-आश्चर्य, वीर-करुण आदि की अभिव्यक्ति है।

परिभाषाएँ:

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने लोकगाथा की परिभाषाएँ डिना हैं।

गेटे के अनुसार- "जातीय गीतों एवं लोकगाथाओं का विशेष महत्व यह है कि उन्हें सीधे प्रकृति से नव्य प्रेरणा प्राप्त होती है। वे उन्मेषित नहीं की जाती वरन स्वतः एक रहस्य स्रोत से प्रवाहित होती हैं।"[23]

ग्रिम के अनुसार- "लोकगाथा लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। किसी भी देश के समस्त निवासी ही लोकगाथाओं की सामूहिक रचना करते हैं। आदिम अवस्था से ही प्रत्येक व्यक्ति सामूहिक रूप से नृत्य, संगीत, गीतों एवं लोकगाथाओं की रचना में लगे हुए हैं।"[24]

एफ.जे.चाइल्ड के अनुसार- "लोकगाथाओं में उसके रचयिता के व्यक्तित्व का सर्वथा अभाव रहता है। गाथा का प्रथम गायक लोकगाथा की सृष्टि कर जनता के हाथों में इन्हें समर्पित कर स्वयं अंतर्निहित हो जाता है। मौखिक परम्परा के कारण उसकी वाणी में अन्य

व्यक्तियों एवं समूहों की वाणी भी मिश्रित होती जाती है। यहाँ तक कि प्रथम रचना का रंगरूप ही बदल जाता है। उसमें नए अंश जोड़ दिए जाते हैं तथा पुराने अंश भी छोड़ दिए जाते हैं। घटनाओं में भी परिवर्तन कर दिया जाता है। इस प्रकार वह रचना व्यक्ति की न होकर सम्पूर्ण समाज की हो जाती है। आधुनिक समय में यह मत सर्वमान्य हो गया है। इस प्रकार लोकगाथाओं की यह धारा अक्षुण्ण रूप से सदैव प्रवाहित होती रहती है। उसका कभी अंत नहीं होता।"[25]

प्रोफेसर केट्रीज़ के मतानुसार- "'बैलेड' वह गीत है जो किसी कथा को कहता है अथवा दूसरी दृष्टि से विचार करने पर बैलेड वह कथा है जो गीतों में कहीं गई हो।"[26]

प्रो.एफ.बी.गुमेर के अनुसार- "लोकगाथा गाने के लिए लिखी गई ऐसी कविता है जो सामग्री की दृष्टि से प्रायः व्यक्ति शुन्य रहती है और संभवतः उद्भव की दृष्टि से सामुदायिक नृत्यों से सम्बद्ध रहती है, पर इसमें मौखिक परम्परा ही प्रधान है।"[27]

डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय के अनुसार- "लोक साहित्य के अंतर्गत ऐसे भी गीत गाये जाते हैं जो बहुत लंबे होते हैं तथा जिसमें कथावस्तु की ही प्रधानता होती हैं, इन गीतों को लोक गाथा के नाम से अभिहित किया गया है।"[28]

डॉ.सत्येंद्र के अनुसार- "लोकवार्ता की परम्परा प्राप्त भंडार में से साहित्य ने कभी कोई सामग्री ग्रहण की, कभी कोई। कभी भगवान विष्णु को महत्व दिया, तो कभी शिव को। समय बीतते-बीतते महत्व के बिन्दु बदलते गए, नए भावों के अनुरूप पुरानों को ढालने की चेष्टा की गयी। इन्द्र का जो महत्व हमें वेद में मिलता है वह पुराणों में नहीं मिलता। इस समय तक आते आते गाथा का स्वरूप अधिक पुष्ट होता प्रतीत होता है।"[29]

वर्गीकरण:

लोकगाथा को विविध भागों में वर्गीकरण किया गया है। जैसे-

प्रो. कीट्रीज ने लोकगाथाओं को दो भागों में विभक्त किया है-

1.चारण गाथाएँ: चारण लोग राजदरबारों में जाकर राजाओं को गाथाएँ सुनाते थे। चारणों द्वारा बनाए तथा गाए जाने के कारण इन गाथाओं के नाम 'चारण गाथाएँ' है।

2.परंपरागत गाथाएँ: जो गाथाएँ परंपरागत रूप से चली आ रही है और आज भी प्रचलित है वही परंपरागत गाथाएँ है।[30]

प्रो. गुमर ने लोकगाथाओं को छः श्रेणियों में विभक्त किया है-

1. प्राचीनतम गाथाएँ: प्राचीनतम गाथाओं में समस्यामूलक गाथाएँ मुख्य हैं। समस्यामूलक गाथाएँ सामूहिक रूप से गाई जाती थीं और उनका उत्तर भी गीतों के माध्यम से ही दिया जाता था।

2.कौटुंबिक गाथाएँ: इन गाथाओं में परिवार के विभिन्न व्यक्तियों के परस्परिक प्रेम का चित्रण होता है। एक परिवार के भाई-बहन, सास-बहू, ननद-भाभी, पति-पत्नी आदि के सम्बन्धों का सुंदर चित्रण मिलता है।

3.अलौकिक गाथाएँ: अलौकिक गाथाएँ अलौकिक घटनाओं और अंधविश्वासों से जुड़ी होती हैं। जैसे- मृत्यु गीत, जादू के द्वारा शरीर परिवर्तन आदि।

4.पौराणिक गाथाएँ: पौराणिक गाथाएँ किसी पौराणिक कथा या किंवदन्ती को लेकर लोगों में प्रचलित हैं।

5.सीमांत गाथाएँ: सीमांत गाथाओं में होने वाले युद्दों का वर्णन, स्थानीय इतिहास का वर्णन मिलता है। जैसे- बाबू कुंअर सिंह की लोकगाथा।

6.आरण्यक गाथाएँ: आरण्यक गाथाएँ वह गाथाएँ है जिसमें किसी न किसी डाकू के बारे होता है। डाकुओं का निवास जंगल में होने के कारण इन गाथाओं के नाम आरण्यक गाथाएँ पड़ा।

डॉ शंकर दयाल यादव ने तत्वों के आधार पर लोकगाथाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया है: 1.प्रेम गाथाएँ, 2.वीर गाथाएँ, 3.अद्भुत गाथाएँ।

डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकगाथाओं को तीन श्रेणियों में विभक्त किया है-

1.प्रेम कथात्मक गाथाएँ: प्रेम कथात्मक गाथाएँ वह गाथाएँ है जिसमें प्रेम कहानी का वर्णन मिलता है। जैसे- भोजपुरी के बिहूला की गाथा, भरथरी और गोपीचन्द की गाथा।

2.वीर कथात्मक गाथाएँ: वीर कथात्मक गाथाओं में वीर रस की उपस्थिति है। भोजपुरी के 'आल्हा' और 'लोरकी', राजस्थान में प्रचलित पाबू जी, तेजाजी और हरदौल की गाथाएँ वीर कथात्मक गाथाओं की उदाहरण है।

3.रोमांच कथात्मक गाथाएँ: रोमांच कथात्मक गाथाएँ अलौकिक, रोचक तथा रोमांचपूर्ण है। सोरठी की गाथा इसी श्रेणी की गाथा है।

3.लोक नाट्य:

लोक नाट्य शब्द परंपरा से उन नाट्य रूपों के लिए प्रचलित है, जो लोक में, लोक के मनोरंजन के लिए अभिनीत किए जाते हैं। लोकनाट्य का लोक जीवन से घनिष्ठ संबंध है। लोक से संबन्धित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्य के समय इनका अभिनय किया जाता है। लोकनाट्य की भाषा अत्यंत सरल होती है जिस कारण कोई भी व्यक्ति इसे आसानी से समझ

सकता है। भारत में नाट्य परंपरा अत्यंत प्राचीन है। आचार्य भरतमुनि ने लिखा है- 'नाट्य शास्त्र' भारत वर्ष में नाट्य रचना की अत्यंत प्राचीनता को इंगित करता है। नाटकों की उत्पत्ति के संबंध में भरत मुनि ने लिखा है कि- चूंकि शूद्र और स्त्रिओं के लिए वेदों का अध्ययन निषिद्ध था, अतः ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर 'नाट्य वेद' की सृष्टि की।

डॉ नगेंद्र के अनुसार "लोक नाट्य सामूहिक आवश्यकताओं और प्रेरणाओं के कारण निर्मित होने से लोक विश्वासों और लोकतत्वों को समेटे हुए चलता है और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।"[31]

डॉ श्याम परमार के अनुसार-"लोक नाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है जिसका संबंध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्वसाधारण के जीवन से हो और जो परंपरा से अपने-अपने क्षेत्र के जनसमुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो।"[32]

डॉ. श्रीराम शर्मा के मतानुसार "लोक धर्मी रूढ़ियों की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियों का वह नाट्य-रूप जो अपने क्षेत्र के लोकमानस को आह्लादित , उल्लासित एवं अनुप्राणित करता है, लोक नाट्य कहलाता है।"[33]

लोक नाट्य के कुछ विशेषताएँ हैं जो निम्न प्रकार के हैं-

कथानक- लोक नाट्य का कथानक प्रायः ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक होता है। धार्मिक कथावस्तु को लेकर भी अनेक नाटक किए जाते है। बंगाल के 'जात्र' और 'कीर्तन', केरल में प्रचलित 'यक्षगान', उत्तर प्रदेश की 'रामलीला', 'रासलीला' इसका उदाहरण है।

पात्र- लोक नाट्य के पात्र प्रायः पुरुष ही होते है। कुछ व्यवसायी नाटक मंडलियाँ साधारण जनता को आकृष्ट करने के लिए स्त्रियों का भी उपयोग करते हैं।

संवाद- लोक नाट्य के संवाद बहुत छोटे और सरल होते है। लंबे संवादों का प्रायः अभाव होता है। लंबे संवादों को सुनने के लिए लोगों के पास धैर्य नहीं होता इसलिए संवादों को संक्षिप्त किया जाता है।

भाषा- लोक नाट्य की भाषा बहुत ही सहज-सरज होती है, जो कोई भी इसे आसानी से समझ सकता है। जिस प्रदेश में लोकनाट्य का मंचन होता है , वहाँ पात्र उस प्रदेश की स्थानीय बोली का प्रयोग करते है।

रंग-मंच- लोक नाट्य खुले रंग मंच में होता है। किसी मंदिर के सामने ऊंचा चबूतरा या ऊंचा टीला ही रंगमंच के लिए प्रयोग किया जाता है। कुछ स्थानों में काठ के ऊंचे तख्तों को बिछाकर मंच तैयार किया जाता है। इन रंगमंचों पर पर्दे नहीं होते, अर्थात किसी भी दृश्य के समाप्ति पर कोई पर्दा नहीं गिरता।

भारत के विभिन्न स्थानों में प्रचलित लोक नाट्य कुछ इस प्रकार है- उत्तर प्रदेश में प्रचलित 'रामलीला', 'रासलीला', 'नौटंकी', मध्य प्रदेश में प्रचलित 'माच', राजस्थान में प्रचलित 'ख्याल', गुजरात में प्रचलित 'भवाई', महाराष्ट्र में प्रचलित 'तमाशा', 'ललित', 'गोंधल', बहुरूपिया', 'दशावतार' आदि।

4.लोक सुभाषित:

लोक सुभाषित के अंतर्गत लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ आदि आते हैं। लोकमानस अपने दैनिक जीवन में लोकोक्तियों, मुहावरों और पहेलियों का प्रयोग करते है। लोकोक्तियों एवं मुहावरें लोक जीवन की सुदीर्घ परंपरा की बाहक हैं। वास्तव में मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ लोक भाषा की रीढ़ है। इसलिए लोकभाषा में इनका प्रयोग सरलता एवं बहुलता से किया जाता है।

क) लोकोक्ति:

लोक साहित्य में लोकक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतः लोकोक्ति का अर्थ है- लोक की उक्ति या कथन। लोक के अनुभव की कसौटी पर सर्वमान्य रूप से खरा उतरने वाला कथन 'लोकोक्ति' है। लोकोक्तियों में मानव जीवन के युग-युग की अनुभूतियों का परिणाम और निरीक्षण करने की शक्ति अंतर्निहित है। लोकोक्ति लोक जीवन के सूक्ष्म पर्यवेक्षण से गृहीत ज्ञान का सूत्र है।

डॉ. विमलेश कांति का मत है कि- "लोकोक्ति मानव स्वभाव का दर्पण है, लोक वर्ग का सांसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुद्धि का दुर्लभ निदर्शन है। ये लोकोक्ति एक ग्रामीण के लिए पथ-प्रदर्शन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए उदबोधक और चेतावनी रूप में चिरकाल से विद्यमान हैं।"[34]

डॉ.एम.एस दक्षिणामूर्ति के मतानुसार- "कहावत सामान्यतः संक्षिप्त, सारगर्भित और प्रभावशाली उक्ति है, जिसमें जीवन की अनुभूतियाँ स्पष्टतः झलकती हैं और जो परिस्थिति की अनुकूलता को दृष्टि में रखकर प्रयोग में लायी जाती है।"[35]

डॉ. कन्हैयालाल सहल के शब्दों में- "अपने कथन की पुष्टि में, किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से, किसी बात को किसी की आड़ में कहने के अभिप्राय से अथवा किसी को उपालम्भ देने व किसी पर व्यंग्य कसने आदि के लिए अपने स्वतंत्र अर्थ रखने वाली जिस लोक प्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते हैं, उसे 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' नाम दिया जा सकता है।"[36]

डॉ श्याम परमार के अनुसार- "जीवन के विस्तृत प्रांगण में भिन्न-भिन्न अनुभव सर्वसाधारण जन के मानस को प्रभावित करके उसकी अभिव्यक्ति से संबन्धित अंग को उत्कर्ष प्रदान करते हैं। ये ही अनुभव लोकोक्तियाँ-कहावतें हैं।"[37]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकोक्तियों को पाँच भागों में विभक्त किया है: 1.स्थान संबंधी, 2.जाति संबंधी, 3.प्रकृति या कृषि संबंधी, 4.पशु-पक्षी संबंधी, 5.प्रकीर्ण।[38]

डॉ. कृष्णलाल 'हंस' ने लोकोक्तियों को तीन भागों में वर्गीकरण किया हैं: 1.स्वरूप के अनुसार, 2.स्थान के अनुसार, 3.विषय के आधार पर।[39]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लोकोक्तियाँ वह कथन है जिसमें युग-युग से संचित अनुभव को कम से कम शब्दों में प्रकट करने की शक्ति होती है। यह विशेष उक्ति पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

ख) मुहावरा:

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का है, जिसका शाब्दिक अर्थ है-आदी, अभ्यास या बातचीत। अंग्रेजी में 'मुहावरा' शब्द के लिए 'इडियम' शब्द का प्रयोग होता है। मुहावरों की उत्पत्ति के बारे में पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय लिखते है- "मनुष्य के कार्य क्षेत्र विस्तृत हैं। उसके मानसिक भाव भी अनंत हैं। घटना और कार्य-कारण परंपरा से जैसे असंख्य वाक्यों की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार मुहावरों की भी। अनेक अवसर ऐसे उपस्थित होते हैं जब मनुष्य अपने मन के भावों को कारण विशेष संकेत अथवा इंगित किंवा व्यंग द्वारा प्रकट करना चाहता है। कभी कई एक ऐसे भावों को थोड़े शब्दों में विवृत करने का उद्योग करता है, जिसके अधिक लंबे, चौड़े वाक्यों का जाल छिन्न करना उसे अभीष्ट होता है। प्रायः हास, परिहास, घृणा, आवेग, उत्साह आदि के अवसर पर उस प्रवृत्ति के अनुकूल वाक्य-योजना होती देखी जाती है। सामयिक अवस्था और परिस्थिति का भी वाक्य विन्यास पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है और इसी प्रकार के साधनों से मुहावरों का आविर्भाव होता है।"[40]

विद्वानों ने मुहावरों की परिभाषाएँ दी है-

डॉ ताराकान्त मिश्र लिखते हैं-" मुहावरा एक ऐसा अपूर्व वाक्यांश है, जिसकी सहायता से वाक्य अथवा भाषा को चुस्त और प्रभाव पूर्ण बनाया जाता है। यह श्रोता के हृदय पर सीधे चोट करता है। वर्षों के अनुभवों को आत्मसात करने वाले इस मुहावरे के प्रयोग से भाषा में एक अजब चटपटापन आ जाता है।"[41]

डॉ. दक्षिणामूर्ति के शब्दों में इस तथ्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है-" एक भाषा के मुहावरों को दूसरी भाषा में रूपांतरित नहीं कर सकते। शब्दशः अनुवाद करने पर अर्थ की हानि होती है, उनमें सार्वदेशीय, सार्वकालीन सत्य छिपा रहता है। एक भाषा में जो कहावत है, वह दूसरी भाषा में भी दिखाई पड़ सकती है। अभिव्यंजना से भिन्नता भले ही रहे।"[42]

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने मुहावरों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा हैं- "मनुष्य की दूसरी प्रवृत्ति गोपनीयता की होती है। वह किसी कारणवश अपने भावों को ऐसी भाषा में प्रकट करना चाहता है जो सर्वसाधारण के लिए सरलता पूर्वक बोधगम्य न हो। इसलिए एक ऐसी प्रतीकात्मक भाषा को आविष्कृत किया था जो गोपनीय होने के कारण जन साधारण की बुद्धि से परे थी।"[43]

मुहावरे हमेशा किसी वाक्य के अंगीभूत होकर रहता है। उदाहरण स्वरूप- 'आग लगाना' एक मुहावरा है। लेकिन इसकी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। जब तक यह किसी वाक्य में प्रयोग नहीं होता तब तक इसका कोई अर्थ नहीं होता। मुहावरा हमेशा अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होता है। अगर उसमें आए शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाये तो मुहावरे का अर्थ नहीं निकलता। जैसे- 'हाथ धोना' के स्थान पर हम 'हस्त प्रक्षालन' का प्रयोग करेंगे तो इसका अर्थ अलग होगा। अतः मुहावरे एक भाषा का प्राण है। मुहावरे के प्रयोग से वाक्यों में रोचकता आ जाती है और इसका प्रभाव सीधा पाठकों के ऊपर होता है।

ग) पहेलियाँ:

लोक सुभाषित की अन्यतम विधा है पहेली। 'पहेली' को संस्कृत में 'प्रहेलिका' कहा जाता है। अंग्रेजी में पहेली के लिए 'रिडिल' शब्द का प्रयोग होता है। पौराणिक काल से ही पहेलियों का प्रयोग चला आ रहा है। पहेली को लोक मानस के मनोरंजन और बुद्धि परीक्षा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है। भाषा संचार की दृष्टि से ये पूर्ण वाक्य होती है। भारत में पहेलिका की परंपरा अत्यंत प्राचीन है, भारतीय साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद को प्रहेलियों का वेद कहा जाता है। संस्कृत साहित्य में भी प्रहेलिकाओं का पर्याप्त प्रयोग मिलता है। हिंदी में अमीर खुसरों की 'मुकरियाँ' तथा सूरदास के 'कूटपद' पहेली के उत्कृष्ट निदर्शन है। लोक जीवन में पहेली बुद्धि परीक्षा का उत्तम साधन है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'भ्रमर गीत सार' की भूमिका मे कहा है- "बातचीत की प्रसंग में भी साधारणतया यह देखा जाता है कि जब हम यह नहीं चाहते की हमारी बात सभी लोग जान जाए तब हम ऐसी कथन पद्धति का आश्रय लेते हैं जो दुर्बोध है। यही पहेली बन जाती है। संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में रूपलंकार का सहारा लेकर जिन वस्तुओं का वर्णन हुआ है वे सब इसी कोटि में आएंगी। हिंदी के महाकवि सूरदास जी ने अनेक दृष्टिकूटों की रचना की है।"[44]

डॉ.फ्रेजर के अनुसार- "पहेलियों की रचना उस समय हुई होगी जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में किसी प्रकार की अड़चन पड़ती होगी।"[45]

कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार "मानव प्रवृत्ति रहस्यात्मक है। जब मनुष्य यह चाहता है कि उसके कथन को सर्वसाधारण न समझ सके तो वह ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो जन-साधारण की समझ से परे होती है। यही पहेली का रूप धरण करती है। मनुष्य की गोपनीय प्रवृत्ति ही पहेलियों की उत्पत्ति का कारण है।"[46]

रामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार-"पहेलियाँ बुद्धि पर शान चढ़ाने वाला यंत्र या स्मरण शक्ति द्वारा और वस्तु ज्ञान को बढ़ाने की कला है।"[47]

वर्गीकरण:

कृष्णदेव उपाध्याय ने पहेलियों को सात भागों में विभक्त किया है: i.खेती संबंधी पहेलियाँ, ii.भोज्य पदार्थ संबंधी पहेलियाँ, iii.घरेलू वस्तु संबंधी पहेलियाँ, iv.प्राणी संबंधी पहेलियाँ, v.प्रकृति संबंधी पहेलिया, vi.शरीर संबंधी पहेलियाँ, vii.प्रकीर्ण पहेलियाँ।

भारत की सामान्य जनता अपने दैनिक जीवन में अनेक लोकोक्तियों, मुहावरों और पहेलियों का प्रयोग करती है। इनसे उनकी वचन चातुरी का पता चलता है। लोक भाषा में प्रयुक्त लघुवार्ताएँ सामान्य ज्ञान एवं व्यवहारिक बुद्धि का भंडार होती हैं। मौलिक परंपरा से प्रकट ये लोकवार्ताएँ लोक के नैतिक जीवन की अभिव्यक्ति करने का सशक्त माध्यम है। इस प्रकार लोक साहित्य में इन लघुवार्ताओं का अन्यतम महत्व है।

5.लोककथा:

लोक साहित्य के क्षेत्र में लोक कथाओं का विशिष्ट स्थान है। लोक कथाएँ इतनी पुरानी है कि यह बता पाना मुश्किल है कि पहले लोक कथा किसने शुरू की थी। लोक कथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक स्थान से दूसरे में जाती रहती हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने से इन कथाओं का स्वरूप भी बदलता है। लोककथा के लिए अंग्रेज़ी में फोक टेल (Folk Tale) का प्रयोग होता है। लोककथाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समान रूप से आकर्षण का केंद्र रही हैं। ये लोक कथाएँ मानव जाति के विश्वास, परम्पराओं, प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार –"लोककथा शब्द मोटे तौर पर लोक-प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहारित होता रहा है, जो मौखिक या लिखित परंपरा से क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहे हैं।''[48]

डॉ. सत्येंद्र के अनुसार- "धर्म-गाथाओं और लोक-कथाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इनका मूल्य बहुत प्राचीन है और यह संभवतः उस समय की धुंधली रूपरेखा का युग था, जबकि विविध राष्ट्रों और देशों में विभाजित आर्यजन विभाजन से पूर्व शांति पूर्वक किसी एक स्थान पर रहते थे।"[49]

भारत वर्ष में प्राचीन काल से लोक कथाएँ प्रचलित है। प्राचीन आचार्यों ने लोक कथाओं को दो भागों विभक्त किया है। जैसे- i.कथा: कथा वह है जो कथाकार अपनी कल्पना से रचना रचना करता है।

ii. आख्यायिका: आख्यायिका किसी इतिहास संबंधी सत्य घटना पर आधारित होता है।

आनंदवर्द्धनाचार्य ने लोक कथाओं को तीन भागों में विभक्त किया है। जैसे- i.परि कथा, ii.सकल कथा और iii.खण्ड कथा।

परिकथा में केवल कहानी का काल-क्रमानुसार विवरण होता है। इसमें रस का कोई स्थान नहीं है। 'सकल कथा' में कहानी का आरंभ से अंत तक का विवरण होता है। 'खण्ड कथा' में किसी एक देश की प्रधानता होती है।

डॉ.सत्येंद्र ने लोककथाओं को आठ श्रेणियों में विभक्त किया है- i.गाथाएँ, ii.पशु-पक्षी संबंधी कथाएँ, iii.परी की कथाएँ, iv.विक्रम की कहानियाँ, v.बुझौवल संबंधी कहानियाँ, vi.निरीक्षण गर्भित कहानियाँ, vii.साधु-पीरों की कहानियाँ, viii.कारण निर्देशक कहानियाँ।[50]

डॉ.दिनेश चन्द्र सेन ने लोक कथा को चार भागों में विभक्त किया है-

i.रूप कथा: रूप कथाओं में किसी अमानवीय, अप्राकृतिक, अद्‌भुत वस्तु का वर्णन होता है। जैसे- भूत-प्रेत, देवता-दानव, दूत आदि।

ii.हास्य कथा: हास्य कथाएँ वह हैं जिसे सुनकर श्रोताओं में हास्य रस की उत्पत्ति होती है।

iii.व्रत कथा: व्रत कथाएँ किसी पर्व या त्योहार के दिन सुनायी जाती हैं।

iv.गीत कथा: गीत कथाएँ बच्चों को सुनायी जाती हैं। बच्चे को पालने के समय या सुलाने के समय ये कथाएँ सुनाई जाती है।[51]

कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक कथाओं को छः वर्गों में विभाजित किया है। जैसे- i.उपदेश कथा, ii.व्रत कथा, iii.प्रेम कथा, iv.मनोरंजन कथा, v.सामाजिक कथा और vi.पौराणिक कथा।[52]

उपदेश कथा में कल्याणकारी उपदेशों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण स्वरूप 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश'। इनमें पशु-पक्षियों द्वारा ऐसी कहानियाँ कहलवाई गई है जिनमें नीति या उपदेश अंतर्निहित है।

व्रत कथाओं के अंतर्गत धार्मिक क्रिया-कलापों एवं व्रतों के बारे में वर्णन होता है। प्रेम कथाओं में प्रेम की कहानियों के बारे में वर्णन होता है। माँ का पुत्र के प्रति प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, भाई-बहन का प्रेम आदि।

मनोरंजन कथा में मनोरंजन से सम्बंधित कहानियाँ वर्णित होती हैं। विशेष कर बालोकों के मनोरंजन को लक्ष्य करके ये कथाएँ कही जाती हैं।

सामाजिक कथा में समाज का वर्णन होता है। सामाजिक कथा में जनता के कष्ट, राजा का न्याय, बाल विवाह। बहु विवाह आदि का वर्णन होता है। पौराणिक कथा किसी पौराणिक घटना पर आधारित होती है। जैसे 'सत्य हरिश्चंद्र' तथा 'नल-दमयंती' की कथा।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार लोक कथाओं की विशेषताएँ: 1.प्रेम का अभिन्न पुट, 2.अश्लील शृंगार का अभाव, 3.मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में निरंतर साहचर्य, 4.मंगल कामना की भावना, 5.सुख और संयोग में कथाओं का अंत, 6.रहस्य, रोमांस एवं अलौकिकता की प्रधानता, 7.उत्सुकता की भावना, 8.वर्णन की संभावना।[53]

1.प्रेम का अभिन्न पुट :

अधिकांश लोक-कथाओं में प्रेम का अभिन्न पुट पाया जाता है। मानव जीवन से संबंध रखने वाली इन कहानियों में प्रेम का वर्णन होना नितांत स्वाभाविक है। इनमें कहीं भाई बहन का विशुद्ध प्रेम पाया जाता है, तो कहीं माता का अपनी पुत्री के प्रति अकृत्रिम वात्सल्य प्रेम इत्यादि अनेक प्रकार के भाव इन कहानियों में देखने को मिलते हैं। पत्नी का अपने पति के प्रति जिस पवित्र और दिव्य प्रेम का वर्णन इन कथाओं में मिलता है वह सचमुच ही अलौकिक और आदर्श है। हिंदी के प्रेम-मार्गी कवियों ने जिन आख्यानों को लेकर अपने काव्यों की रचना की है वे प्रायः सभी प्रेम की आधारशिला पर निर्मित रहें हैं।

2. अश्लीलता का अभाव:

लोक-कथाओं में प्रेम का पुट प्रचुर परिमाण होने पर भी इनमें अश्लीलता का अभाव पाया जाता है। कुत्सित प्रेम – जो आधुनिक कहानियों का प्रधान वर्ण्य विषय बन गया है, इनमें कही भी दृष्टिगोचर नहीं होता। काम-वासना या सौन्दर्य-लोभ से जनित प्रेम विशुद्ध कहलाने का अधिकारी नहीं है। यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं है कि ग्रामीणों द्वारा गढ़ी

गई इन कहानियों में कहीं भी ग्राम्यता नहीं आ पायी है। लोक कथाएँ अशिक्षित व्यक्तियों द्वारा बनाई हुई हैं, लेकिन उनमें कहीं भी अश्लील प्रेम का वर्णन नहीं है।

3. मूल प्रवृत्तियों से निरंतर सहचर्य:

इन कथाओं में मानव जीवन की मूल प्रवृत्तियों से निरंतर सहचर्य स्थापित किया गया है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों से हमारा अभिप्राय उन वस्तुओं से हैं जो मानव के जीवन में अन्वय-व्यतिरेक से अनुस्यूत हैं। सुख-दु:ख, आशा-निराशा, काम, क्रोध, मद, लोभ, आदि ऐसी ही प्रवृत्ति हैं जो सदा बनी रही हैं और सदा बनी रहेंगी। इन्हीं मूल प्रवृत्तियों का वर्णन इन कहानियों में उपलब्ध हैं। इनकी रचना जीवन की मूलभूत प्रवृत्तियों को लेकर की जाती है। इनमें जिन घटनाओं का वर्णन होता है वे शाश्वतीक सत्य ही प्रतीक होती हैं। 'मानिकचंद' की कथा ऐसी ही है, जिसमें भाग्य परिवर्तन के सत्य को बड़ी ही सुंदर रीति से दर्शाया गया है।

4. मंगल कामना की भावना:

मंगल कामना की भावना इन कहानियों की मुख्य विशेषता है। लोक कथाएँ कहते समय प्रत्येक कथा के अंत में सभी के लिए मंगल की कामना की जाती है। 'जिस समय का सुख आमुख पात्र को मिला, वैसा सुख प्रत्येक पात्र को मिले।' इस प्रकार का पद प्रत्येक कथा के अंत में कहा जाता है। प्रायः सभी कहानियाँ लोक मंगल की कामना से ही कही जाती हैं। इनमें व्याप्त व्यष्टि मंगल ही लोकमंगल है। लोक कथाकार अपनी कहानियों में आदर्श घटनाओं को कहकर संसार में मंगल की कामना करता है।

5. सुख और संयोग में कथाओं का अंत:

लोक-कथाओं का पर्यवसान दु:ख में नहीं सुख में होता है, वियोग में नहीं बल्कि संयोग में होता हैं। जन-जीवन संबंधी कहानियों में दु:ख,निराशा,हानि और विपत्तियों का प्रसंग न आयें हो ऐसी बात नहीं है। ऐसे प्रसंग इन कहानियों में उपलब्ध हैं और अधिक संख्या में ऐसी कहानियाँ पायी भी जाती हैं। परंतु कहानी के अंत में दु:ख-सुख के रूप में बदल जाता है, निराशा आशा में बादल जाती है और हानि के स्थान पर लाभ दिखने लगता है। कथा के नायक के मार्ग से आपदाएँ अपने आप हटती दिखाई पड़ती हैं और अंत में उसका पाठ प्रशस्त बन जाता है। भारतीय मनीषा दु:ख में जीवन के पर्यवसान की कल्पना नहीं कर सकती, इसलिए भारतीय नाटकों की भांति भारतीय लोक-कहानियाँ भी सुखांत हैं,दुखांत नहीं।

6. रहस्य,रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता:

कुछ कहानियों में अलौकिकता का अंश भी उपलब्ध होता है। रहस्य-रोमांच,भूत-प्रेत,पिशाच,दानव,परी आदि से संबंध रखने वाली वस्तुओं का वर्णन कहानियों का वर्ण्य विषय होता है। इनमें अद्‌भुत रस की प्रधानता रहती है। इनको सुनने में श्रोताओं की रोचकता बनी रहती है। राजाओं और वीरों के अलौकिक पराक्रम की कहानियाँ भी इसके अंतर्गत आती है। राजा चंद्रभानु की कथा इसका सुंदर उदाहरण है।

7.उत्सुकता की भावना:

कहानी का सबसे बड़ा गुण उत्सुकता की भावना को बनाए रखना है।जिस कहानी को सुनने के लिए श्रोतागण उत्सुक न दिखाई पड़ें तो यह समझ लेना चाहिए की उस कथा में कुछ

आकर्षण नहीं है। इस कसौटी पर कसकर ही लोक-कथाएँ खरी उतरती हैं। इनको सुनते समय कथानक के आगे वाले अंश को सुनने की लालसा बनी रहती है। यह बात विशेषता मुख्यतः रूप-कथाओं के विषय में पायी जाती है। श्रोताओं को ऐसी कथाओं को सुनने की उत्कंठा इतनी अधिक होती है कि बार-बार वे यहीं पूछते रहते है कि 'इसके बाद क्या हुआ?'

8. वर्णन की स्वाभाविकता: वर्णन की स्वाभाविकता कहानी कला की एक प्रधान विशेषता है जो ग्रामीण कथाओं में अधिक पायी जाती है। जो घटना जैसी है उसका उसी रूप में वर्णन लोक कथाओं का प्रधान लक्षण है। इनमें अतिशयोक्ति का पुट उपलब्ध नहीं होता।

लोक साहित्य ऐसी कड़ी है जिसके अध्ययन के बिना किसी भी देश, समाज या संस्कृति से परिचित हो पाना मुश्किल है। लोक साहित्य की पहेली, मुहावरे, लोकोक्तितियों, लोककथाओं, लोकगाथाओं, लोक गीतों आदि के रूप में प्रत्येक जाति अपनी जीवन पद्धति और उसकी प्रणालियों को आगे आने वाली पीढ़ी को सौपती है। इसीलिए इसमें प्राचीन युग का साहित्य, धर्म, दर्शन, विश्वास, संस्कार, कर्मकाण्ड आदि सभी के बारे में जाना जा सकता है। साथ ही लोक साहित्य के जरिए किसी भी देश व जाति की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा बौद्धिक उन्नति को समझा जा सकता है।

3.2 समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन

समकालीन हिंदी कहानी के प्रवर्तक डॉ. गंगा प्रसाद विमल को माना जाता है। कहानीकारों ने समकालीन परिस्थितिओं को कहानी का विषय बनाया है। यह कहानियाँ अपने समय के सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करती हैं। इन कहानियों में तत्कालीन परिवेश का चित्रण मिलता है।

समकालीन कहानी की व्याख्या करते हुए डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने कहा है- "समकालीन का अर्थ यह नहीं है कि दो व्यक्ति एक विशेष काल खंड में जी रहे हों और संयोग से रचनाशील भी हों...जिस समकालीन या समकालीनता की चर्चा सन् 60 के बाद की कहानी के सम्बंध में की जा रही है उसका शब्दार्थ की धारणा से सम्बंध नहीं है अपितु वह जीवन बोध के अधार पर समान-धर्मा रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।"[54]

मधुरेश ने समकालीन अर्थ बताते हुए कहा है- "समकालीन का अर्थ है समय के वैचारिक और रचनात्मक दबावों को झेलते हुए उनसे उत्पन्न तनावों और टकराहटों के बीच अपनी सृजनशीलता द्वार अपने होने को प्रमाणित करना।"[55]

समकालीन लेखक वही है जो अपने समय के सवालों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तथा वह उन सवालों से टकराते हैं जो परिस्थितियों के दबाव से उत्पन्न होते हैं। समकालीन कहानीकार मानव स्थितियों के यथार्थ से जुड़ता है और यथार्थ के द्वारा ही अपनी रचना की बुनावट करता है। इस सम्बंध में डॉ. अशोक भाटिया कहते हैं- "समकालीनता का सीधा सम्बंध समसामयिकता से है। वह रचना समकालीन कही जाएगी जो अपने समय के बोध को व्यक्त करे।"[56]

राजेंद्र यादव ने 'संकल्प: कथा दशक' में मत व्यक्त करते हुए लिखा है- "विशिष्ट रचना हमेशा अपने कथ्य और अनुभव के क्षेत्र में कुछ नया जोड़ती है और इसी प्रक्रिया में कहानी की संरचना बदलती है।"[57] समकालीन कहानी के साथ भी यह बात लागू होती है। 1965 के बाद देश में अलग तरह की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगी, जिस कारण कहानीकारों का अनुभव क्षेत्र और कहानी में परिवर्तन आया।

डॉ. पुष्पलाल सिन्ह भी समकालीन कहानी का आरम्भ 1965 से ही मानते है। वे कहते है- "आज तो 1965 ई. के बाद के समस्त कहानी लेखन चाहे वह किसी भी प्रवृत्ति से प्रचालित

है, वह समकालीन कहानी कही जाएगी।"[58] इनकी बातों से यह स्पष्ट होता है कि समकालीन कहानी में बहुत सी प्रवृत्तियों की कहानियाँ लिखी गयी हैं। जो कहानियाँ 1965 के बाद लिखी गयी है वह समकालीन कहानी होगी।

समकालीन कहानी के कथ्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। कहानी के कथ्य के विषय पर जो परिवर्तन आया है उस पर कमलेश्वर ने लिखा है- "अब कहानी के कथ्य पर कोई हावी नहीं है। इन नए कहानीकारों ने राजनीतिक वादों, परंपरा प्रेरित मन्तव्यों, घर-परिवार की सीमाओं, पति-पत्नी संबंधों आदि के सतही और सहज कथा बिंदुओं से मुक्ति पा ली है। काहनी कहीं भी किसी भी जगह कंफर्मिस्ट नहीं रह गया है। वह अपने सिवा किसी भी सत्ता का गुलाम नहीं है। न वह स्थापित मूल्यों की परवाह करती है और न मूल्यों की स्थापना को जरूरी मानती है।"[59] इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान रचना पहले की धारणाओं से मुक्त होकर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाती है। इस प्रकार 1965 ई. के बाद समकालीन कहानी का निरंतर विकास ही होता गया। इसका क्षेत्र इतना विस्तृत होता गया कि समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी महत्वपूर्ण पहलुओं का चित्रण समकालीन कहानी में होने लगा। देश की दुर्दशा के साथ-साथ समाज के हर तबके के लोगों का चित्रण भी इन कहानियों में मौजूद है। सामाजिक जीवन में विशेषकर सम्बंधों की त्रासदी और मानवीय जीवन की विडंबनाओं पर समकालीन कहानी अपना ध्यान केंद्रित करती है। इन कहानियों ने यथार्थ के उन पक्षों को उभारा है, जो सामाजिक, मानवीय स्थिति और अस्तित्व की बुनियादी समस्याओं से जुड़ा हुआ है। साथ ही दलित चेतना, आदिवासी चेतना, नारी अस्मिता से जुड़े विभिन्न आयामों को इन कहानियों ने स्वर दिया है। इन विभिन्न प्रवृत्तियों से सम्पन्न समकालीन हिंदी कहानी का विकास यात्रा निरंतर जारी है।

लोक साहित्य ऐसा साहित्य है जिसमें लोकमानस के हर्ष, उल्लास, सुख-दुख, राग-विराग की अभिव्यक्ति मिलती है। लोक साहित्य का हिंदी सहित्य की विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी कहानी साहित्य पर इनके प्रभाव को स्पष्ट करते हुए डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल लिखते है- "इसी उद्गम-सूत्र से हिंदी कहानियों की उत्पत्ति को सबसे अधिक प्रेरणा मिली और उस समय प्राय: समस्त हिंदी कहानीकारों की पहली मौलिक रचनाएँ इन्हीं लोक-कहानियों की प्रतिमाएँ थीं। उदाहरण स्वरूप- पहले हम 'सरस्वती' की अरम्भिक कहानियों को लेते हैं। लाला पार्वतीनंदन की कहानियाँ 'प्रेम का फुआरा', 'भूतों वाली हवेली', 'जिवानाग्नि', 'नरक', 'गुलजार' आदि स्पष्ट रूप से इन्हीं लोक-कहानियों की प्रेरणा-शक्ति से लिखी गयी है।"[60]

समकालीन हिंदी कहानियों में लोक जीवन का चित्रण व्यापक रूप से नहीं हुआ। कुछ कहानीकार है जिन्होंने लोक जीवन को अपनी कहानियों का हिस्सा बनाया। उन कहानीकारों में प्रमुख है:

लोक जीवन के चित्रण में हिंदी कहानी जगत के महत्वपूर्ण नाम है फणीश्वरनाथ रेणु। रेणु की कहानियों में लोक जीवन के ताजी और जीवंत अनुभूति का चित्रण हुआ है। उनकी कहानियाँ जैसे- 'ठेस', 'रसप्रिया', 'तीर्थोदक', 'पंचलाइट', 'सिरपंचमी का सगुन', 'तीसरी कसम', 'लाल पान की बेगम', 'पहलवान की ढोलक' आदि में लोक जीवन की छवि अंकित है।

मैत्रयी पुष्पा की कहानियों में लोक जीवन के विविध आयाम चित्रित है। उनकी कहानियों में लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, लोक संस्कार, उत्सव-त्योहार, रीति-रिवाज आदि का चित्रण हुआ है। उनकी 'चिन्हार', 'अपना-अपना आकाश', 'मन नांही दस बीस', 'सफर के बीच',

'केतेकी' आदि कहानियाँ लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके कहानी संग्रह 'ललमनियाँ' में भी लोक जीवन के आयामों का चित्रण हुआ है।

विवेकी राय की कहानियों में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल की पूरी संस्कृति का चित्रण हुआ है। उनकी 'तारीखे', 'अतिथि', 'आप लोग कौन है', 'खेल', 'दमरी की खोज', 'नौकर', 'बेटे की बिक्री', 'मांग', 'विद्रोह', 'परंतु' और 'दादा कह गये' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

रामदरश मिश्र की 'एक अधूरी कहानी' में एक भाग्यहीन ग्रामीण स्त्री के सामाजिक-पारिवारिक स्थितियों को चित्रित किया गया है।

रामधारी सिंह दिवाकर की 'तुलादंड', 'नये गाँव', 'नेताजी की हार', 'संक्रमण', 'एक और वापसी', 'अंतराल', 'अलग-अलग अपरिचय', 'परिंदे उड़ गये' आदि कहानियाँ।

मिथिलेश्वर की कहानियाँ समकालीन बिहार के गाँवों से सम्बंधित हैं। उनकी कहानियों में बिहार के गाँवों की निर्धनता, दबंग किसानों द्वारा कमजोर किसानों का शोषण, स्त्रियों का श्रम और यौन शोषण, सरकारी संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'एक और हत्या', 'बीच रास्ते में', 'शेष जिंदगी', 'नपुंसक', 'बंद रास्तों मे', 'देर तक' आदि कहानियों में इस स्थितियों का वर्णन हुआ है। 'विरासत', 'अभी भी' आदि कहानियों में अंधविश्वास का चित्रण हुआ है। 'सावित्री दीदी', 'शरीर से लाश तक', 'शांता नाम की एक लड़की' आदि कहानियों में साधारण स्त्री की पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियाँ ज्यादातर निम्न मध्यवर्ग और मुस्लिम परिवारों से जुड़ी हुई हैं। 'जन्मदिन', 'नन्ही नन्ही आँखें', 'शत्रु', 'तीर्थयात्रा', 'सीला', 'शीरमाल का टुकड़ा' आदि कहानियों में मुस्लिम समाज में वर्ग-भेद का चित्रण किया गया है।

बटरोही की कहानियाँ गढ़वाल के पहाड़ी जीवन से सम्बंधित हैं। उनकी 'संक्रमण', 'मुक्ति', 'दिवास्वप्न' आदि कहानियों में पहाड़ी जीवन के यथार्थ का चित्रण हुआ है।

पंकज बिष्ट मूलत: पहाड़ी क्षेत्र के निवासी हैं और वहाँ के जीवन का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है। 'सूली चढ़ा एक और मसीहा', 'हिमदंश', 'लाजवाब', 'हल' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

ऋचा शुक्ल की ज्यादातर कहानियों का परिवेश भोजपुर जिले का ग्रामीण क्षेत्र है। उन्हों अपनी कहानियों में इस क्षेत्र की जीवन शैली, विश्वास, मूल्य, जीवन संघर्ष आदि का चित्रण किया है। 'चक्षुदाह', 'सरबहारा', 'कदली के फूल' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

शैलेश मटियानी की 'लोकदेवता' कहानी में पहाड़ी जीवन और संस्कृति का अंकन हुआ है।

समकालीन कहानी में लोक जीवन दूर होता दिखाई देता है। भारतीय जीवन मूल्यों में परिवर्तन आने लगा है। लोग शहरों की ओर गति करने लगे हैं। धीरे-धीरे गाँवों में शहर बसने लगे हैं और लोगों की जीवन शैली बदलने लगी है।

जनसंख्या की दृष्टि से मध्यवर्ग का आकार बढ़ गया और वे अधिकतर लोग नगरवासी हो गए। उद्योग धंधों में वृद्धि और सफेदपोश नौकरियों के विस्तार के कारण उसकी पहचान

निम्न वर्ग से बिल्कुल भिन्न हो गयी। उसमें शिक्षा का प्रतिशत बढ़ गया। उच्च शिक्षा पर तो उसका लगभग वर्चस्व ही हो गया। स्त्रियों की साक्षरता और उच्च शिक्षा में, ग्रामीण समाज और निम्न वर्ग की तुलना में अप्रत्याशित वृद्धि हो गयी। उसका रहन-सहन और वेशभूषा भी निम्न वर्ग और ग्रामीण समाज से अलग हो गयी। उच्च शिक्षा में वृद्धि और पश्चिमी जीवन पद्धति के विस्तार के फलस्वरूप उसकी सोच और मानसिकता में भी बदलाव आ गया। भारतीय जीवन मूल्य टूटने लगे। परम्परागत जीवन दृष्टि बदलने लगी और कहीं-कहीं तो परम्परागत मूल्यों के लिये भारी चुनौती भी सिद्ध होने लगी। एक महत्वपूर्ण परिघटना यह सामने आयी कि कहानीकार (कवि और अन्य लेखक भी) नगर वासी हो गये। ग्रामवासी साहित्यकार अंगुलियों पर परिगणनीय हो गये। अधिकतर पाठक भी नगरों या कस्बों से जुड़ गये। इसके फलस्वरूप साहित्य की प्रकृति में भी भारी बदलाव आया। इसका प्रमाण हम हिंदी कहानी में देखते हैं।

संदर्भ:

1. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.20

2. वही, पृ. 25

3. लोक साहित्य, धीरेन्द्र वर्मा, पृ.85

4. हिंदी भक्ति साहित्य में लोक तत्त्व, डॉ रबीन्द्र भ्रमर, पृ. 5

5. लोक साहित्यः सिद्धान्त और प्रयोग, श्रीराम शर्मा, पृ. 41

6. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 60

7. लोक साहित्य विज्ञान, सत्येन्द्र, पृ. 83

8. हिंदी भक्ति साहित्य में लोक तत्त्व, डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, पृ.6

9. लोक साहित्यः सिद्धान्त और प्रयोग, श्रीराम शर्मा, पृ.39

10. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.266

11.लोक साहित्य: सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमान, अभिमन्यु सिंह, पृ.60

12.वही, पृ.60

13. लोक साहित्य, विद्या चौहान, पृ.43

14. लोक साहित्य: सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमान, अभिमन्यु सिंह (उद्धृत), पृ.59

15.वही, पृ.60

16. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका 14 वां संस्करण, पृ.347

17.वही, पृ.59

18.वही, पृ.61

19. कविता कौमुदी- भाग 5, रामनरेश त्रिपाठी, पृ. 45

20. भारतीय लोक साहित्य, श्याम परमार, पृ. 65

21. राजस्थानी लोक गीत, सूर्यकरण पारीक, पृ. 25

22. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 55

23. लोकसाहित्य, प्रवेश कुमार, पृ.181

24. वही, पृ.182

25. वही, पृ.182

26. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.61

27. लोक साहित्य: सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमान, अभिमन्यु सिंह, पृ.27

28. हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास, सं.डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.57

29.भारतीय कथा परम्परा, राधावल्लभ त्रिपाठी, पृ.166-67

30. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, डॉ शंकारलाल यादव, पृ.269

31. भारतीय नाट्य साहित्य, सं. डॉ. नगेंद्र, पृ. 54

32. लोकधर्मी नाट्य परम्परा, डॉ श्याम परमार, पृ.81

33. लोक साहित्यः सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ श्रीराम शर्मा, पृ.129

34. भारतेन्दु युगीन कविता में लोक तत्त्व, डॉ विमलेश कान्ति, पृ. 200

35. हिंदी और तेलुगू का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ एस एस दक्षिणामूर्ति, पृ.23

36. राजस्थानी कहावतें: एक अध्ययन, डॉ. कन्हैयालाल सहल, पृ. 20

37. भारतीय लोक साहित्य, डॉ श्याम परमार, पृ.184

38. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.156

39. निमाडी और उसका साहित्य, डॉ. कृष्णलाल हस, पृ.363

40. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.162

41. मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन, डॉ ताराकान्त मिश्र, पृ.363

42. हिंदी और तेलुगू कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ दक्षिणामूर्ति, पृ. 41

43. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 299

44. वही, पृ.168

45.वही, पृ.167

46. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.167

47. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.299

48.लोक कथाए क्या बताती है आज कल की लोक कथा, अंक-1, पृ.12

49.ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन (प्रथम संस्करण), सत्येंद्र (उद्धृत), पृ.418

50.ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, सत्येंद्र, पृ.83

51.फोक लिटरेचर ऑफ बंगाल, डॉ. दिनेश चंद्र सेन, पृ. 105

52. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.131

53. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.134

54. स्त्री चिंतन चुनौतियां, रेखा कस्तवार (उद्धृत), पृ.16

55. हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, पृ.176

56. समकालीन हिंदी कहानी का इतिहास, डॉ. अशोक भाटिया, पृ.12

57. संकल्प कथा दशक (भूमिका), राजेंद्र यादव

58. समकालीन हिंदी कहानी, पुष्पलाल सिंह, पृ.32

59. हिंदी कहानी: पहचान और परख, इंद्रनाथ मदान (उद्धृत), पृ.46

60. हिंदी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास, लक्ष्मीनारायणलाल, पृ.304

चतुर्थ अध्याय

चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन

4.1 लोक जीवन का सामाजिक पक्ष:

लोक साहित्य में सामाजिक पक्ष का बहुत बड़ा महत्व है। लोक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं- रीति-रिवाज, मान्यताएँ, प्रथाएँ, संस्कारों की उत्पत्ति समाज में ही होती है। समाज के विभिन्न प्रमुख पहलुओं का चित्रण चरण सिंह पथिक की कहानियों में वर्णित हैं: 1.जाति व्यवस्था, 2.पारिवारिक जीवन, 3.नारी विषयक धारणा, 4.सामाजिक लोक विश्वास एवं परम्पराएँ।

जाति व्यवस्था- चरण सिंह पथिक की कहानियों में जाति व्यवस्था का यथार्थ वर्णन मिलता है। **'बात यह नहीं है'** कहानी संग्रह के चार कहानियों में जाति व्यवस्था का चित्रण हुआ हैं। वे कहानियाँ हैं- 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया', 'बाँध टूट गया', 'दंगल', और 'बात यह नहीं है'।

'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया' कहानी मोहरसिंह नामक एक शिक्षक की कहानी है। कहानीकार ने मोहरसिंह के जरिए गाँव में होने वाले भ्रष्टाचार के साथ-साथ उच्च जाति के लोगों का निम्न जाति के लोगों प्रति भेद भाव को दिखाया है। मोहरसिंह के गाँव में सरकार की तरफ से गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों के लिए एक योजना आयी। जिसमें ऐसे लोगों का चयन करना था जिसकी वार्षिक आय बीस हजार रुपये से कम है, जिसके पास पक्का मकान, ट्रेक्टर या अन्य कोई वाहन नहीं है, जिसके पास दो हेक्टर से ज्यादा जमीन नहीं है और जिसकी मासिक आय पंद्रह सौ रुपए से ज्यादा नहीं है। लोगों को चयनित करने का गुरु दायित्व मोहरसिंह को दिया गया। मोहरसिंह ने बड़ी ही ईमानदारी के साथ यह काम

किया और एक सूची निकाली। उस सूची में केवल गरीब और निम्न जाति के लोगों के नाम ही शामिल थे। यह बात गाँव के प्रधान जी को पसंद नहीं आया क्योंकि प्रधान जी सूची बनाने के समय मोहरसिंह के पास जाकर एक सूची दे आए थे जिसमें सिर्फ उच्च जाति के लोगों का नाम था, जो लोग आर्थिक रूप से सबल थे। उन्होंने जब सूची में अपने दिए हुए एक भी नाम नहीं देखा तब उन्होंने मोहरसिंह को फसाने के लिए जाल बिछाया। प्रधान अकेला नहीं था। उसके साथ गाँव के सरपंच, पंचायत समिति के सदस्य भी मिले हुए थे। वह पंचायत समिति के सदस्य किंतुलाल से कहता है- "सब कोली, चमार, खटीक, धोबी भर दिए इसमें तो...! हमारा एक भी आदमी नहीं...! ऐसा कर किंतुलाल, सरपंच साब से पूछ-पूछकर सौ ऐसे आदमियों की लिस्ट बना दो जिनके पास पक्का मकान हो या ट्रेक्टर हो या मोटर साइकिल हो या चालीस-पचास बीघा जमीन हो। उन सबके नाम दो। मैं खुद जाकर ग्रामसभा के दिन कलेक्टर साब को लिखित में शिकायत कर के आऊँगा। कलेक्टर साब बहुत सख्त हैं। तुरंत एक्शन लेंगे। यह लिस्ट भी खारिज कर देंगे। मास्टर भी सस्पेंड ही समझो। साक्षरता वाला किस्सा भी छेड़ दूंगा। फिर हम किसी और मास्टर से अपने मन-मुताबिक लिस्ट बनवा लेंगे।"[1] प्रधान जो सोचा था वही हुआ। कलेक्टर बहुत सख्त था। कलेक्टर ने जब वह सूची देखा तो मोहरसिंह को उसने सस्पेंड कर दिया गया।

'बांध टूट गया' कहानी में जातिभेद के साथ-साथ किसान जीवन के समस्याओं का भी यथार्थ चित्रण किया गया है। पथिक ने भरोसी नामक एक पात्र के जरिए उच्च जाति के पटेलों द्वारा निम्न जाति के किसानों पर किए गए अत्याचार का वर्णन किया है। भरोसी के गाँव के धनजी पटेल निम्न जाति के किसानों को वर्षों से शोषण करता आ रहा है। धनजी पटेल गाँव के हर किसान का जमीन हड़प लेता है। जैसे- गाँव के गोपाल डोम, बच्चू दरोगा, किशोरी कोली,

गंगाराम खटीक आदि की दो-दो, तीन-तीन बीघा जमीन वह हड़प चुका था। अगर कोई प्रतिरोध करने की कोशिश करता है तब उसको अधमरा बना देता है। धनजी पटेल की आखें भरोसी के पाँच बीघा जमीन के ऊपर थी। धनजी पटेल सिर्फ किसानों को ही शोषण नहीं करता बल्कि उनकी पत्नियों को भी नहीं छोड़ता। एक बार धनजी पटेल ने भरोसी के इर्द-गिर्द जाल बिछाई। पटेल ने भरोसी से जमीन बेचने को कहा लेकिन भरोसी डटा रहा। उसने पटेल से कहा-

"पटेल, जमीन चाहे बंजर हो जाए। मगर बेचूंगा नहीं! जमीन तो माँ है। माँ को कौन पाजी बेचेगा?"

"तो जमीन के बदले जमीन ले ले।"

"ना, काहे को लूँ! गरज क्या है।"

"तो फिर खेत ही बंजर न रखे तो मेरा नाम धनजी नहीं!"

"तेरी पीठ पे लम्बा रस्सा धनजी पटेल! कर लेना तू जो करना चाहे।"[2]

यह घटना होने की बाद धनजी पटेल ने पंचायत के सामने भरोसी को धमकी दी, यहाँ तक कि उसको गाँव से निकालने के भी बातें होने लगी। गाँव में पटेलों का अलग ही सत्ता है। पटेलों के आगे न सरपंच टिकता है और न ही प्रधान। गाँव की राजनीति पटलों की ही इर्द-गिर्द घूमती है। पटेल जिसे चाहे चुनाव जितवा देता है और जिसे चाहे उसकी जमानत जब्त करवा दे। जब भरोसी को गाँव से निकालने की बातें चली उसी समय राधे पटेल आ पहुंचे। राधे पटेल ने भरोसी को बचा लिया। भरोसी को राधे पटेल अच्छा लाग्ने लगा लेकिन वह भी धनजी

पटेल जैसा ही निकला। राधे पटेल की आँखें भी भरोसी के जमीन पर था। एक दिन खेत पर उसने भरोसी के कहा-

“यार भरोसी! यह जमीन तू मुझे बेच दे!”

“सरपंच साब आपके पास क्या कमी है! मैं तो गरीब आदमी हूँ। इस जमीन से परिवार का पेट भर जाता है बस। कैसे बेच दूँ इसे!”

“मैं पूरे तीन लाख दूंगा! इस पाँच बीघे के।”

“रहने दो सरपंच साब मुझ गरीब को बख्श दो।”

“चार लाख दूंगा।”

“सरपंच साब! चार लाख तो क्या चार करोड़ दे, तो भी नहीं बेंचू!”

“अबे, चुनमंगा जात। उस दिन पंचायत में मैं नहीं होता तो धनजी पटेल तुम्हें गाँव से बाहर निकाल देता। समझो मादर....हरामी।”[3] यह घटना होने के बाद भरोसी के खेतों में पानी आना बंद हो गया। दो साल तक उसकी खेत बंजर रही। धनजी पटेल और राधे पटेल ने गाँव के बांध का पानी भरोसी के खेतों तक आने से रोक लगाई और खेतों पर आते-जाते उसको भद्दी गालियाँ देते रहे। भरोसी गाँव के बांध के ऊपर जाकर बैठा और उसी रात गाँव का बांध टूट गया। सुबह धनजी पटेल की खेत में बांध के पानी की तांडव लीला सबने देखा। उस साल के बाद किसी की फसल नहीं सूखी। किसी को पता नहीं चला बांध कैसे टूटा और उसी दिन से भरोसी भी लापता हो गया।

‘दंगल’ कहानी मच्छीपुरा गाँव के दंगल से शुरू होती है। यह दंगल है संगीत का दंगल। इस दंगल में गाँव के उच्च-निम्न जाति के लोग मिलकर दंगल करते थे। दंगल का गवैया है पीरू

तेली, बाबु उस्ताद की ढोलक, रमजानी सक्का का हारमोनियम, प्रह्लाद कुम्हार और काडुनाथ के मंजीरे। ठाकुर नत्थुसिंह के लटके-झटके, फत्तू पंडित की भाव-भंगिमा और साहबसिंह की लचकती कमर श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। पंडित दुर्गालाल की रचना जब कीर्तनों में ढलकर पीरू तेली की आवाज पाती है तब पीरू अकेले ही दंगल को फतह कर लेता है। जब पीरू तेली दोहा देने के लिए आलाप लेता है तो सन्नाटा हो जाता है। हवा जैसे थम जाती है। श्रोतागण वाह-वाह कर उठते। अन्य साल की तरह इस साल दंगल की तैयारी नहीं हो रही है। पीरू तेली, रमजानी सकका और काजोड्या फकीर दो-तीन दिन बुलाने पर भी नहीं आए। एक शाम पूरी जोठ दंगल की तैयारी के लिए बैठे, नहीं थे तो सिर्फ पीरू तेली, रमजानी सक्का, काजोड्या फकीर, बाबू उस्ताद आदि। सब लोग बहुत गुस्सा हो गए। बलबीरसिंह ने कहा- "ऐसे कब तक ठाले बैठे रहेंगे....? रग्गी तो चालू करो। वृन्दावन में एक बंदरिया रूठ जाने से वृन्दावन सूना नहीं हो जाता।"[4] नत्थुसिंह पीरू तेली को समझाने उसके घर गया। गाँव में सिर्फ एक घर डोम का और तीन घर मुसलमानों के- एक पीरू तेली, एक रमज़ानी सकका और एक कजोड्या फकीर। जब नत्थुसिंह ने पीरू से असल कारण पूछा तब पीरू ने कहा- "हम तो पाई है। गाँव में हमारा है भी क्या...! ये मिट्टी, ये हवा, ये पानी और हमारा ये पसीना सब का सब तुम्हारा है। सलावद के दंगल में श्रोताओं ने जबर्दस्ती प्यार से मुझे नोटों की माला पहनाकर और फेंटा बंधवाकर गोद में उठा लिया तो- मैं, रमजानी, कजोड्या ठाकुर नथ्थुसिंह और पंडित की नजरों में 'आई-पाई' हो गए। कटवे और मुल्ले हो गए! हमें तो आज तक एहसास ही नहीं था कि हम और हमारा धर्म अलग है। कीर्तनों की बात रहने भी दूँ तो आप तो खुद मौजूद थे मवासी वाली पंचायत में। मैं भी इस गाँव का वाशिंदा हूँ। मुझे भी बोलने का हक है और था। लेकिन आपके इसी पंडित फत्तू ने मुझे झिड़क कर बैठा दिया था कि 'आई-पाई' कब से

इस गाँव में पंच-पंचायत करने लगे हैं। पूरा गाँव कुछ नहीं बोला। आपने पटेल होते हुए भी उसे टोका तक नहीं...?"[5] रमजानी सक्का ने बोला- "हमारे पुरखा इसी मिट्टी में, इसी गाँव कि हवा में अंतिम साँस लेते हुए दफन हुए हैं। हमारा मरना-जीना गाँव के साथ रहा है और एक ये लोग है कि हमें जबरदस्ती आई-पाई कहकर हलकान किए देते हैं। लोग सुनकर हँसते हैं। ऐसे कैसे जोठ में रहकर हम गा-बाजा सकते है?"[6] नत्थुसिंह के समझाने के बाद भी उन लोगों ने बात नहीं सुनी। पीरू तेली अपना एक अलग जोठ बनाया। इस कहानी के जरिए पथिक ने यह चित्रित किया है कि जहाँ पहले गाँव में अलग-अलग सम्प्रदाय, जाति एवं वर्ग के लोग एक साथ भाईचारा के साथ दंगल करते थे वही अब साम्प्रदायिकता और जातिवाद ने सबको अलग कर दिया। साथ ही साथ निम्न जाति के लोगों के दुखों को भी उकेरा है। सिर्फ निम्न जाति के होने के कारण उनके जीत को प्रशंसा नहीं मिलती, यहाँ तक की उनको बोलने का भी अधिकार नहीं है। साम्प्रदायिकता किस प्रकार धीरे-धीरे, बिना शोर किए गाँव तक पहुँच गयी है इसकी उपलब्धि किसी को नहीं है। साम्प्रदायिकता वर्तमान में हर जगह पनप रही है और यही बात 'दंगल' कहानी कहती है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के चार कहानियों में जाति व्यवस्था का चित्रण मिलता हैं। जैसे- 'कलुआ', 'मूंछे', 'चौकी' और 'प्रधान की कुतिया'।

'मूंछे' कहानी एक फौजी की कहानी है जो जाटव जाति का है। फौजी का नाम है रामराज। रामराज के जरिए लेखक ने राजस्थान में हुए गूजरों और मीणा के आंदोलन की ओर इशारा किया है। रामराज को फौज में भर्ती हुए तीन साल हो गए थे। सालभर से उसने अपनी पत्नी का मुंह नहीं देखा था इसलिए 15 दिन की कैज्वल छुट्टी लेकर वह घर आया था। उसे अपनी पत्नी को लाने पत्नी के घर जाना था। लेकिन पूरे गाँव में चक्का जाम था। गूजर एस.टी.

वर्ग में आरक्षण की माँग को लेकर जगह-जगह चक्का जाम किए हुए थे। दूसरी तरफ मीणा अपने कोटे को किसी भी कीमत पर बँटने नहीं देने की कसम खाए हुए थे। दोनों जातियों के नेता अपनी-अपनी जाति में खुद को सर्वमान्य मसीहा मनवाने के चक्कर में भड़काऊ बयान देने और लामबंद होने में मशगूल थे। रामराज को इस मामले में पता तो था लेकिन वह फिर भी जाने के लिए तैयार हो गया। रामराज की माँ डर गयी और जाने के लिए मना किया। तब उसने अपने माँ को समझाया- "हमसे गूजर-मीणाओं को क्या लेना-देना...? हम एस.सी. में हैं, जाटव हैं।"[7] तब उसकी माँ ने कहा-"तेरी ये छोटी छोटी छल्लेदार मूंछे और ये फौजी कट बाल...? कहीं गुजर तुझे मीणा और मीणा तुझे गुजर समझ बैठे तो...?"[8] माँ की शंका सच बन गई। रास्ते में उसको खतरनाक भीड़ दिखाई दिया जहाँ सत्तर साल के बूढ़े से लेकर दस साल के बच्चे तक को हाथ में कुछ न कुछ ख़तरनाक हथियार मौजूद था। भीड़ में से ही किसी ने उसको अपना जात पूछा और उसने जवाब में जाटव कहा। उसकी छोटी छोटी मूँछें और फौजी कटिंग बाल देखकर किसी ने उसका विश्वास नहीं किया। उलटा कहने लगे कि चमारों के पुरखे भी गए हैं कभी फौज में...? उन लोगों ने उसे गुजर समझकर बेरहमी से मार-पीट की। रामराज जैसे-तैसे अपनी जान बचाते हुए आगे बढ़ा लेकिन वह बच नहीं पाया। कुछ दूर जाने के बाद मीणाओं के झुंड ने उसे घेर लिया। फिर से उसे जात पूछा गया। इसबार उसने झूठ बोला और खुद को मीणा बताया लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसको गोत्र पूछा जाएगा। वह गोत्र नहीं बता पाया और फिर से उस पर लात-घूंसे बरसने लगे। उसकी मूंछे काट दी गयी। आरक्षण माँग कि इस आक्रोश में रामराज ऐसे ही पिसा गया और अधमरी अवस्था में एक पेड़ के नीचे पड़ा रहा।

'चौकी' कहानी में ग्राम्य जीवन के उस चित्र का चित्रण मिलता है जहाँ उच-नीच, जात-पात, भ्रष्टाचार भरा हुआ था। कहानी का मुख्य पात्र बाबु जो भंगी जाति का है। वह एक

चौकी में झाड़ू लगाने का काम करता था। चौकी पर रहते रहते उसके स्वभाव पर बदलाव आने लगा। जो लोग पहले उसके हाथों से पानी तक नहीं पीते थे वह अब उसके हाथों का बना खाना खाते थे। बाबु का साहस और आत्मविश्वास बढ़ने लगा था। बाबु के गाँव के भंगियों को किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं होती थी। कोई भी सरकारी योजना भंगियों तक नहीं पहुँच पाता। गाँव के सरपंच, सचिव और पटवारी यही कहकर बात को टाल देते थे- "भंगियों को जरूरत क्या है? माँगकर खाओ और मौज करो।"[9]

एक बार बाबू के गाँव में कलेक्टार, एस.पी., एस.डी.एम., तहसीलदार, बी.डी.ओ. और रसद अधिकारी आए। लोगों से जब समस्या पूछा गया तब बाबू खड़ा हुआ और बोलने लगा- "हुजूर, सरकार और प्रशासन की तो क्या कमी बताऊँ! कमी तो ग्राम पंचायत के कर्ता-धर्ताओं की है। यहाँ गरीबों की कोई सुनवाई नहीं करता। हम चार घर हरिजनों के आज तक काम से बंचित हैं। हमारे पास बी.पी.एल. होने के कारण मिलने वाला गेहूँ पिछले दो साल से नहीं मिला है। आप इसकी जाँच कर सकते हैं। हमें न कुओं से पानी भरने दिया जाता है और न ही टैंकर से....हमारे बच्चे खाय पानी पी-पीकर बीमार हो गए हैं। हमारी किसी भाई से कोई जाती-दुश्मनी नहीं है। हम तो कम चाहते हैं। अपना हक चाहते हैं। पीने के लिए मीठा पानी चाहते हैं बस!"[10] बाबू की बातें सुनने के बाद कलेक्टर ने रसद अधिकारी और एस.डी.एम. को ठीक से जाँच कर रिपोर्ट देने का आदेश दिया। हरिजनों के साथ जीतने भी गरीब लोग काम से वंचित थे उन लोगों को काम मिलने लगा। हरिजन मुहल्ले में पीने की पानी का व्यवस्था किया गया। कलेक्टर ने ग्राम सचिव और पटवारी को निलम्बित कर दिया। तहसीलदार का तबादला कर दिया और साथ ही राशन डीलर का लाइसेन्स छह महीने के लिए निलम्बित किया गया। हर जगह बाबू की तारीफ होने लगी लेकिन तहसीलदार, सरपंच, सचिव और रासन डीलर बाबू की जान के दुश्मन बन चुके थे। एक रात बाबू जब चौकी से लौट रहा था तो रास्ते में चार

नाकाबपोश ने उसे बेरहमी से मारा। वह तीन दिन तक बेहोश था। सब जानते थे कि वह चार नकाबपोश किसके आदमी थे लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा, यहाँ तक कि चौकी के पुलिस ने भी नहीं। एक दिन जब बाबू चौकी पर गया तो वहाँ सरपंच, राशन डीलर, थानेदार के साथ बैठकर दारू पी रहे थे। बाबू ने बोला की अपराधी तो पुलिस के मेहमान हो चुके हैं। बाबू के मुँह से यह बाट सुनकर सब लोग गरम हो गए और बाबू को जलील करने के लिए उसे नंगा कर दिया गया और साथ ही साथ उसको जोरजबरदस्त पिलाया गया। अगले दिन सुबह बाबू ने मुहल्ले में सबको इकट्ठा करके कहा- "ऐसी ज़िंदगी से तो मौत बेहतर। न्याय और हक मांगेंगे तो एक दिन सबका यही हाल होगा।"[11] मुहल्ले के सभी लोग कलेक्टर के सामने आमरण-अनशन के लिए बैठ चुके थे। दो दिन तक उनको किसी ने पूछा तक नहीं और जब वह एस.पी. और कलेक्टर से मिलना चाह रहे थे उन्हें मिलने नहीं दिया गया। तीसरे दिन निमोनिया से पीड़ित बच्चे के चित्र के साथ अखबारों में छपा- 'अमुक गाँव के हरिजनों पर जुल्म। सभी ने आतंक से गाँव छोड़ा।' खबर पढ़कर कलेक्टर और एस.पी. ने बाबू से बात की और बाबू ने साफ साफ कह दिया- "जब तक सरपंच, राशन डीलर, थानेदार और मुंशी को वाजिब सजा नहीं मिलती, वे यही मरेंगे।"[12] प्रशासन समझौता करना चाहता था लेकिन बाबू और अन्य लोग अपने बात पर अटल रहे। अंत में सरपंच और राशन डीलर को गिरफ्तार करने का आदेश दिया गया और साथ ही साथ मुंशी और थानेदार को निलम्बित किया गया।

'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता' कहानी संग्रह के 'मुर्गा' कहानी के अंतर्गत जाति व्यवस्था का चित्रण मिलता है। 'मुर्गा' कहानी अध्यापक गंगाराम की कहानी है। गंगाराम को मामूली सी बात पर ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने एपीओ बनाकर जिला शिक्षा अधिकारी ऑफिस भेज दिया। शिक्षा अधिकारी के बारे में गंगाराम ने सुना था की वह बहुत खुंखार किस्म का आदमी है। गंगाराम उनसे बात करने के लिए भी डर रहा था। पहली बार उसकी 20 साल

की साफ-सुथरी अध्यापकी पर यह ब्रजपात था। जब गंगाराम अधिकारी के पास जाकर अपनी बात बताने लगा तब उन्होंने कहा "आप तो आज के हर अखबार में छा रहे हो माट'साब....! हर अख़बार में आपकी खबर है। आपने शिक्षा विभाग का नाम रोशन किया है।"[13] अधिकारी ने दिनेश पंडित को अख़बार पढ़ने के लिए कहा। दिनेश पंडित ने अपनी भड़ास निकालते हुए कहा- "सर एससी/एसटी वालों ने हर डिपार्टमेन्ट की बैंड बाजा रखी है। रिज़र्वेशन से नौकरी मिल जाती है। काम के नाम पर गुलसप्पा। कुछ कहो तो एससी की धमकी देते हैं।"[14] गंगाराम को अन्य एक अधिकारी फूलबाबू के पास भेजा गया। फूलबाबू भी एससी था। लेकिन खुद एससी होकर भी फूलबाबू ने गंगाराम के साथ दुर्व्यवहार किया। फूलबाबू ने गंगाराम को हा चाई भी परोसने दिया। एपीओ का पहला दिन था और वह एक हाथ में केतली और दूसरे में नमकीन लिए खड़ा था। फूलबाबू बहुत चालाक आदमी था। उसने गंगाराम के द्वारा ही अपने दुकान की उधारी भी चुकाई। गंगाराम ने एकबार फूलबाबू का जब अपने मुक्ति के बारे में पूछा तब फूलबाबू ने कहा- "मुक्ति होगी। जरूर होगी। मगर चौदह अप्रेल के बाद। उस दिन आंबेडकर पार्क में रात का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन होगा। दिन में शहर भर की गलियों में मोटरसाइकिल रैली निकाली जाएगी। बाबा के योगदान पर विद्वान लोग चर्चा करेंगे। झंडे-बैनर,पोस्टर से शहर पाता जाएगा। इस सब में पैसा लगता है। सब कुछ चंदे से होगा।"[15] फूलबाबू ने रसीद बुक गंगाराम के सामने रख कर कहा- "अपनी मर्जी से जितना चाहो भर दो। 16 अप्रैल को पोस्टिंग ऑर्डर आपकी जेब में होगा। ठीक है।"[16] गंगाराम ने पैंट की जेब से 11000 निकालकर फूलबाबू को दिया। लेकिन फूलबाबु सिर्फ 500 का ही रसीद बनाई। जब गंगाराम ने इस बारे में प्रश्न किया तो फूलबाबू ने कहा- "कवि सम्मेलन, परिचर्चा, झंडे, बैनर, पोस्टर, रैली, खर्चे ही खर्चे हैं। ये कौन करेगा...? अकेले मुझे आरक्षण मिला था क्या...? या

जाटवों को ही अलग से मिला...? बाबा ने सारे दलितों के लिए किया था तो सभी का सहयोग चाहिए कि नहीं...?"[17] सिर्फ इतना ही नहीं फूलबाबू गंगाराम से और भी खर्च कराता है। यहाँ तक दारू और मांस भी उसी से लेता है। यह कहानी भ्रष्टाचार पर एक बेहतरीन कहानी है। कहानी में पथिक ने वर्ग भेद को भी स्पष्ट रूप से दिखाया है। पथिक ने इस कहानी में जातिभेद का सजीव चित्रण किया है। दिनेश पंडित और शिक्षा अधिकारी जैसे पात्रों द्वारा यह स्पष्ट रूप से चित्रित हुआ है। पथिक ने भ्रष्टाचार को भी इस प्रकार से दिखाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इंसान चाहे कोई भी हो वह भ्रष्टाचार कर सकता है। अपने जाति-धर्म, भाई-बंधु के साथ भी लोग भ्रष्टाचार करने से नहीं चूकते।

पारिवारिक जीवन- परिवार हर समाज की एक आवश्यक इकाई है। एक एक परिवार जुड़कर ही समाज बनती है। पथिक की ने अपनी कहानियों में परिवार के विभिन्न रूपों को उजागर किया है। **'बात यह नहीं है'** कहानी संग्रह के दो कहानियों में पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण हुआ है। जैसे- 'खिलौना' और 'बक्खड़'।

'खिलौना' कहानी में दो ऐसे परिवारों का वर्णन हैं जो बिल्कुल एक दूसरे से अलग है। एक तरफ है भरोसी का परिवार जो दो वक्त की रोटी के लिए चिंतित है वही दूसरा परिवार ऐसा है जिसे कभी पैसों के बारे में सोचना नहीं पड़ा। भरोसी जो मि.दीपक के घर में काम करता है और भरोसी की पत्नी विमली सड़क पर गिट्टी डालने का काम करती है। उनके दो बच्चे हैं। चारों जैसे तैसे जीवन का गुजारा कर रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी है कि बच्चों को घूँट भर दूध भी नसीब नहीं होता। सिर्फ एक कप चाय से ही काम चलाना पड़ता है। दूसरी तरफ मि.दीपक सिन्हा जिसका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का लंबा-चौड़ा कारोबार है। उसी पत्नी मिसेज सिन्हा कॉलेज में लेक्चरर है। उनका एक बच्चा सोनू जिसका देखभाल भरोसी करता है। भरोसी का मि.सिन्हा

के घर दुर्व्यवहार किया जाता है लेकिन वह अपने परिवार की खुशी के लिए सब कुछ भूलकर वही काम करता रहा।

एक बार मि.सिन्हा के घर एक पार्टी चल रही थी। उसी समय सोनू का खिलौना घोड़ा टूट गया। जब उसने यह बात मि.सिन्हा को बताई तब उसने भरोसी को ही घोड़ा बनने के लिए कहा। छोटा बच्चा समझ के भरोसी भी घोड़ा बन गया और सोनू को अपने पीठ पर बैठाकर चक्कर लगाने लगा। पार्टी में सब झूमने लगे थे। मि.सिन्हा के एक दोस्त ने नशे में आकर भरोसी को लात मारकर कहा- "अबे साले भौंचू! ठीक से घोड़ा बन।"[18] यह सुन भरोसी को बहुत गुस्सा आया और गुस्से में उसने मि.सिन्हा से बोला- "मालिक! आप समझाओ इन्हें वरना....!"[19] फिर मि.सिन्हा ने भरोसी से कहा- "वरना...क्या करेगा...तू! साले... दो कौड़ी के आदमी... तेरी इतनी हिम्मत...।"[20] यह कहकर मि.सिन्हा ने भरोसी को पकड़कर बिठाया और खुद उसके पीठ पर बैठ गया और उसके कान को बेरहमी से मरोड़ दिया। बेचारा बहुत दर्द में था लेकिन कुछ बोल नहीं पाया। सिर्फ यही नहीं मि.सिन्हा ने अपने दोस्त को भी बुलाया- "कम ऑन मिस्टर कौल...कम ऑन। घोड़े की सवारी का आप भी आनंद लीजिए।"[21] उस वक्त भरोसी बहुत कुछ बोलना और करना चाहता था लेकिन वह एक असहाय खिलौना बनके रह गया। जब ये सब बात वह अपनी पत्नी को जाकर बताया तो पत्नी बहुत भड़क गयी और दुखी भी हो गयी। वह बोल उठी- "हम गरीबों को खिलौना समझ रखा है निपूतों ने! आग लगे ऐसे पैसे में। किसी की इज्जत ही नहीं समझते।"[22] प्रस्तुत कहानी के जरिए कहानीकार ने यही चित्रित किया है कि एक परिवार को चलाने के लिए और अपने बच्चों की खुशी लिए के लिए भरोसी जैसे लोग रोज कहीं न कहीं दुर्व्यवहार और अत्याचार सह रहा है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह की दो कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण मिलता है। जैसे- 'फिरने वालियाँ' और 'वह अब भी नंगा है'।

फिरने वालियाँ कहानी में पथिक ने भारतीय ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों को दिखाया हैं। यह कहानी विभिन्न पहलुओं के बारे में हैं जैसे- रिश्तों का बदलता रूप, कृत्रिमता, असहनशीलता और अपनों के बीच आई दूरियाँ। लेखक की पत्नी की बुआ का देहांत हो जाता है। सभी कुटुंबी बुआ के घर फिरने जाने वाले थे लेकिन रिश्तों में अब पहले जैसी गर्माहट नहीं रही। गाँव के सभी कुटुंबी तभी बुआ के घर जाने के लिए तैयार हुए जब लेखक ने जीप का व्यवस्था किया। कहानीकार की पत्नी भी कुटुंबी को जीप से ही ले जाना चाहती थी। जब कहानीकार सारे लोगों को ट्रैक्टर से ले जाना चाहते थे तब पत्नी ने कहा- "लाख की बैठेगी वो तो...! रिश्तेदारी का मामला है। ट्रैक्टर-ट्राली की तुक क्या हैं? किराए की जीप ले चलेंगे। मैं किसी के साधन का क्यों एहसान लूँ?"[23] कोई भी रिश्तेदार बस से जाने के लिए तैयार नहीं था। अब किसी के पास अपनों के लिए जैसे कोई अपनापन या सहानुभूति नहीं रही। लेखक जीप ठीक करने अपने दोस्त बाला के पास गए यह सोच कर कि दोस्त समझ के वह जीप का दाम थोड़ा कम कर दे लेकिन बाला ने कहा-"यों तो भाई साहब, डीजल बहुत महंगा हो गया है। अब कम आपका है... तो बारह सौ दे देना। ड्राईवर सुबह सात बजे दरवाजे पर हाजिरी लगा देगा।"

"बारह सौ....!"

"ये तो बहुत ज्यादा है बाला।"

"लो....! कोई और होता तो डीजल अलग से लेता भाई साहब। लेकिन घर की बात है। गमी में जा रहे हो। सारी बातें सोचनी पड़ती हैं। आखिर मैं भी इंसान हूँ।"[24] लेखक आगे और कुछ बोल नहीं पाया। उन्होंने सोचा नहीं था कि बाजार ने आदमी को इस प्रकार ढक लिया है।

इस कहानी में पथिक ने रिश्तों में आई कृत्रिमता को बहुत सुंदर ढंग से दिखाया है। शोक मनाने जाने के लिए औरतें सजने सवारने पर ध्यान दे रही थी। औरतों का ध्यान सिर्फ कपड़ों, चप्पलों, नाक की सींक, कानों की झुमकी और गले की माला आदि पर ही था। सिर्फ यही नहीं, बुआ के घर पहुँचने के बाद कौन रोते हुए जाएगी और कौन गंगा जी का भजन गाते हुए जाएगी इस बात पर औरतों के बीच बहस होने लगी। अंत में लेखक की दोनों चाची और गुलबी ताई गंगाजी के भजन गाती आगे आगे चल रही थी और पीछे लेखक की पत्नी और अन्य पाँच औरतें ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई आ रही थी। लेखक यह देखकर एकदम हैरान रह गया।

'वह अब भी नंगा है' कहानी के जरिए पथिक ने एक गरीब पिता, उसकी मजबूरी और उसके बच्चे के जीवन का चित्रण किया है। कहानी का चरित्र लल्लू और उसके बच्चे के जरिए पथिक ने उन बच्चों की ओर इशारा किया हैं जिसे हम हमेशा कहीं न कहीं देखते रहते हैं। चाहे वह किसी होटल बॉय के रूप में, रास्तों पर गाडियाँ साफ करने वालों के रूप में या फिर हमारे घरों में काम करने वालों के रूप में। साथ ही साथ एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण है जो अपने परिवार को खुश रखना चाहता है लेकिन वह नहीं रख पाता। लल्लू अपने बच्चे को एक जोड़ा कपड़ा भी नहीं दे पाता। दिवाली में दूसरों के पिता जैसा वह अपने बच्चे को नई-नई पोशाक नहीं दे पाता, पटाखे नहीं दे पाता। यहाँ तक कि सर्दियों में भी वह बच्चे को कपड़ा तक नहीं दे पाता है। कहानी के बच्चे के जरिए कहानीकार ने उन बच्चों के बारे में बताया है जो बच्चे कभी स्कूल नहीं जा पाते और किसी स्कूल के ब्रेक टाइम में साफ-सुथरी ड्रेसों में सजे स्कूली बच्चों को देखता रहता है। दूसरे बच्चे जब गोलगप्पा खाते हैं तो उन सबको निहारने के अलावा उसके पास और कोई उपाय नहीं होता है। गरमी हो या ठंडी वह अधनंगा अवस्था में ही रहता है, क्योंकि उसके पास और कोई कपड़ा नहीं होता है। पथिक ने इस कहानी के जरिए उन बच्चों के संघर्षों को दिखाया है जिसेक लिए एक जोड़ा कपड़ा भी बहुत महत्वपूर्ण होता है।

'गौरू का लैपटाप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह के तीन कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण मिलता है। जैसे- 'रुदन', 'सपने', और 'कोई जादू है क्या'।

'रुदन' कहानी उन प्रत्येक पुरुष की कहानी है जो अपने परिवार के लिए अपना सब कुछ छोड़ आता है। वह पुरुष जो हमेशा सबके सामने खुश ही रहता है लेकिन उसका रुदन किसी को सुनाई नहीं देता। वह पुरुष कभी रो नहीं सकता। असल में लोग उसे कभी रोने नहीं देता। हमेशा उसे सिर्फ हँसने के लिए कहा जाता है। उसे कहा जाता है- "इसे हर वक्त रोना सूझता है। अरे यार, हँस। 'हँस' कि छठा वेतन आयोग लागू हो गया है।"[25] लेकिन तब वह सोचता है- "टमाटर बीस-तीस रुपये किलो। दाल पचास को पार करने लगी है। मीठा तेल सत्तर-अस्सी पर ठोकर मारने को तैयार है। पेट्रोल साठ को सलाम करने वाला है और गेहूँ....। फिर छठे वेतन आयोग से मेरी क्या रिश्तेदारी?"[26] वह फिर कहता है- "मोबाइल, मोटर साइकल, मदिरा और मंदिरों ने लोगों कि जेबों से जबरन वसूली कर रखी है। पाँच सौ का नोट बाजार में पाँच मिनट तसल्ली से जेब में नहीं टिक सकता और तुम कहते हो, हँसूँ...?"[27] लोगों को दिखाकर तो वह हँस देता है लेकिन अंदर का रुदन जारी रहता है। वह कभी भी खुलकर रो नहीं पाता है, किसी से अपना दर्द बया नहीं कर पाता है क्योंकि वह एक पुरुष है।

'मैं बीड़ी पी के झूँठ नी बोलता' कहानी संग्रह के अंतर्गत 'कैसे उड़े चिड़िया' कहानी के अंदर पारिवारिक जीवन का चित्रण मिलता है। 'कैसे उड़े चिड़िया' कहानी में लेखक ने स्त्री-पुरुष के सम्बंध को दर्शाया है। एक रिश्ते में स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार होना कितना महत्वपूर्ण है उसे पथिक ने सुंदर रूप से दिखाया है। एक चिड़ा-चिड़ी के जोड़े के जरिए लेखक ने स्त्री मन का व्याख्यान किया है। किस प्रकार सदियों से प्रायः स्त्री पुरुष के नीचे दबी आ रही

है और अपने अधिकार के लिए तड़पती आ रही है उसकी ओर पथिक ने संकेत किया है। साथ ही स्त्री मन की इच्छा का भी चित्रण किया है।

नारी विषयक धारणा- 'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह के तीन कहानियों में नारी विषयक धारणा का चित्रण मिलता है। जैसे- 'बक्खड़','कसाई' और 'बीमार'।

'बक्खड़' कहानी में नारी शोषण का यथार्थ चित्रण हुआ है। कहानी के मुख्य पात्र मुला की माँ संतो के जरिए कहानीकार ने ससुराल में शोषित होती स्त्रीयों का वर्णन किया है। विशेषकर एक स्त्री ही किस प्रकार दूसरी स्त्री का शोषण करती है उसका सजीव चित्रण हुआ है। मूला की माँ संतो अपनी सास द्वारा ही शोषित हुई है। जब मुला संतो के पेट में था तब संतो को कई कई दिनों तक भूखी-प्यासी और घायल अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया जाता था। घर का हर काम उसे ही संभालना पड़ता था जैसे- सवेरे जल्दी उठके आटा पीसना, झाड़ू लगाना, गोबर डालना, कंडे थापना, पानी लाना, दोपहर में रोटी बनाना और बीच बीच में सास ससुर की झिड़की। इतना काम करने के बाद भी संतो को एक रोटी तक नसीब नहीं होती थी। सास उसके हाथ से रोटियाँ छीन लेती थी, दूध पर पाबंदी लगा देती थी और जब संतो प्रतिरोध करती थी तो सास बोलती थी- "तेरा बाप कमा के रख गया है क्या? बापखाणी, मरी नहीं तू...।"[28] और जब संतो का पति शहर से आता है तब उसकी माँ उसके सामने रो-रो कर संतो के बारे में भला-बुरा कहती है। फिर संतो कितना भी समझाने की कोशिश करे कोई लाभ नहीं होता। उसका पति जो भी हाथ लगे उसी से संतो को मारने-पीटने लगता है। मुला के बाप ने दूसरी शादी कर ली थी और इसके बाद संतो और मुला पर ज्यादा अत्याचार होने लगा। एक बार मुला की दादी ने मुला को सीढ़ियों से धक्का देकर गिरा दिया था। इस घटना के बाद संतो और सहन करने के लिए तैयार नहीं थी। वह प्रतिरोध करने लगी- "मैं क्यों खटूँ? मैं क्यों चराऊँ

भैंसों को? क्यों गोबर डालूँ? बाँदी थोड़ी आई हूँ। सात फेरे खाए हैं, काम करे मेरा मुट्ठा। जिसको जो करना है कर ले मेरा, मारेंगे तो सही। पर अन्याय तो अब एक दिन भी सहन नहीं करूंगी।"[29] इसके बाद संतो मुला के साथ अपना ससुराल छोड़ मायके चली जाती है। चरण सिंह पथिक ने प्रस्तुत कहानी के जरिए नारी के सबल रूप का भी चित्रण किया है।

'बीमार कहानी में नारी जीवन का चित्रण मिलता है। 'बीमार' कहानी एक साहित्यकार और उनकी बीमार पत्नी की कहानी है। साहित्यकार अपनी पत्नी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था, यहाँ तक वह अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाता था। पितृसत्तात्मक समाज में एक नारी को कैसे अपने दैनंदिन जीवन में चुनोतियों का सामना करना पड़ता है उसे पथिक ने अपनी कहानी में दिखाया है। इस समाज में एक स्त्री ही स्त्री का शत्रु है। कहानी का पात्र प्रमोद, उसका भाई विनोद और उसकी माँ उसकी पत्नी को बहुत अत्याचार करते हैं। प्रमोद एक गाड़ी से यात्रा कर रहा होता है और तभी उसको पुरानी बातें याद आती हैं। जब साहित्यकार की नयी नयी शादी हुयी थी तभी उनके घरवाले और दोस्तों ने उन्हें सतर्क किया था। प्रमोद की भाभी उसको बोलती है- "लालाजी, देवरानी को दबा के रखना। पहले दिन ही तुम्हारा पलड़ा नीचे रहा तो जिंदगी भर कान पकड़े बकरी की तरह म्याँ...म्याँ करते रहोगे।"[30]

उसके सीनियर जूनियर दोस्तों ने बोला- "ओय प्रमोदया स्साले सेर रहना कहीं हमारी मिट्टी पलीद मत करवा देना।"[31]

उसकी माँ ने सलाह दिया- "बेटा! बहू को हमेशा अपने वश में रखना।"[32]

प्रमोद की पत्नी को घर में कुछ कहने का ही हक नहीं था। छोटी-छोटी बातों में ही उसको गाली गलौज किया जाता था यहाँ तक मार-पीट भी। प्रमोद का भाई विनोद भी उस पर हाथ उठाता

था। हाथ उठाने पर प्रमोद विनोद को कुछ बोलने बजाय पत्नी को ही बातें सुनाता था। जब उसकी पत्नी विनोद को उल्टा सीधा कहती है तब प्रमोद पूछता है- "तुमने विनोद से उल्टा सीधा क्यों कहा....?"

"उसने मेरे ऊपर हाथ उठाया था।"

".... तो कौनसा आसमान टूट पड़ा? वह आखिर छोटा तो है।"

"किसी छोटे बड़े को क्या हक कि मेरे ऊपर हाथ उठाए?"

"तुझे क्या हक है कि जुबान चलाये?"

"मैं क्या इस घर कि सदस्य नहीं हूँ? क्या मैं कुछ भी नहीं हूँ?"[33]

ये सुनने के बाद ही प्रमोद ने पत्नी को थप्पर लगा दिया।

इस कहानी में पथिक ने बदलाव भी दिखाया है। प्रमोद को पछतावा होता है कि उसने अपनी पत्नी पर कितनी अत्याचार किया है। प्रमोद जब घर पहुँचता है तब पत्नी बीमार थी। पहले कभी भी पत्नी की बीमारी में प्रमोद ने कुछ काम नहीं किया। यहाँ तक कि पत्नी से को दवाई के बारे में भी नहीं पूछा लेकिन इस बार की बात अलग थी। प्रमोद ने घर का काम किया, पत्नी को चाय बनाके दिया साथ में दवाई भी। पत्नी समझ गई थी कि प्रमोद को पछतावा हुआ है। वह प्रमोद को बोली- "अच्छा! अब आँखें खुली हैं। अब तो मैं खोखला हो छुकी हूँ।"[34]

प्रमोद एक लेखक था जो नारी के बारे में ही अपनी कहानियों में लिखता है लेकिन कभी भी अपने घर की नारी को देखने की कोशिश नहीं की। उसकी पत्नी उससे पूछती है- "कैसा रहा कहानी पाठ?"

"ठीक रहा।"

"औरतों के पक्ष में अच्छा लिखते है आप?"

"हाँ।"

"मगर घर में कभी झाँक के नहीं देखा।"[35]

यह सुनकर प्रमोद को ऐसा लगा जैसे कोई अंगारा छू गया। वह कुछ बोल नहीं पाया, वह बस थम सा गया। कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी के जरिए समाज की उस मानसिकता की ओर इशारा किया है, जहाँ स्त्री को हमेशा पुरुष के नीचे रखने के बारे में कहा जाता है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के तीन कहानियों में नारी जीवन का चित्रण मिलता है। जैसे- 'कलुआ', 'बेरी का पेड़', और 'ठंडी गदुली'।

'कलुआ' कहानी के जरिए पथिक ने नारी के सशक्त रूप का वर्णन किया है। 'कलुआ' कहानी एक निम्न जाति की महिला कलावती की कहानी है। कहानी में पथिक ने कलावती के जीवन की पीड़ा को दिखाया है। किस प्रकार अपने पति द्वारा छोड़ने के बाद अपने देवर, जेठ और सास के द्वारा वह शोषित होती है उसका चित्रण कहानी में है। कलावती के जेठ और देवर की नजर सिर्फ उसके शरीर पर रहती थी। इस बात को उसकी सास जानती थी लेकिन उसने कभी अपने बेटों से कुछ नहीं कहा बल्कि कलावती को ही अपने देवर और जेठ के बीच में किसी

एक को चुनने के लिए कहती रही। कलावती तब अपनी सास को जवाब देती है- "मैं कोई विधवा नहीं हूँ। खसम ने घर छोड़ा है, देह नहीं। कभी तो आएगा निपूता।"[36] जिस समय कलावती को अपनी सास की जरूरत थी उसी समय वह अपनी सास से ही शोषित होती रही। खुद एक नारी होकर भी वह कलावती की पीड़ा को नहीं समझ पायी। कलावती ने भी हार नहीं मानी। प्रतिरोध में उसने अपना ससुराल छोड़ दिया और अकेले ही जीवन व्यतीत करने लगी।

'बेरी का पेड़' कहानी में चरण सिंह पथिक ने एक लड़की के जीवन को बेरी के पेड़ के साथ तुलना किया है। जिस प्रकार एक बेरी का पेड़ चारों तरफ कंटीली झाड़ियों से घिरा हुआ होता है और उसके बावजूद वह फल देता है उसी प्रकार एक लड़की का जीवन भी विभिन्न संघर्षों से घिरा हुआ होता हैं। बेरी का पेड़ बिना किसी मेहनत के ही बड़ा हो जाता है और वह फल भी देता है। खुद कंटीली झड़ियों से घिरा होने के बाद भी लोगों को मीठा फल देता है लेकिन लोग उसमें पत्थर फेंकते हैं। उसी प्रकार कहानी में लेखक ने अपनी बेटी के जीवन को दर्शाया है। वह अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ना चाहती है, वह पढ़ना चाहती है। वह अपने कॉलेज में साझा पेंटिंग करती है और उसी में अपना भविष्य भी बनाना चाहती है लेकिन उसको बिना बताए उसकी शादी तय कर दी जाती है। उसके सपनें, सपनें ही रह जाते है।

'ठंडी गदूली' कहानी में भी नारी के सशक्त रूप का चित्रण हुआ है। कहानी की कथावस्तु विधवा स्त्री अंगूरी और घासी की प्रेम कहानी है। अंगूरी विधवा और एक बच्ची की माँ है फिर भी घासी उससे प्रेम करता है और अंगूरी भी घासी के साथ जीवन बिताना चाहती है। घासी अंगूरी को अपनाना तो चाहता है लेकिन वह अपने समाज से, अपने रिशतेदारों से, जात-बिरादर के लोगों से डरता है लेकिन अंगूरी को इन सबसे कोई डर नहीं। इसलिए जब

घासी अंगूरी से कहता है- "मेरा भी पिंड छूटेगा। तू सोच ले। जात-बिरादर, नाते-रिश्तेदारी में तेरी फजीहत ज्यादा होगी। केस, मुक़द्दमा, पंचायत में साथ देना होगा। नाथ का जाया हूँ, बात पक्की समझना।"[37] तब जवाब में अंगूरी बोलती है- "अभी कौन सा सुख भोग रही हूँ मैं। सबकी निगाह इस शरीर पर लगी है। तेरे कौल पर भरोसा है।"[38] अंगूरी और घासी लोगों के परवाह किए बिना गाँव छोड़कर भाग गए। विवेच्य कहानी के द्वारा कहानीकार ने विधवा विवाह के ओर संकेत किया है, साथ ही स्त्री की साहसिकता को दर्शाया है।

'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता' कहानी संग्रह के अंतर्गत 'कैसे उड़े चिड़िया' कहानी के अंतर्गत नारी विषयक धारणा का चित्रण हुआ है। इस कहानी में पति-पत्नी के सम्बन्धों द्वारा यह दिखाया गया है कि एक रिश्ते में स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार होना कितना महत्वपूर्ण है। कहानी में चित्रित पत्नी हमेशा अपने पति से चिढ़ती रहती है क्योंकि पति अपनी पत्नी को समय नहीं देता, सिर्फ अपने में ही व्यस्त रहता है। पत्नी हमेशा अपनी बातों को, इच्छाओं को अपने अंदर ही दबाई रखती थी। प्रस्तुत कहानी में चरण सिंह पथिक ने चिड़ा-चिड़ी के एक जोड़ा के माध्यम से पत्नी के मन की बातों को स्पष्ट किया है। उनके घर के अंदर एक चिड़ा-चिड़ी का जोड़ा था जिसे पत्नी बिल्कुल पसंद नहीं करती थी क्योंकि चिड़ा-चिड़ी जो गंदा करते थे वह पत्नी को ही साफ करना पड़ता था। एक दिन चिड़ा-चिड़ी के बीच झगड़ा हो गया और दोनों दूर-दूर खड़े एक दूसरे को देख रहे थे। यहाँ पति-पत्नी भी बैठकर दोनों को देख रहे थे। पति ने चिड़ा से कहा- "बेटा....! इसकी गरज़ होगी तो ख़ुद आएगी तेरे पास। तुझे नहीं जाना।"[39] यह सुन पत्नी बोली- "इसकी क्या गरज़ जो आएगी और कब तक आएगी...? मैं कहती हूँ ये मर जाएगी लेकिन जाएगी नहीं...।"[40] पत्नी फिर बोली- "सुन भैणा....। तेरी हार सिर्फ तेरी नहीं... इस धरती की हार है। धरती हार गई तो प्रलय होगी....। तू चाहे मेरी

अंगियाँ में घेसुआ बना ले। चाहे मेरे घाघरे में अंडा दे ले। पर हारना मत..."[41] पति पत्नी की बात सुनकर हतप्रभ था। सदियों तक हारते जाने की टीस पत्नी की आँखों से बहने लगी थी। पति अब भी सन्न था। बात इस हद तक पहुँच जाएगी उसे कभी अंदाजा नहीं था। विवेच्य कहानी के द्वारा कहानीकार ने उन महिलाओं की ओर इशारा किया है जो हमेशा से अपने रिश्तों के लिए अपनी इच्छाओं को दबाती आ रही हैं, बिना प्रतिरोध किए हारती आ रही हैं।

सामाजिक लोक विश्वास एवं परम्पराएँ- प्रत्येक समाज में विभिन्न लोकविश्वास और परम्पराएँ प्रचलित है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में भी सामाजिक लोक विश्वास एवं परम्पराएँ चित्रित है।

'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह के 'कसाई' कहानी में लोक विश्वास का चित्रण मिलता है। 'कसाई' कहानी का मुख्य पात्र है सुंदर, जो राजनीतिक लोभ के कारण अपने पिता के हाथों ही मारा गया। इस बात को छुपाने के लिए उसके पिता ने सुंदर की मृत्यु को ऊपर की हवा बताई। पूरे गाँव में यह बात फैल गयी कि किसी कसाई ने सुंदर की हत्या की है। लोगों को हर जगह सिर्फ कसाई दिखने लगा। उस कसाई को भगाने के लिए एक तांत्रिक को बुलाया गया। शराब, लौंग का जोड़ा, धूप, अगरबत्ती, इत्र, जायफल, उड़द के दाने, तिल, लाल कपड़ा के साथ सारा सामान मंगा लिया गया। तांत्रिक विभिन्न प्रकार का ढोंग करता गया और झूठ बोलता गया। लोग तांत्रिक की सारी बातें मानते गए। तांत्रिक बोला- "कृष्ण पक्ष के सात सनीचर दयाल की बहू आधी रात को नाले के ऊपर नंगी स्नान करे। मैं साथ दूँगा। सवामणी और बकरा अलग से चढ़ाना होगा। ताबीज भर दूँगा। फिर देखता हूँ उस कसाई को..."[42] यह सुनने के बाद दयाल तांत्रिक के पैरों पर गिर गया और बोला- "तुम जैसा कहोगे- वैसा ही करेंगे! महाराज! हमारा तो दुख कटना चाहिए बस...!"[43] कहानी के जरिए कहानीकार ने यही

दिखाया है कि किस प्रकार लोग अंधविश्वास में आकर सब कुछ भूल जाते हैं, यहाँ तक अपनी पत्नी का सम्मान भी भूल गया है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के दो कहानियों में लोक विश्वास एवं परम्पराओं का वर्णन मिलता है। जैसे- 'फिरने वालियाँ' और 'पीपल का फूल'।

'फिरने वालियाँ' कहानी में परंपरागत रूप से चली आ रही रुदालियों को दिखाया गया है लेकिन उसमें कहानीकार ने बहुत से परिवर्तनों की ओर इशारा किया है। कहानी में कहानीकार की पत्नी की बुआ की मृत्यु हो जाती है। गाँव के सभी कुटुंबी और रुदालियाँ बुआ के घर जाने वाले थे। रुदालियाँ सिर्फ सजने-सवारने में व्यस्त थीं, किसी के मन में थोड़ा भी दुख नहीं था। वर्तमान गाँव शहरों की ओर गति कर रही है और इसी कारण आज परम्पराओं में बहुत बदलाव आ रहा है, उसी प्रकार रुदालियों की इस परंपरा में भी परिवर्तन हुआ है। कहानीकार की ताई पूछती है- "लल्लू, मरने वाली तो बड़ी-बूढ़ी ठहरी। सो रोती हुई चलें या गंगाजी के गीत भजन गाती हुई...?"[44] कहानीकार ने कहा कि उन्हें नहीं पता, इसलिए ताऊजी से पूछते है। तभी पत्नी ने कहा- "अजी, ताऊजी से क्या पूछना! मेरी तो बुआजी थीं। मुझे तो रोते हुए ही जाना होगा।"[45] चलते-चलते जब कहानीकार ने पीछे देखा तब उनके दोनों चाचा और गुलाबी ताई आगे-आगे चलती हुई गंगाजी के भजन गाती आ रही थीं। उनसे थोड़ी दूरी पर पीछे-पीछे पत्नी के नेतृत्व में वे पाँचों औरतें ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई आ रही थीं। यह देख कहानीकार हैरान रह गए। विवेच्य कहानी के जरिए चरण सिंह पथिक ने परम्पराओं का चित्रण किया है लेकिन साथ-साथ उन्होंने परम्पराओं में आई कृतिमता का भी चित्रण किया है।

'पीपल के फूल' कहानी पिपलपुरा गाँव के बूढ़े पीपल के पेड़ की कहानी है। उस पेड़ के कारण ही उस गाँव का नाम पिपलपुरा रखा गया था लेकिन उस गाँव के लोग ही उस पेड़ को काटना चाहते थे। इस कहानी में उस पीपल के पेड़ के बारे में ही लोकविश्वास को दिखाया है जैसे- पीपल के पेड़ में कोई 'ऊपरी हवा' होता है और उसमें भूतों का वास होता है। लोग कहते है- "अब इस पीपल में सुरजो की भूतनी वास करने लगी है और हर अमावस की रात वह इसी पीपल के पेड़ तले नंगी होकर कुजात भूतों के संग रास रचाती है।"[46]

'गौरू का लैपटाप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह के 'यात्रा' कहानी में भी लोक परम्पराएँ चित्रित है। 'यात्रा' कहानी में पथिक ने ग्राम्य अंचल में होने वाले धार्मिक पद यात्राओं का वर्णन किया है। एक ही गाँव में दो दो पदयात्रा का आयोजन किया जाता है। एक तरफ बजरंगदास की छत्रछाया में गोवर्धन महाराज की पदयात्रा और दूसरी तरफ भगत शिरोमणि के सान्निध्य में कैलादेवी की पदयात्रा। गाँव के सभी लोग कैसे दो तरफ बट जाते हैं और पदयात्रा में किस प्रकार का परिवेश होता है उसका वास्तविक चित्रण पथिक ने अपने इस कहानी में किया है।

4.2 लोक जीवन का राजनीतिक पक्ष:

'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह के तीन कहानियों में लोक जीवन के राजनीतिक पक्ष का चित्रण मिलता है। जैसे- 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया', 'कसाई' और 'बात यह नहीं है'।

'बात यह नहीं है' कहानी ग्राम्य अंचल पर आधारित है। इस कहानी में भी पथिक ने जाति भेद का चित्रण किया है। कहानी का पात्र छुट्टनसिंह उच्च जाति से है और खिलारीनाथ निम्न जाति से। दोनों के बीच बहुत बड़ा झगड़ा हो गया था और विभिन्न लोग विभिन्न कारण

बताते रहे। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने निम्न जाति के प्रति उच्च जाति के भेद भाव का चित्रण किया है और साथ में यह भी चित्रित हुआ है कि किस प्रकार राजनीतिक लाभ के कारण उच्च जाति निम्न जाति के पास अपना स्वार्थ पूर्ति के लिए जाते है। उच्च जाति सिर्फ पुरुष के शोषण तक शांत नहीं बैठता वह निम्न जाति के बहू बेटियों के ऊपर भी अपनी नजर गढ़ाये हुए रखता है। कहानी का पात्र पून्या उच्च जाति का छुट्टनसिंह द्वारा किए गए शोषण के बारे में बताता है- "जब चुनावों में वोट लेने होते हैं तो ये तुम्हारी ऊंची जाति वाले हमारे बच्चों तक को हाथ जोड़ते फिरते हैं। हमारे घरों में आकर दारू-मीट खाते हैं। तब इनकी जाति कहाँ चली जाती है? तब इनका धर्म भ्रष्ट नहीं होता? लेकिन कोई बात नहीं। आजकल की राजनीति ही यही है। हम ऐसा सोच लेते हैं। मगर एक बाप अपने सामने अपनी जवान बेटी की इज्जत अपने ही घर लूटते बर्दाश्त कर लेगा....? जैसी हमारी बहू-बेटियाँ,ऐसी ही तुम्हारी बहू बेटियाँ!"[47]

पून्या फिर बोलने लगा- "हमारा वोट भी चाहिए! हमारी दारू चाहिए! हमारा बनाया हुआ मीट भी चाहिए! और फिर.... नीचे सोने के लिए हमारी जवान बहू-बेटियाँ भी चाहिए! हमारी बेगार भी चाहिए! हम क्या इंसान नहीं है? हमारी क्या इज्जत नहीं है? अजी, अब तो अफवाह जूती बताने की ही फैली है, लेकिन अब के बाद कोई अफवाह नहीं फैलेगी। जो कुछ होगा, सच होगा।"[48]

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के 'प्रधान की कुतिया' कहानी में लोक जीवन के राजनीतिक पक्ष का वर्णन मिलता है। प्रधान की कुतिया कहानी के जरिए पथिक ने राजनीति और भ्रष्टाचार को दिखाया है। राजनीति के लिए लोग किसी भी हद तक जा सकते हैं और कुछ भी कर सकते हैं। कहानी में कुतिया के जरिए नेताओं के द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार को दिखाया है। यह कहानी एक प्रधान की कुतिया सफेदी के बारे में है जिसपर प्रधान ने बहुत अत्याचार किया था। प्रधान की कुतिया बहुत ही सुंदर थी और हर कोई प्यार करता था।

प्रधान की कुतिया को राजधानी के एम.एल.ए. का कुत्ता 'रॉकी' के लिए पसंद किया गया। प्रधान कुछ सरकारी सेंक्शन को पाने लिए अपनी कुतिया 'सफेदी' का सौदा किया और 'सफेदी' को एम.एल.ए. के घर छोड़कर चला गया। 'सफेदी' भी एम.एल.ए. के घर में रहने वाली नहीं थी वह रॉकी को घायल करके अपने घर चली आई लेकिन यह बात प्रधान को बिल्कुल पसंद नहीं आयी। एम.एल.ए. ने भी वह सेंक्शन कैन्सल कर दिया। इससे प्रधान को गुस्सा आया और उसने सफेदी को बहुत मारा-पीटा और कमरे में बंद कर दिया। सफेदी मुक्त जीवन जीना चाहती थी और वह बाहर जाने का मौका ढूंढ रही थी। एक दिन सफेदी भाग गई और गाँव में जाकर झबरू नामक कुत्ते से मिली। सफेदी को झबरू से प्यार हो गया लेकिन प्रधान को इस बात की जब खबर हुई तो उसने झबरू को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। झबरू का मालिक एक धोबी था। प्रधान ने उसे भी नहीं छोड़ा। उसने धोबी काजोड़या को धमकी दी- "स्साले sss तेरी इतनी औकात कि तू मेरी कुतिया को चुराकर अपने पिल्ले के साथ रखे। बलात्कार के आरोप में जेल में सड़वा दूंगा तुझे।"[49] कुछ दिनों बाद सफेदी गर्भवती हुई। जब प्रधान को इस बात की खबर हुई तो प्रधान ने सफेदी का गर्भपात करके उसे बाँझ बना दिया। यहाँ तक प्रधान को शांति नहीं मिली, एक दिन नशे में उसने अपने पट्ठों से बोला- "सफेदी को मैंने बेटी जैसा पाला है। मैं इसे अपने हाथ से मारना नहीं चाहता। तुम एक काम करो। इसे आज शाम को गाँव से दूर ले जाओ और इसकी कमर पर मार्शल जीप के टायर फेर दो ताकि ये किसी कुत्ते के काम कि न रहे और जीवन भर अपाहिज होकर दर-दर डंडे खाती फिरे। यही आखिरी सजा है इसकी।"[50] प्रधान ने जैसा कहा वैसा ही हुआ। सफेदी की कमर टूट गई, वह दर दर भटकती रही और अंत में उसकी मृत्यु हो गई। एक कुतिया के जरिए कहानीकार वर्तमान समाज में घटित घटनाओं के ओर संकेत किया है। राजनीतिक स्वार्थ के

कारण लोग हत्या-हिंसा पर भी उतर जाते है, उसी संदर्भ को पथिक ने इस कहानी में यथार्थ चित्रण किया है।

'गौरू का लैपटाप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह के 'पागल कुत्ते' कहानी में राजनीतिक पक्ष का चित्रण है। पागल कुत्ते कहानी में चरण सिंह पथिक ने गाँव की राजनीति का चित्रण किया है। गाँव में चुनाव लड़ा जा रहा है। चुनाव के हर उम्मीदवार अपने-अपने पैंतरे और तरीके से लोगों से वोट माँग रहा है। उसी समय गाँव का चौथी धोबी को गिरकर कूल्हे में चोट आई। चौथी धोबी की पत्नी बादामी और लड़का श्रीचंद उसके देख-भाल में लग गए। चौथी धोबी धोबियों का पटेल था। उसके इशारे से ही गाँव के सभी धोबी अपना वोट डालेंगे। सभी उम्मीदवारों को पता था कि चौथी धोबी के तरफ से तीस वोट आने वाला हैं इसलिए सभी उम्मीदवार उसकी सेवा में लग गए। चौथी के चारपाई के पास अंगूर, सेब, केले, दूध, बिस्कुट और दवाइयों का इतना ढेर लग चुका था कि वह आँख फाड़े हैरत से बस देखे जा रहा था। हर उम्मीदवार आकर बादामी को बोलता था- "पैसों की फिक्र मत करना ताई। एक से लाख तक लगा देंगे। यहाँ से लेकर जयपुर-दिल्ली तक इलाज होगा।"[51] चौथी का हाल खराब हो गया था और उसे अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में सारे उम्मीदवार चौथी को देखने गया। उन उम्मीदवारों में से ही एक था पृथ्वीराज जो चौथी से और बाकी धोबियों से ज्यादा आशा लगाकर बैठा हुआ था। चौथी को बीमारी के साथ-साथ चिंता ने जकड़ लिया था। उसको पता था कि चुनाव के बाद सबको पैसा लौटाना होगा। 'सेवा' के नाम पर सब जो खर्च कर रहे हैं वह चुनाव के बाद ही माँगने के लिए टपक जाएँगे। ये सब चिंता में चौथी पगला गया था। गाँव में ये बात आग की तरह फैल गयी। गाँव के ही अंगुरी खटीकन ने कहा- "वो तो इन गैबियों (उम्मीदवारों) ने तरह-तरह कि गोलियाँ खिला खिलाकर यही गाँव में पागल कर दिया था, वरना कूल्हे कि हड्डी तो कभी कि ठीक हो गयी थी। आग लगे ऐसे चुनाव और ऐसे

इलाज-इलाजियों में...।"[52] चौथी बच नहीं पाया। हरलाल चुनाव जीत गया था और यह बात पृथ्वीराज हजम नहीं कर पा रहे थे, चौथी के घरवालों ने अर्थी तैयार किया और अर्थी उठने ही वाली थी कि वहाँ पृथ्वीराज पहुँच गया और अपने पैसे माँगने लगा। "पहले बीस हजार...फिर अर्थी उठाना।"[53] बादामी जैसे-तैसे बोल पड़ी- "कौन गैबी तुम्हारे द्वार गया था झोली फैलाकर। तुमने वोटों की खातिर हमारी मनाही के भी खर्चा किया। अब हार गए, तो पैसे माँगने आ गए। मेरे धणी की लाश आँगन में राखी है। शर्म नहीं आयी तुझे..। कितना बड़ा जागीरदार है तू...। कितना बड़ा रईस है तू...। वोटों की खातिर कल परसो भीख माँग रहा था हमसे! हमारा वोट! जिसको मना कर दिया। मेरे धणी का हत्यारा है तू...। पागल कुत्ते हो तुम... । हड़क गए...हड़क गए।"[54] किस प्रकार चुनाव के लिए, राजनीति के लिए और पैसों के लिए लोग असंवेदनशील होते जा रहे है पथिक ने उसे सुंदर रूप से चित्रित किया है।

4.3 लोक जीवन का आर्थिक पक्ष:

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के दो कहानियों में लोक जीवन के आर्थिक पक्ष का चित्रण मिलता है। जैसे- 'जल फोड़वा' और 'वह अब भी नंगा है'।

'जल फोड़वा' कहानी से यह पता चलता है कि जल फोड़ना अर्थात किसी कुंए के अंदर जाकर कोई खोई हुई चीज लाना भी एक काम है। लोग सौ दो सौ रूपए के लिए अपनी जान की बाजी भी लगा देते है। कहानी का पात्र रसीद जो एक जल फोड़वा था वह आत्महत्या कर लेता है। कहानीकार के पिताजी और रसीद दोस्त थे। रसीद के मृत्यु के बाद कहानीकार अपने पिताजी से रसीद के बारे में सुन रहा था। जिसे वह चाचा बुलाता था। कहानी में पथिक ने पानी के महत्व के बारे में भी इशारा किया है। किस प्रकार धीरे-धीरे गाँवों की गति शहर की

तरफ हो रही है उसका भी वर्णन किया है। कहानीकार के पिताजी अपने दोस्त रसीद और उसके बेटे के बारे में कहानीकार को बताता है। लेखक किसी न किसी प्रकार से अपने पिताजी के मुँह से रसीद के मृत्यु का कारण जानना चाहता था लेकिन वह हकीकत बता नहीं रहे थे और एकटक आसमान में उड़ते बादलों को घूरे जा रहे थे। जैसे-तैसे लेखक के पिताजी ने अपनी चुप्पी तोड़ी और बस चंद शब्दों में उन्होंने हकीकत बया की- "कमबख्त वो कुआँ और वो पाँच बीघा जमीन रसीद के जाली दस्तखत करके महंगे दामों में शहर के एक सेठ को बेचकर रातों-रात फरार हो गए दोनों। रसीद को पता चला तो भागा-भागा मेरे पास आया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। रसीद को जमीन की ज्यादा फिक्र नहीं थी मगर वो कुआँ उसे अपनी जान से ज्यादा अजीज था। उसे न जाने क्यों यकीन था कि सूखा कुआँ एक दिन जरूर मीठे पानी से लबालब हो जाएगा। गंभीर नदी फिर से बहने लगेगी जमीन के गोशो-गोशो में एक दिन पानी ही पानी होगा। पगला गया था शायद मेरा भाई...?"[55] यह सुनने के बाद लेखक के सामने जैसे पूरा का पूरा सच्चाई खुल गया। उसके मुँह से सिर्फ एक ही बात निकली- "मैं...मैं पानी बचाकर रखूँगा...रसीद चाचा।"[56]

'गौरू का लैपटाप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह के तीन कहानियों में आर्थिक पक्ष का चित्रण मिलता है। जैसे- 'एक निकम्मे की तीन टक्करे', 'सपने' और 'कोई जादू है क्या'।

'एक निकम्मे की तीन टक्करे' कहानी एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसे हर कोई निकम्मा समझता हैं। यहाँ तक उसकी माँ भी कहती है- "मुझे उसके निकम्मेपन का आभास जब वह पेट में था, तभी हो चुका था।"[57] यह आदमी एक कलाकार है और इसके नाते ही उसे विभिन्न संघर्षों का सामना करना पड़ा। उसके सामान्य माता-पिता जो कला को अच्छा नहीं मानते क्योंकि इससे गुजारा नहीं हो पाता और इसलिए वह घर से भी बेघर हो जाता है। उसके इन संघर्षों के साथ-साथ एक अधूरी प्रेम कहानी को भी पथिक ने दिखाया है। जीवन में

सफल नहीं हो पाने के कारण उसे अपने प्रेम को भी भूलना पड़ा। समाज के हिसाब से कुछ नहीं कर पाने के कारण उससे उसका सबकुछ छीन जाता है- घर-परिवार, उसका प्रेम यहाँ तक उसका सम्मान भी। कहानीकार ने कुछ ऐसे कलाकारों का भी जिक्र किया हैं जो अपने आपको बहुत बड़े, मंज़े हुए और महान दिखाने कि कोशिश में किसी भी हद तक गिर जाते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण ही उसे इन स्थितियों का सामना करना पड़ा।

'सपने' कहानी वंशीलाल नामक पात्र और उसके परिवार की कहानी है। हर व्यक्ति सपना देखता है लेकिन एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के आदमी को सपने देखने ले किए भी सोचना पड़ता है। जब वह एक परिवार का मुखिया होता है तब तो उसे सपने देखने का हक भी नहीं होता। उसका कर्त्यव बन जाता है कि वह सिर्फ अपने परिवार वालों का सपना पूरा करे। कहानी में पथिक ने एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के उन संघर्षों को दिखाया हैं जो उन्हें अपने दैनंदिन जीवन में सामना करना पड़ता है। कहानी का मुख्य पात्र है बंशीलाल। बंशीलाल का बेटा सिर्फ 500 रुपये के लिए एक प्राइवेट जॉब करता है और वेतन से ज्यादा उसे काम करना पड़ता है। एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लिए 500 रुपये का मूल्य क्या होता है उसे पथिक ने बहुत ही सुंदर ढंग से दिखाया है। 'सपने' शीर्षक से पथिक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आशा-आकांक्षा जिस प्रकार से छोटे होते हैं उसी प्रकार उनके सपने भी छोटे होते हैं। बंशी बाबू के घुटनों में बहुत दर्द रहता है, वह अच्छे से चल-फिर नहीं पाते है। सपने एकबार बंशीलाल के सपने में प्रधानमंत्री जी आए और उन्होंने बंशीलाल को एक माँग रखने के लिए काही। जो भी बंशीलाल माँगेगा प्रधानमंत्री वह माँग पूरा करेंगे। बंशीलाल ने सपने में यही कहा- "मेरी एक माँग यही थी कि... साहब मैं गठिया से बहुत परेशान हूँ। उठने-बैठने में बड़ी तकलीफ होती है। एक किलोमीटर पैदल चलकर दूध लाना पड़ता है। चला नहीं जाता। लगता है, अब जान निकली कि बस पैर लड़खड़ाए...कि अब

बस गिरने ही वाला हूँ। इसलिए साहब, आप जैसी एक छड़ी तो मैंने खरीद ली, मगर घुटनों का महँगा ऑपरेशन नहीं करवा सकता। सो मेरे घुटने का ऑपरेशन करवा दो, बस्स sss।"[58]

'कोई जादू है क्या' कहानी भी एक मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र के पास एक पुरानी होंडा मोटर साइकिल है जिसे वह बहुत सालों से चलाता आ रहा है। वह एक नया मोटरसाइकिल खरीदना चाहता है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह एक नया मोटरसाइकिल खरीद सके। वह एक मास्टर है और उसकी पत्नी मास्टरनी। उनके पास एक भैंस थी और मास्टरनी उसे अपने बच्चे जैसा प्यार करती है। एकदिन मास्टर के घर एक फौजी आया और उस समय मास्टरनी घर पर नहीं थी। फौजी के पास स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल थी जो मास्टर जी को पसंद आ गया और फौजी को मास्टर का भैंस पसंद आ गयी। मास्टर ने मोटरसाइकिल के साथ भैंस का सौदा कर लिया। इस कहानी में पथिक ने निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपने और उनके मजबूरी का चित्रण किया है। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण मास्टर अपनी मन पसंद मोटोरसाइकिल नहीं ले पाया और अपने सपने के खातिर न चाहते हुए भी उसने भैंसों का सौदा किया।

'मैं बीड़ी पी के झूँठ नी बोलता' कहानी संग्रह के 'सर्पदंश' कहानी में आर्थिक पक्ष का चित्रण मिलता है। सर्पदंश कहानी का मुख्य पात्र है ग्यारस्या और वह एक किसान है। ग्यारस्या उन तमाम किसानों का प्रतिनधि है जिनके खेत अति बारिश के कारण या अन्य कारणों से नष्ट हो जाते हैं और अंत में वे मृत्यु को गले लगा लेते हैं। ग्यारस्या कर्ज में डूबा हुआ था। वह कर्ज चुकाने के बारे में सोच ही रहा था कि एकदिन बहुत जोड़ से बारिश होने लगी। खेतों में घुटनों तक पानी भर गयी। पंद्रह-बीस दिन तक खेत पानी में डूबे रहे। ग्यारस्या पागल हो चुका था। जब मौसम साफ हुआ तो अतिवृष्टि से हुए नुकसान का आकलन करने गाँव-गाँव घर-घर में सरकारी लोग जाने लगे। टी.वी. पर किसानों के हुए नुकसान की भरपाई कैसे हो

इस पर चैनलों में बहस शुरू हो चुका था। उसी सुबह सरकार के लोग ग्यारस्या के गाँव में गया। सरकारी लोगों के साथ गाँव का सरपंच, ग्राम-सचिव, ग्राम-सेवक, पटवारी आदि सब ग्यारस्या के खेतों पर पहुंचे। सरपंच ने ग्यारस्या के झोपड़ी में झाँक कर देखा तो वह खाट पर मरा पड़ा था। खाट के नीचे कीटनाशक की एक खाली शीशी पड़ी हुई थी। उसकी मुट्ठी में एक कागज था जहाँ लिखा हुआ था- "इंदर राजा थारी...सरकारी थारी।"[59] सरपंच, ग्राम सेवक, पटवारी आदि सबको ग्यारस्या की आत्महत्या का कारण पता था लेकिन अगले दिन स्थानीय अखबारों में खबर छपी- "खेत से चारा काटने वक्त सर्पदंश से एक किसान की मौत।"[60]

4.4 लोक जीवन का सांस्कृतिक पक्ष:

'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह के 'दंगल' कहानी में लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष का चित्रण मिलता है। दंगल कहानी की शुरुआत मच्छीपुरा के दंगल से होती है। दंगल का गवैया है पीरू तेली, बाबु उस्ताद की ढोलक, रमजानी सक्का का हारमोनियम, प्रह्लाद कुम्हार और काडुनाथ के मंजीरे। कहानी में दंगल में गाए गए गीतों का भी उल्लेख हुआ है। जैसे-

ओ पहला पाड़ा की लुगाई बतड़ाई रे

म्हारा देश कू तो खा गया आई-पाई रे

ए रामकली बोली मो कू तो या ही बात को खेद

जे थाली में खावें गैबी करें वा ही में छेद

पहला पाड़ा की लुगाई....[61]

इस कहानी में सांप्रदायिकता का भी चित्रण हुआ है और यह प्रस्तुत पंक्तियों से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

'गौरू का लैपटाप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह के 'यात्रा' कहानी में लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष का चित्रण मिलता है। यात्रा कहानी में पथिक ने ग्राम्य अंचल में होने वाले धार्मिक पदयात्राओं का वर्णन किया है। एक ही गाँव में दो दो पदयात्रा का आयोजन किया जाता है। एक तरफ बजरंगदास की छत्रछाया में गोवर्धन महाराज की पदयात्रा और दूसरे तरफ भगत शिरोमणि के सान्निध्य में कैलादेवी की पदयात्रा। गाँव के सभी लोग कैसे दो तरफ बट जाते हैं और पदयात्रा में किस प्रकार का परिवेश होता है उसका वास्तविक चित्रण पथिक ने अपने इस कहानी में किया है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह के 'ठंडी गदूली' कहानी में पथिक ने 'रसिया' गीत और 'टुम्मर' गीत का उल्लेख किया है। जैसे- कहानी का पात्र अंगुरी 'टुम्मर' गाती है-

"जाड़ो बैरी करगौ गदूली य ठंडी,
कहाँ सोयो बलम पाखंडी ओ बैरी... ।"[62]

उसी प्रकार अंगुरी रसिया भी गाती है-

"तेरी सी चराई छोरा मेरी होती तो पल क्या पै गाँव अधर धरती इ तेरी सी...!"[63]

चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में लोक जीवन के विभिन्न पक्षों (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक) का सजीव चित्रण किया है। अतः उनकी कहानियों में बृहत परिमाण में लोक जीवन का वर्णन मिलता है।

संदर्भ:

1. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 16

2. वही, पृ. 57

3. वही, पृ. 59

4. वही, पृ. 62

5. वही, पृ. 64

6. वही, पृ. 64

7. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 27

8. वही, पृ. 27

9. वही, पृ. 45

10. वही, पृ. 48

11. वही, पृ. 52

12. वही, पृ. 52

13. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक,पृ. 48

14. वही, पृ. 48

15. वही, पृ. 53

16. वही, पृ. 53

17. वही, पृ. 54

18. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 27

19. वही, पृ. 27

20. वही, पृ. 27

21. वही, पृ. 28

22. वही, पृ. 28

23. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 09

24. वही, पृ. 10

25. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 16

26. वही, पृ. 16

27. वही, पृ. 16

28. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 29

29. वही, पृ. 32

30. वही, पृ. 76

31. वही, पृ. 76

32. वही, पृ. 76

33. वही, पृ. 77

34. वही, पृ. 79

35. वही, पृ. 79

36. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 18

37. वही, पृ. 98

38. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 98

39. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 58

40. वही, पृ. 58

41. वही, पृ. 58

42. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 55

43. वही, पृ. 55

44. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 13

45. वही, पृ. 13

46. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 126

47. बात यह नहीं है, पृ. 74

48. वही, पृ. 74

49. पीपल के फूल, पृ. 112

50. वही, पृ. 114

51. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, पृ. 117

52. वही, पृ. 118

53. वही, पृ. 120

54. वही, पृ. 120

55. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 62

56. वही, पृ. 62

57. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 21

58. वही, पृ. 59

59. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 46

60. वही, पृ.46

61. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 67

62. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 97

63. वही, पृ. 98

पंचम अध्याय

चरण सिंह पथिक की कहानियों का शिल्प-विधान

'शिल्प' शब्द के लिए अंग्रेजी में 'टेकनीक' (Technique) शब्द का प्रयोग होता है। "शिल्प का तात्पर्य है- बुनावट अथवा बनावट। वस्तुत: किसी वस्तु या रचना के निर्माण में जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, उसे ही शिल्प कहते हैं।"[1] शिल्प-विधान के जरिए रचनाकार अपनी जीवनानुभूतियों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक संवेद्य और सौंदर्यमूलक बनाता है। "अंग्रेजी भाषा में जिस विधि के लिए 'टेकनीक' शब्द प्रयुक्त होता है हिंदी में उसे 'शिल्प' कहा जाता है। 'शिल्प' शब्द के पर्याय के रूप में आर्तिस्ती, फार्म, कंस्ट्रक्शन, क्रैफ़्ट, मैकेनिक्स सेटिंग, स्ट्रक्चर आदि शब्दों का प्रचलन है।"[2]

"साहित्य अथवा कला के संदर्भ में शिल्प का अभिप्राय साहित्यिक कृति अथवा कलात्मक वस्तु के निर्माण की विधि से है। 'शिल्प' न केवल एक परिणामगत कलात्मक सौंदर्य है, अपितु यह उस सौंदर्य को सिद्ध करने की प्रक्रिया भी है। अतएव शिल्प के अंतर्गत वे सभी उपविधियाँ, प्रविधियाँ, तरीके, क्रियाएँ, प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनके द्वारा कलाकार कलात्मक सौन्दर्य की सिद्धि करता है। दूसरे रूप में शिल्प वस्तु, विषय अथवा अनुभूति को अभिव्यक्ति करने की प्रक्रिया का वैशिष्ट्य है, जो कलाकृति की सम्पूर्ण सार्थकता तथा सौंदर्य के लिए किए गए सभी विधान, व्यवस्थाएँ, विधियाँ, आवास और प्रयास रूप गठन और रुप योजनाएँ शिल्प में सम्मिलित हैं।"[3]

"जब भाव और अनुभूति मनुष्य के मन और मस्तिष्क में घनीभूत होती है, तब वह उसकी अभिव्यक्ति में संलग्न होता है। अभिव्यक्ति के लिए कभी वह वाणी का सहारा लेता है, कभी आकृति का, लेकिन वह अपने भाव-प्रकाशन में अधिक से अधिक रोचकता, आकर्षण और प्रभुविष्णुता लाने के लिए अन्यान्य रूप-विधानों की योजना करता है। यही रुप-विधान-योजना की प्रवृत्ति कहानी को जन्म देती है और उसके विभिन्न रूप कहानी की शिल्प विधि के प्रेरक होते हैं।"[4]

"लेखक अपने लेखन को स्पष्ट और प्रभावी बनाने के लिए शिल्प का प्रयोग करते है। वस्तुत: यह शिल्प विधान एक माध्यम है- अरूप और रूप के बीच, अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच। यह ऐसी कला है जिसका आश्रय प्रत्येक कवि (कलाकार) को लेना पड़ता है। हाँ, सफलता की मात्रा प्रतिभा के अनुसार बदलती रहती है।"[5]

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने शिल्प की परिभाषाएँ दी हैं:

डॉ. त्रिभुवन सिंह के अनुसार- "शिल्प अथवा रचना-विधि का सम्बंध उस परिणति से है, जो कृति को सभी रचना-विधायक तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है।"[6] उन्होंने फिर से कहा है- "साहित्य में अभिव्यक्ति पाने वाले जितने प्रसंग, व्यक्ति अथवा समाज होते है, उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए, यदि शिल्प न हो। कल्पना और यथार्थ के भेद को समाप्त करने का कार्य शिल्प ही करता है, जिसके माध्यम से अभिप्रेत भावों अथवा उद्देश्यों का रूपांतरण सम्भव होता है।"[7]

राजेंद्र यादव के अनुसार- "जिन संवेदना-चित्रों से लेखक अपने अनुभवों-अनुभूतियों को पाता है, उन्हें अधिक समृद्ध, सम्पादित और सार्थक करके अधिक मुक्ति पूर्ण ढंग से अनुशासित

करके, इस प्रकार संप्रेषित करता है कि वे दूसरों के लिए भी संवेदनीय बन जाएँ, उन संवेदना चित्रों को अधिकाधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए लेखक क़ो शिल्प का सहारा लेना पड़ता है।"[8]

डॉ. श्यामनंदन किशोर के अनुसार- "शिल्प विधान एक माध्यम है अरूप और रूप के बीच, अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच, कवियों और पाठकों के बीच। यह ऐसी कला है जिसका आश्रय प्रत्येक कवि लेखक को लेना पड़ता है।"[9]

डॉ. रेणु शाह के अनुसार- "संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा में शिल्प तथा क्राफ्ट शब्दों का प्रयोग व्यापक एवं संकुचित दोनों अर्थों में मिलते हैं। दोनों में ही कौशल पूर्ण रचना के अर्थ को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार क्राफ्ट शब्द को ही शिल्प का पर्याय स्वीकार करना उचित है।"[10]

इंद्रनाथ मदान के अनुसार- "अनुभव का घनीभूत स्फूरण अभिव्यक्ति के समय जो भी रूप धारण कर लेगा वही उसका शिल्प बन जाता है। इस अनुभव के स्मरण को निश्चित रूप का चोला पहनाने का जब कभी प्रयत्न होगा तब इस अनुभव की स्मरण की तीव्रता कुछ सीमा तक घट जाएगी। ऐसा आज का साहित्यकार मानता है- शिल्पगत विवेचन का अर्थ है- अनुभूति और अभिव्यक्ति में सामंजस्य की खोज करना।"[11]

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार- "कला के विभिन्न तत्वों एवं उपकरणों की योजना का वह विधान, वह ढंग जिसमें कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाएँ, शिल्प कहलाती है।"[12]

जैनेंद्र के अनुसार- "टेकनिक उस ढाँचे के नियमों का नाम है पर ढाँचे की जानकारी की उपयोगिता इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आए। वैसे ही 'टेकनीक' साहित्य सृजन में योग देने के लिए है।"[13]

डॉ. महेश चंद्र शर्मा के अनुसार- "शिल्प के माध्यम से ही लेखक अनुभावों को सम्यक कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में समर्थ होता है।"[14]

मार्क स्कोरर के अनुसार- "वस्तु या कोरी अनुभूति और रूपायित विषय वस्तु या कला में जो पार्थक्य है, वही शिल्प विधि है।"[15]

राइट मौरिस के अनुसार- "अध्ययन और प्रयोगशाला के लिए शिल्प विधि और कच्चा माल दोनों आवश्यक हैं। कच्चे मल से तात्पर्य उस अनगढ़ धातु से है (जीवन या अनुभूति) जो कल्पना की प्रक्रियाओं से अभी नहीं गुजरी हो। शिल्प विधि से तात्पर्य उस प्रक्रिया या तरीकों से है जिनके द्वारा कलाकार उस अनगढ़ धातु को पिघलाकर मनुष्य के लिए उपादेय बना देता है।"[16]

पर्सी लुब्बक के अनुसार- "सुनिर्मित पुस्तक वही है जिसका सारा शिल्प विषय की अभिव्यक्ति करे और सारा विषय शिल्पित हो जाये।"[17]

केम्बल डबल डे के अनुसार-"श्रेष्ठ प्रविधि का तात्पर्य है कि सही बात को सही समय पर सही ढंग से कहना, विषय वही चुनो जो रुचे। ततपश्चात ऐसी शैली अथवा शिल्प का चयन करो जिसके सहारे यह विषय पाठकों तक मार्मिक ढंग से संप्रेषित किया जा सके।"[18]

श्री कारपेंटर के अनुसार- "कलाकार किसी पूर्व निश्चित रूपरेखा के तथ्यगत आधार पर अपनी रचना भले न करें फिर भी उसके मस्तिष्क मे समस्त उपादानों द्वारा निर्मित साहित्य का एक झिलमिल ढाँचा अवश्य तैयार रहता है। शिल्प विधि के इंद्रियगत तथा विविक्त, सभी उपकरणों द्वारा अनुभूति से अभिव्यक्ति तक की दौड़ में यह कार्य अपने आप सम्पन्न होता है। कल्पना, स्मृति, संस्कार, सौंदर्य प्रियता सभी का समवेत प्रयास का उत्कृष्ट रूप रचना कहा जाता हैं, जिसमें शिल्प विधि को सरलता पूर्वक खोजा जा सकता है।"[19]

टालस्टय के अनुसार- "जब तक कला का रूप उपयुक्त न होगा तब तक कोई भी कहानी, गीत, लय, चित्र, मूर्ति, नृत्य-नाटक अथवा आभूषण और इमारत अपने रचयिता के मनोभावों को दशकों तक पहुंचाने में असमर्थ रहेगी। किसी वस्तु की कलात्मक्ता उसके बाहरी रूप पर निर्भर है।"[20]

विलियाम वान और कान्नर के अनुसार- "रूप तो विचार का बाहरी परिधान है। अतएव यह रूप जितना ही विचारानुकूल होगा, उतना ही वह उत्कृष्ट माना जाएगा।"[21]

हावर्ड फास्ट के अनुसार- "यद्दपि यह सत्य है कि श्रेष्ठ लेखन कुछ सीमा तक शिल्प सम्बंधी अभ्यास के अभाव में अस्तित्व प्राप्त नहीं कर सकता और यह भी सत्य है कि ज्ञान की भाँति शिल्प के भी अनेक स्तर होते हैं। यह दोनों का सर्वोच्च स्तरीय सम्न्व्यय है, जिसे प्रतिभा कह सकते हैं।"[22]

5.1 भाषा:

"'भाषा' शब्द संस्कृत के भाष् धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है- व्यक्त वाणी। एक प्रकार से इस धातु के अर्थ में ही भाषा का लक्षण विद्यमान है। व्यक्त वाणी का अर्थ है- स्पष्ट और पूर्ण अभिव्यंजना और वह उच्चरित या वाचिक भाषा से ही संभव है जिसमें सूक्ष्म अर्थों के बोधक अनंत ध्वनि-संकेत हैं।"[23]

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थों में किया जाता है। सामान्यत: भाषा का प्रयोग बोलचाल के लिए किया जाता है। भाषा वह माध्यम है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने विचारों को एक दूसरे के समक्ष प्रकट करता है। भाषा मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग है। भाषा एक अर्जित संपत्ति है और इसका अर्जन समाज से किया जाता है।

"भाषा पूर्णत: आदि से अंत तक समाज से संबंधित है। उसका विकास समाज से हुआ है, उसका अर्जन समाज से होता है और उसका प्रयोग समाज में ही होता है।"[24] सभी साहित्यिक विधाओं की जननी भाषा है। सिर्फ साहित्यिक विधाओं की नहीं बल्कि सभी ज्ञान की जननी भाषा है। बिना भाषा के साहित्य की कल्पना हो ही नहीं सकती।

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने भाषा की परिभाषाएँ दी हैं-

पी.डी.गुणे के अनुसार- "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा हृदयगत भावों तथा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"[25]

बाबूराम सक्सेना के अनुसार- "जिन ध्वनि-चिह्नों द्वारा मानुष परस्पर विचार विनिमय करता है, उसे भाषा कहते हैं।"[26]

सुकुमार सेन के अनुसार- "अर्थवान, कंठोदगीर्ण ध्वनि-समष्टि ही भाषा है।"[27]

हेनरी स्वीट के अनुसार- "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"[28]

ओत्तो येस्पर्सन के अनुसार- "मनुष्य ध्वन्यातम्क शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क वस्तुत: विचार प्रकट करने के लिए ऐसे शब्दों का निरंतर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्य-कलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती।"[29]

ब्लॉक तथा ट्रेगर के अनुसार- "A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group co-operates."[30]

चरण सिंह पथिक की सृजनात्मकता की महत्वपूर्ण आयाम उनकी भाषा है। पथिक ने अपनी कहानियों में वर्ण विषय की आंतरिक संरचना के अनुरूप पात्रानुकूल, व्यंग्यात्मक, सांकेतिक भाषा, बिम्बात्मक और प्रतीकात्मक, आलंकारिक, सांकेतिक आदि भाषा विशेष का प्रयोग कर अपनी अनुभूतियों की सक्षम अभिव्यक्ति की है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में भाषा के विविध रूप दिखाई देते हैं। उनकी भाषा में ज्यादातर ग्रामीण शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनकी कहानियों में अंग्रेजी, ऊर्दू, राजस्थानी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्होंने प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

शब्द भण्डार: चरण सिंह पथिक का शब्द भण्डार अत्यंत समृद्ध है। चरण सिंह पथिक ने पात्रों की स्थिति को वास्तविकता प्रदान करने के लिए विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग

किया है। उनकी कहानियों में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, द्विरुक्ति, संयुक्त, ध्वन्यात्मक आदि शब्दों का प्रयोग किया है। उदाहरण-

देशज शब्द- झल्लाना, कुढ़ना, यार, दुबकना, घूरना, बर्बराना आदि।

तत्सम शब्द- दिनचर्या, किरण, दक्षिण, वृद्ध, उद्घोषणा, आशंका, परिवर्तन, परीक्षा आदि।

तद्भव शब्द- हल्लू, मुबाल, टैम, टेलीफोनिया, गोर्मेंट, गेंहूँ, घर, घोड़ा, चिड़िया, बच्चा, बहन, नींद, बात, पूरब, पानी, होंठ, धक्का, दूध, पेट, रात आदि।

विदेशज शब्द- विदेशज शब्दों में अंग्रेजी, फारसी, अरबी, ऊर्दू आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे:

अंग्रेजी शब्द- ड्राइवर, मोबाइल, टीवी, मिलिट्री कैंटीन, टेंशन, मल्टी स्टोर, मेम्बर, रेस्ट, डिपार्टमेंट, रिजर्वेशन, ऑफिस, रजिस्टर, सॉरी, डोन्ट माइंड आदि।

फारसी शब्द- नज़दीक, ख़रीदना, बैखौफ, खुशी, कम्बख़्त, ख़ानदान, आदि।

अरबी शब्द- फाइदा, क़रीब, जवाब, फुरसत, फायदा, ज़ाहिर, ख़राब, इलाका, कीमती, खातिर, ग़रीब, हक़ीक़त, वक़्त आदि।

उर्दू शब्द- नज़र, तरफ़, एहसान, आवाज़, चीजें, सिर्फ, आदमी, औरत आदि।

राजस्थानी शब्द- 1. "सुण, जीवती माखी कोई भी ना निगलै। औतर मेरा खसम और तेरा भाई है। ई को ओडौ-मोडौ परदा में ही ठीक है।"[31]

2. “महतारी केssदीदे फूट गए काsss?”[32]

3. “ नाशगई, तेरा ख़सम होगा टिंडा! तू होगी टमाटर की लुगाई। तेरे दीदे चौड़े-फट्ट में फुट गए काss!”[33]

4. “आsss मैं बणाउ तोय वीरौठनी।”[34]

द्विरुक्ति शब्द- गिरते-गिरते, छोटे-छोटे, नये-नये, कभी-कभी, अपना-अपना, खोजते-खोजते, सुनते-सुनते, दूर-दूर, पसीने-पसीने, अपनी-अपनी, लेटे-लेटे, साथ-साथ, गाँव-गाँव, गीली-गीली, जाते-जाते, बारी-बारी, कैसी-कैसी आदि।

संयुक्त शब्द- बाल-बच्चे, रंग-रूप, हाँफता-गिरता, भाई-बंधु, रोटी-सब्जी, लेना-देना, खुन-पसीने, हार-जीत, तीन-चार, चारा-पानी, लेना-देना, नई-नवेली, गोबर-पानी, जैसे-तैसे, खेती-बाड़ी, घर-परिवार, दिन-रात आदि।

ध्वन्यात्मक शब्द: ध्वन्यात्मक शब्द अर्थात जिन शब्दों से ध्वनन की प्रतीति हो। जिन शब्दों को सुनने में ध्वनि की आवृत्ति होती है। जैसे- गाड़ी की आवाज, मशीन की आवाज, चिड़िया की आवाज आदि। पथिक की कहानियों में ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। उदाहरण-

1. “चैन-चक्का भी खचड़-खचड़ करता था।”[35]

2. “सुजुकी भट-भट करती ढेर-सा धुँआ उगलती चल पड़ी थी।”[36]

3. “उसके कोटरों में रहने वाली गिलहरियों ने बाहर निकलकर ‘टिल्लsss टिल्लsss’ की आवाजों से सामूहिक शोक मनाया।”[37]

4.“मगर ये क्या..? उसकी आवाज़ को क्या हुआ? गेंदालाल की जगह कुकड़ूँ ssss कूँ ssss.... कुकड़....कूँ sssss!!”[38]

5. “बशीर बैंड पार्टी में पूं- पूं करता-करता नशेड़ी हो चुका है।”[39]

बिम्बात्मक भाषा: कहानी की भाषा में बिम्बों के प्रयोग से कहानी अलंकृत होता है। ‘बिम्ब’ शब्द अंग्रेजी के ‘image’ शब्द का पर्याय है। जब पाठक किसी कहानी को पढ़ते है तब उनके मन में एक छवि बनती है, यही छवि बिम्ब कहलाती है। बिम्ब प्रयोग साहित्यकार की अतिरिक्त कलात्मक क्षमता का परिचायक होता है।

बिम्ब का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए डॉ. रमेश जगताप ने लिखा है- “किसी व्यक्ति का चरित्र वस्तु को केंद्रित कर उसका चित्रण करना यही उद्देश्य बिम्बात्मक भाषा का होता है।”[40]

कहानी में बिम्ब और प्रतीकों के उपयोग की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए उपेंद्र नाथ अश्क ने कहा है- “उपमाऐं प्राय: बाहर की स्थितियों को समझने में सहायता देती हैं, बिम्ब और प्रतीक मन की स्थितियों को समझने में सहायक होते है। कई बार जिस मानसिक स्थिति को समझने के लिए पैरे और पृष्ठ रंगने की आवश्यकता होती है वह एक बिम्ब अथवा प्रतीक के माध्यम से समझा दी जाती है।”[41] चरण सिंह पथिक ने स्थिति और संदर्भ को देखते हुए अपनी कहानियों में बिम्बों का प्रयोग किया है। जैसे:

1. “उस घर का एक दरवाज़ा पूरब दिशा में अंदर की ओर खुलता था। पूरब दिशा के दरवाज़े के सामने भैंसों का बाड़ा था। बाड़े में एक जवान नीम का पेड़ था। गोबर की गंध थी। भैंसों के गाहे-बगाहे रेंकने का शोर था।”[42]

2. “मेरी दुकान बजार के बीचों-बीच थी। सामने की लाइन में मेरे ठीक सामने नरेश गोल-गप्पे वाले की दुकान थी। उसके बाऐं बाजू में प्रह्लाद प्रजापत का चाय का छोटा सा होटल, फिर आगे परचूनी और कपड़ों की दुकानें थीं। मेरी वाली लाइन में मेरे आजू-बाजू एक परचून, एक कपड़ा और एक दुकान दवाइयों कीं थी। बीच में गाँव का छोटा सा पोस्ट-ऑफिस था। पीछे वाले मुहल्ले में प्रजापत रहते थे। जिसका रास्ता मेरी दुकान से बाईं तरफ तीन दुकानें छोड़कर था। वह एक बेहद संकरी-सी गली थी जो अक्सर पानी-कीचड़, ह्राव (आंवा) की राख और बेकार मटकियों के ठीकरों से अँटी रहती थी।”[43]

3. ऊँचा क़द, चौड़ा माथा। नुकीली मूँछें और सुतवां नाक, बड़ी-बड़ी आंखें, जिनमें अब भी जमींदार मीणों के सामंती अवशेष बचे हुए थे।”[44]

4. चपटी नाक और औसत से थोड़े बड़े कान। लगभग अधनंगा। बदन पर एक नीले रंग की नायलॉन की सिलवटों से सिकुड़ी पुरानी बुशर्ट थी जिसके काज-बटन जर्जर हालत में थे। वह सिकुड़कर आधे पेट के करीब नाभि से ऊपर आ गई थी।”[45]

5. “एक महीना हो चुका है, गंगाराम का वज़न दस किलो कम हो चुका है। चेहरा और सांवला होकर चुसे हुए नीबू-सा हो गया।”[46]

6. “साँवला रंग और तीखे नाक-नक्श अब मात्र बीते युग की कहानी बनकर रह गए थे। माँ सूखकर छुहारा जैसी हो चली थी।”[47]

उक्त उदाहरणों के माध्यम से पथिक ने विषय को बिम्बों के द्वारा साकार किया है।

प्रतीकात्मक भाषा: चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया है, जिससे भाषा-सौंदर्य की वृद्धि होती है। पथिक ने अपनी कहानियों की संवेदनाओं को प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

1. "सुन भैणा... । तेरी हार सिर्फ तेरी नहीं...इस धरती की हार है। धरती हार गई तो प्रलय होगी... । तू चाहे मेरी अंगिया में घेसुआ बना ले। चाहे मेरे घाघरे में अंडा दे ले। पर हारना मत..."[48]

'कैसे उड़े चिड़िया' कहानी में चित्रित चिड़ा-चिड़ी प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। चिड़ा-चिड़ी के जरिए पथिक ने स्वामी-स्त्री के सम्बंध को दिखाया है। साथ ही स्त्री मन का चित्रण किया है।

2. 'मुर्गा' कहानी का शीर्षक पथिक ने प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। यहाँ 'मुर्गा' के जरिए गंगाराम नामक पात्र की जीवन दशा को दिखाया गया है।

"उसने अपनी गर्दन पर हाथ फेरा। उसे लगा उसकी गर्दन गायब है। उसने खड़े होकर गेंदालाल को नाम लेकर पुकारा! मगर ये क्या...? उसकी आवाज़ को क्या हुआ? गेंदालाल की जगह कुकडूssss कूँsssss....कुकड़...कूँssss!!"[49]

3. 'कसाई' शीर्षक कहानी में पथिक ने 'कसाई' शब्द को निर्दयी के प्रतीक के रुप में प्रयोग किया है।

अलंकारिक भाषा: अलंकारिक भाषा के प्रयोग से कहानी में चारुता उत्पन्न होती है, साथ ही अधिक जीवंत हो उठती है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण-

1. 'सर्पदंश' कहानी में "रतनी की आँखें रोते-रोते सूजने लगी। भैंसे उसके लिए माँ जायी से कम नहीं थी।"[50]

2. 'जल फोड़वा' कहानी में "तो वे हँसकर अपनी हल्की गुलाबी दाड़ी पर हाथ फेरकर कहते, "पानी इंसान जैसा दगाबाज नहीं है बेटा।"[51]

3. 'बक्खड़' कहानी में "और फिर वह अपना माथा बापू को दिखाती। बापू के ख़ौफ से माँ बकरी की तरह मिमियाने लगती।"[52]

4. "तुम मेरे सोने जैसे बेटे में काई (जंग) लगाना चाहती हो.. ।"[53]

चित्रात्मक भाषा: कहानीकार अपनी कहानियों में जब किसी प्राकृतिक दृश्य या वातावरण या अनुभूत प्रसंगों का चित्रण करता है, तब वह भाषा चित्रात्मक भाषा कही जाती है। चित्रात्मक भाषा के जरिए किसी भी स्थिति का वर्णन हमारी आँखों के सामने एक चित्र के जैसे उभरता है। चरण सिंह पथिक की अपनी कहानियों में दृश्यों का हू-ब-हू वर्णन मिलता है। उदाहरण-

1. "रबी की फसल पक चुकी थी। गेहूँ की बालियाँ सुनहरी नज़र आने लगी थीं। सरसों कट चुकी थी। जिधर देखो उधर चिड़ियाऐं चीं-चीं करती नज़र आती। फसल तथा पेड़ों पर चिड़ियों ने अपना कब्ज़ा कर रखा था। सर्दी अपने पीहर जा चुकी थी और गर्मी की जवानी धरती के कोने-कोने पर अपने गुनगुने रूप की आभा बिखेरती ससुराल की ओर बगटूट दौड़ने

लगी थी। ये मार्च का महीना था। चिड़ियों के हूकने का मौसम था। चिड़े दिन भर उनकी आजिज़ी में लगे रहते।"[54]

2. "चिकनी-चौड़ी सड़क के दोनों ओर अजीब किस्म के रोज़ बनते कृषिफार्म और दूर-दूर तक फैले ईंट-भट्ठों की चिमनियों से निकलता काला धुँआ नज़र आया जो विशाल अजगर की तरह आसमान में रेंगता हुआ लग रहा था। किलोमीटर भर दूर उत्तर में वृक्ष विहीन पहाड़, फिर एक सूखा तालाब, नाला और तालाब की पाल पर खजूर के पेड़ों का क्षत-विक्षत झुरमुट तथा पास ही एक पुराना सूखा कुँआ था।"[55]

3. "बहुत दूर-दूर तक सरसों, गेहूँ और चने के लहलहाते हुए खेत। किसी पेड़ या ऊँची जगह से देखो तो लगता- किसी ने धरती पर पिली और हरी मखमली चादर बिछा दी हो।"[56]

भावात्मक भाषा: भावात्मक भाषा का प्रयोग प्रेम तथा करुणा के अवसर पर प्रयोग किया जाता है। पथिक ने अपनी कहानियों में भावात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण-

1. "मेरे अंदर के सारे तटबंध जैसे टूट गए हों। न जाने कैसी बाढ़ थी...? मैं बुक्का फाड़कर रो पड़ा। पिताजी मेरे सीने से लिपट गए। रुलाई का आवेग कुछ कम हुआ तो मैं सिर्फ इतना ही कह सका, मैं...मैं...पानी....बचाकर रखूंगा....रचीद चाचा... ।"[57]

2. "मन तो करता है कि तू सारंगी बजाए और मैं गाती रहूँ। बाबा भरथरी की सौगंध, जोगी के पूतड़ा, घोड़ी और बैय्यर दूसरे के दरवाजे अच्छी लगती है। इनको नेठना कसाले का काम है। दूसरे थोक की नाथनी (जोगन) हूँ। केस-मुकदमा भी होगा। पंचायत भी बैठेगी। घोंटून (घुटनों) में दम हो तो भगा ले जा अंगूरी को...!!"[58]

बोलचाल की भाषा: बोलचाल की भाषा रोज़मर्रा की बातचीत में व्यवहार की जाने वाली भाषा है। जिनमें अक्सर क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग होता है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग मिलता है। उदाहरण-

'ठंडी गदूली' कहनी में घासी और अंगुरी इस प्रकार बात करते है-

"मोट उचाउ का sss?"[59]

"बस की है....?"[60]

"जचै तो पंजोब कर देख लै।"[61]

"अभी जैंगड़ा (गाय का जवान बछड़ा) नथा नहीं है। जब नथ जाएगा तब पंजोखूंगी।"[62]

पात्रानुकूल भाषा: पात्रों को ध्यान में रखकर उनके अनुसार लिखी गई भाषा को पात्रानुकूल भाषा कहलाती है। पथिक ने कहानियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। जैसे-

'मूँछे' कहानी में गूजर एस.टी वर्ग में आरक्षण के मांग के लिए चक्का जाम करने वाले एक पात्र की भाषा इस प्रकार की है-

"तेरी... तो... स्सालेsss हमको चूतिया समझा, ऐंsss! जात छुपाकर बचना चाहता था हरामी। तुमने या तुम्हारी बिरादरी वालों ने हमारी जात के कई लोगों की मूँछे काटी हैं।"[63]

मुहावरे/लोकोक्तियाँ: चरण सिंह पथिक ने अपनी भाषा को सुंदर तथा प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। मुहावरों में बहुत बड़ा अर्थ छिपा होता है। जिन वाक्य में सामन्य अर्थ से भिन्न अर्थ पतीत होता है उसे मुहावरा कहा जाता है। लोकोक्ति अर्थात लोगों की उक्ति। लोकोक्ति को कहावते भी कहा जाता है।

पथिक की कहानियों में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति इस प्रकार है-

मुहावरा:

1. "उजाले में माँ की हालत देखकर नानी ने बाबा, दादी और बापू की 'सात पुश्तों की ख़बर' ले डाली।"[64]

2. "घर की औरतें उसकी पीड़ा से अनजान थीं। सास जानते हुए भी 'आँखें मूंदे' थी।"[65]

3. "फूलबाबू 'रुई के फाहे-सा' नरम होकर बोला।"[66]

4. "हमारा क्या... 'आगे नाथ ना पीछे जेवड़ा' (पगहा) ।"[67]

5. "पेट भरने के तो लाले पड़े थे, पढ़ता कैसे...?"[68]

6. "ठकुराइनों का 'कलेजा जैसे मुँह को आ गया'।"[69]

लोकोक्ति:

1. "करेला और नीम चढ़ा...!! मास्टर...और ऊपर से एससी।"[70]

2. "दो पोई, दो काँख में, रंडुआ लौटे राख में।"[71]

3. "ये तो वही हाल हुआ कि सारी रात पीसा और पाड़ी में सकेला।"[72]

गालियों का प्रयोग: चरण सिंह पथिक की ज्यादातर कहानियों में गालियों का प्रयोग दिखाई देता है। उदाहरण-

1. “हरामजादे, मूला से हार गया। एक बक्खड़ से...ना जाने किसका मूत है ये और तू इसी से मात खा गया। डूब मर मादर... । आ...क्क...थू... ।”[73]

2.“झूठ बोलता है भो...स...! चमारों के पुरखे भी गए हैं कभी फौज में...? जात छुपाता है मा...द...र..s…ss गूजर हो-क-र...!”[74]

3. “किसने मादर...ने मास्टर बनाया तेरे को भैन के मामा...? तुझे चौदह अप्रैल पता नहीं...?”[75]

4. “हमको कसाई कहता है...! नकटी रांड के...! ठहर तो... ।”[76]

5. “कोण भोसडी का कहता है बता...?”[77]

6. “दारी, खसमखाणी को ज्यादा ही आग लगी हुई थी तो तालाब में कूद जाती। रंडी को खसम ही करना था तो मेरा ही कबीला बहुत था।”[78]

डॉट्स भाषा: तनावपूर्ण और भावों को समझाने के लिए भाषा में डॉट्स का प्रयोग किया जाता है। यह प्रयोग कभी वाकयों को अनुमेय छोड़ने के लिए तो कभी अमर्यादित कथन से बचने के लिए होता है। इसे ‘बिंदुक प्रयोग’ भी कहा जाता है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में इस विशिष्ट बिंदुक भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण-

1. “सोच लो आप....! आपको इस गाँव में नौकरी करनी होगी.... ।”[79]

2. “नहीं, तुम कहो तो कर दूं...! बोलो...?”[80]

3. “वरना.....क्या करेगा....तू! साले...दो कौड़ी के आदमी....तेरी इतनी हिम्मत..... ।”[81]

4. “कितनी अथाह पीड़ा हुई होगी माँ को..... । कितनी बार किस्मत को कोसा होगा माँ ने.....? विदा के वक्त कितनी रोई थी माँ..... ।”[82]

5. “मुझे देखो! मैं टूट रहा हूँ। अपनी तकलीफ और अपनी चिंताओं से नहीं.....। दुनिया की तकलीफ और चिंताओं से.....!”[83]

6. “दो साल से खेत बंजर....खेतों पर आते-जाते धनजी पटेल, भभूत्या, कभी राधे सरपंच की फब्तियाँ! गलियाँ....मादर....चुनमंगा....हरामी....भरोसी का नशा बढ़ने लगा था।”[84]

7. “लड़ेंगे आपस में....क्या फायदा.... ।”[85]

8. “हाँ.... ।”

“मगर घर में कभी झांक कर नहीं देखा..... ।”

“.....।”[86]

5.2 शैली:

शैली से तात्पर्य है- तरीका या प्रणाली। शैली के जरिए लेखक किसी विषय की गहराई में जाकर अपने अंत:करण का उद्‌घाटन करता है। शैली लेखक की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। डॉ. श्याम सुंदर दास ने भाषा और शैली के महत्व को समझाते हुए लिखा है- “भाषा ऐसे शब्द समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात प्रभावित करने में समर्थ होती है। अतएव भाषा का मूलाधार शब्द है, जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल तत्व समझना चाहिए। अर्थात किसी लेखक या

कवि की शब्द योजना वाक्यांश वाक्यांशों का प्रयोग, वाकयों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[87]

बाबू गुलाब राय ने शैली के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "काव्य में शैली का वही स्थान है जो मनुष्य में उसकी आकृति, वेश-भूषा का। यद्दपि यह हमेशा ठीक नहीं कि जहाँ सुंदर आकृति हो वहाँ सुंदर गुण भी होते हो। तथापि आकृति और वेश-भूषा गुणों के मूल्यांकन करने में बहुत कुछ प्रभावित करते है।"[88]

डॉ. प्रतापनारायन टंडन शैली के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते है- "कथानक, चरित्र-चित्रण, घटनाएँ, कथोपकथन, मनोवैज्ञानिक सत्य आदि के उपन्यास के ऐसे तत्व है, जिनसे पाठक का परिचय धीरे-धीरे ही बढ़ता है, लेकिन जो चीज उसे उपन्यास को पढ़ने के लिए तुरंत प्रेरित करती है वह उपन्यास की शैली ही है।"[89]

भारतीय और पाश्च्यात्य विद्वानों ने शैली की परिभाषा दी हैं। जैसे-

डॉ. श्यामसुंदर के अनुसार- "किसी कवि या लेखक की शब्द-योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि ही शैली है।"[90]

रामदहिन मिश्र के अनुसार- "किसी वर्णनीय विषय के स्वरूप को खड़ा करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चुनाव और उनकी योजना को शैली कहते हैं।"[91]

डॉ. गुलाबराय के अनुसार- "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को सामान्य रूप में दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[92]

बनार्ड शॉ के अनुसार- "प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अर्थ और इति है।"[93]

डॉ. जॉनसन के अनुसार- "शैली सामान्य व्यव्हार में बातचीत करने का ढंग या लहजा।"[94]

प्लेटो के मतानुसार- "जब विचारों को तात्विक रूप दे दिया जाता है तो शैली का उदय होता है।"[95]

रेल्फ सैंडेल के अनुसार- "शैली भाषा के अर्थेतर चयनीकरण का विशेष कौशल है।"[96]

जेम्स स्लेड के अनुसार- "एक कथ्य को कहने की कई प्रणालियाँ होती हैं। स्पष्ट है कि भाषिक 'शैली' भाषिक चयन का ही पर्याय सिद्ध होती है।"[97]

चरण सिंह पथिक की कहानियों में कथा-निरूपण और भाषिक अभिव्यक्ति की विविध शैलियाँ मिलती है। जैसे- वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक संवाद, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक, पुर्वदीप्ति और पात्रहीन आदि। पथिक द्वारा प्रयुक्त शैलियां सोदाहरण प्रस्तुत है-

वर्णनात्मक शैली: इस शैली में कहानीकार किसी पात्र, चरित्र, घटना, प्रकृति, स्थान आदि का वर्णन करते है। इस शैली के प्रयोग से पाठक वर्ग को कहानी समझने में सुविधा होती है। चरण सिंह पथिक ने अपनी प्राय: कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है। उदाहरण-

'एक निकम्मे की तीन टक्करें' कहानी में पथिक ने इस शैली का प्रयोग किया है- "कंधे पर झूलते हुए काले-घुँघराले केश। मोटे फ्रेम का नज़र का चश्मा। पकौड़ी-सी आँखें। कुछ सफ़ेद कुर्ता। सफ़ेद धोती। धोती की बाईं लाँग हाथ में। पैरों में चमड़े की चप्पल या कपड़े के बिना

फीते वाले जुते। गोरे-चिट्टे स्वामी जी जब अभिवादन में झुकते, तो वह अभिभूत हो जाता और अपने को महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का एहसास करता।"[98]

'खिलौना' शीर्षक कहानी इस शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है- "विमली ने चूल्हा सुलगाकर चाय के लिए पानी चढ़ाया। भरोसी अब भी खर्राटे ले रहा था। उसने उसे जगाया। रजाई खींच कर अलग की। भरोसी कुनमुनाया। विमली ने खीझकर कहा, 'कब तक सोते रहोगे? काम पर नहीं जाना क्या?' भरोसी चारपाई से नीचे उतरा। परेंडी से एक लोटा पानी लिया। मुँह धोकर कुल्ला किया। फिर एक लोटा पानी पीकर पुन: चारपाई पर जा बैठा, चुपचाप। विमली ने चाय छानते हुए फिर कहा, 'ऐसे नागा की तो हो गया कल्याण!' उसने एक कप भरोसी को पकड़ाया। बच्चों को दी और खुद एक कप लेकर नीचे चटाई पर बैठ गई। भरोसी धीरे-धीरे चाय सुड़कने लगा।"[99]

'लाल किले का जिन्न' कहानी में वर्णनात्मक शैली को कुछ इस प्रकार दर्शाया गया है- "यह जनवरी का सर्द महीना था। सूरज ढल चुका था। हवा में ठंडक थी। मैं चूल्हे से पैर अड़ाये ताप रहा था। सर्दियों में चूल्हे से पैर अड़ाकर तापने का कुछ और ही आनंद है। श्रीमतीजी ने चूल्हे पर राबड़ी की हाँडी में रही थी। वह गर्म छाछ को करछूल से हिला-हिला कर बाजरे का दलिया मुट्ठी से थोड़े-थोड़े अंतराल पर हाँडी में डाल रही थी। करछूल एक लय में हिल रहा था। बाहर बैठक में काका बैठे थे। हम पिताजी को काका ही कहते। माँ बच्चों को लेकर अंदर पाटोर में थी। मैंने चूल्हे में एक शकरकंद दबा रखा था। उसे चिमटे से उलट-पुलत करने लगता हूँ।"[100]

विश्लेषणात्मक शैली: इस शैली के जरिए लेखक अपने विचारों को प्रस्तुत करते है। डॉ.पी.बी.कोटमे विश्लेषण का स्वरूप स्पष्ट करते लिखते है- "विश्लेषण का अर्थ 'किसी कृति के विभिन्न अवयवों का अलग-अलग तथा उनके पारस्परिक सम्बंधों का विवेचन'। विश्लेषण के द्वारा हम किसी कृति की अंतरात्मा तक पहुंच जाते हैं तथा व्यापक आनंद के भागी होते है।"[101]

"हाँ, हत्यारा हूँ मैं... । मैं चीख़-चीख़कर सबसे कहता हूँ। मैंने भी अपने ख्वाबों में एक-एक को बेरहमी से कत्ल किया है। सपनों में ही सही, लेकिन मैंनाई उन्हें दौराकर मारा है। वे झुण्ड-के-झुण्ड होते और मैं अकेला! मेरे पास सपनों में उन्हें कत्ल करने कई अलावा कोई विकल्प नहीं था। मेरी ओर आने वाली सुख की हर लहर को उन्होंने अपनी ओर मोड़ लिया था। दुखों का बजबजाता दरिया हमारी ओर खोलकर वे किनारे पर तमाशा देखने आज भी खड़े हैं। हम बहे जा रहे हैं लगातार। किनारे लगने से पहले ही हमें पत्थर मारकर ख़तम कर दिया जाएगा। एक पूरी नस्ल, हो सकता है, ख़तम कर दी जाए। हमारी औरतों और बहू-बेटियों के पेट में उनके द्वारा जबरन किया गया वीर्यपात नस्ल-परिवर्तन का पहला उद्घोष होगा।"[102]

आत्मकथात्मक शैली: इस शैली में कहानीकार स्वयं को एक पात्र के रूप में रखकर भोक्ता या द्रष्टा के तौर पर कथावस्तु को संगठित करता है। इस शैली को 'मैं' शैली तथा 'आत्मपदीय' शैली भी कहा जाता है। इस शैली के अंतर्गत मैं, मेरा, मुझे आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। उदाहरण-

"मैं कैसे बड़ा हो रहा था....। और तमाम विपदाओं के बीच माँ कैसे मुझे पाल रही थी, यह माँ का जीवट था। तीन साल का हो चुका हूँ। बाबा-दादा मेरी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं

देखते। मैं चाहता हूँ कि दादी मुझे गोद में लेकर चूमे। बाबा मुझे खेतों पर घुमाने ले जाएँ। मैं सब कुछ चाहता हूँ। चांद, तारे, खिलौने-कार, घोड़ा, गुड़िया। मैं चाहता हूँ कि मैं रूठ जाऊँ और बाबा मुझे मनाऐं। दादी मुझे छाती से लगाकर लोरी सुनाए। लेकिन मैं रो रहा हूँ। न जाने कब मेरी नाक बहकर मुँह में आ गई है। माँ खेत पर सरसों की लावणी करने गई है। मेरे पास पहनने को चड्डी तक नहीं है। मैं धूल में लोट-पोट एक रोटी के टुकड़े के लिए धरती-आसमान एक कर रहा हूँ, गला बैठ गया है रोते-रोते। अब और रोया नहीं जाता। दादी उड़ती-सी नज़र मुझ पर डालकर माँ को भद्दी गाली देती हुई उठकर सुंघनी सूंघने लगती है।"[103]

"मैं इंदर के साथ धड़कते दिल से गली में प्रवेश करता हूँ। जूतों कि खट-खट आवाज़ क्या वह अब भी महसूस कर रही होगी...? मैं दूर से उनके दरवाज़े पर आँखों को केंद्रित कर देखता हूँ। कहीं कोई नहीं। उजाड़-सा लगता है। दस वर्ष पहले छूट चुके वक़्त को वापस पकड़ने की एक पागल ज़िद करता हूँ। जिस कमरे में वर्षों रहा, उसके आगे बरामदा बना दिया गया है। गुलाब के पौधों की जगह अशोक, सफेदा और कनेर के पौधे लगे हुए थे। महेंद्र और मेरे वाले कमरे में कोई गृहस्थ रहने लगे थे। बाहर कँटीले तारों पर ब्लाउज, पेटीकोट, कुर्ता-पाजामा तथा बच्चों के कुछ कपड़े सूख रहे थे। आगे गली अब भी बंद थी। मैं काँपते कदमों के साथ इंदर का हाथ थामे उनके आँगन में प्रवेश करता हूँ। भीतर खरपैल की एक कोठरी में बल्ब की पीली रोशनी फैली हुई थी।"[104]

"मैं तय करके ही आया था कि पिताजी अगर आना-कानी करेंगे तो मैं अपना हिस्सा माँगने से हिचकूंगा नहीं। आजकल अच्छी और मौके की जमीन महानगर में मिलती ही कहाँ है? इसलिए मैं किसी भी तरह उस प्लॉट को खरीदने का मन बना चुका था। मगर पिताजी की

उदासी और उनकी आँखों का खालीपन देखकर फिलहाल मैंने भी उचित समझा कि उनको रसीद चाचा के सदमे से उबरने दूँ। चाहे इसके लिए मुझे एक-दो दिन का अतिरिक्त इंतजार क्यों न करना पड़े...!"[105]

संवादात्मक शैली: इस शैली में कहानीकार पात्रों के माध्यम से संवाद करवाता है। संवाद कहानी कला का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अभाव में कहानी केवल वर्णन प्रधान रह जाती। पात्रों के परस्पर संवादों से कहानी में मुखरता आती है। चरण सिंह पथिक ने भी अपनी कहानियों में संवादात्मक शैली का प्रयोग किया है। उदाहरण-

'खिलौना' कहानी में पति-पत्नी के बीच का संवाद कुछ इस प्रकार है-

"'मौन धारण कर रखा है क्या...? जो बोलते नहीं?'

'क्या बोलूं?'

'काम पर नहीं जाना.....?'

'नहीं जाना।'

'क्यों.....?'

'ऐसे ही....! मन नहीं है।'

'मालिक फिर तनख्वाह काट लेंगे!'

'अब तनख्वाह नहीं कटेगी।'

'सच्ची.....।'

'बिल्कुल सच्ची....! मैंने काम छोड़ दिया है।'

'ऐं.....काम छोड़ दिया!!' विमली चौंकी। 'काम क्यों छोड़ा....?'

'मेरी खुशी....!'"[106]

'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस' कहानी में गौरू और गोपाल के बीच का संवाद इस प्रकार है-

"'ठीक हो?'

'मैं तो दुरुस्त हूँ, तुम बताओ।'

'तुम्हारे सामने खड़ी तो हूँ।'

'पहले से ज्यादा स्मार्ट लग रही हो!'

'शुक्रिया! गरमी तेज़ है ना!'

'हाँ, प्रकृति ही हर शौ-वक़्त पर अपनी जवानी दिखाती है।'"[107]

पथिक ने कहानियों में छोटे-छोटे संवादों का भी प्रयोग किया है। 'परछाइयों में गुलाब' कहानी में ऐसे संवादों का प्रयोग हुआ है-

"'किधर...?'

'हमारी तरफ.... ।'

'क्यों.....?'

'जाना है मुझे....?'"[108]

प्रश्नात्मक शैली: इस शैली में प्रश्नों के द्वारा बात-चीत की जाती है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में इस शैली का प्रयोग हुआ है।

'कोई जादु है क्या' कहानी में मास्टर जी और फौजी के बीच का सवाल जवाब इस प्रकार से है-

"'छुट्टी पर हो?'

'हाँ, दो महीने की छुट्टी पर आया था।'

'कब आए...?'

'बस्स...छुट्टी पूरी होने को है। कल जाऊँगा।'

'किस जगह पर हो?'

'लेह में... ।'

'वहाँ तो ठंड और बर्फ ख़ूब होगी!'

'पुछो मत... ।'

'घर पर सब ठीक है...?'

'सब कुशल है। आप सुनाओ!'"[109]

'बीमार' कहानी में पिता और पुत्र के बीच का सवाल-जवाब का उदाहरण इस प्रकार है-

"'तुम्हारी मम्मी कहाँ है?'

'सो रही है अंदर।'

'क्यों?'

'बुखार है।'

'बुखार...? कब से...?'

'दो-तीन दिन हुए हैं।'

'कहाँ है?'

'अंदर वाले कमरे में।'"[110]

पत्रात्मक शैली: एक व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति को कोई लिखित संदेश भेजता है तब उसे पत्र कहते है। पत्र लिखने तथा पढ़ने वाले के बीच कोई तीसरा न हो तब वह आत्मीय वार्तालाप बन जाता है। कहानी में ऐसे आत्मीय संवाद के लिए कभी-कभी उसे एक पत्र की भांति लिखा जाता है। चरण सिंह पथिक ने भी इस शैली का प्रयोग किया है।'लाल किले का जिन्न' कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है। उदाहरण-

"लेख पढ़कर खलील हिंडौनवी ने मुझे एक खत लिखा। खत गुस्से से लबरेज था। खत में ऊपर सलाम-दुआ के बाद लिखा, 'जनाब पोसवाल साब! लेख लिखने के लिए शुक्रगुजार हूँ। आपने मुझे गालिब, मीर, दाग, फिराक...आदि परम्परा का शायर घोषित कर मेरी इज्जत में जो इजाफा किया है उसके लिए शुक्रिया। आप सोचते होंगे- मैं चूतिया हूँ। कुछ भी नहीं समझता हूँ। आपने भी लोगों की तरह मुझे पागल, सनकी समझ लिया है। लेकिन मेरा दावा है, मुझे आज तक सिवा खुदा के कोई भी नहीं समझ सका है। जहाना तक आपने लिखा है कि कुंठाग्रस्त, निराश-हताश, अतिमहत्वाकांक्षी और स्वप्नजीवी इंसान हूं- आप भला मेरी कुंठाओं की वजह क्या समझेंगे....? आप मेरे सपनों का मतलब नहीं समझ सकते। आप मेरी महत्वाकांक्षा नहीं समझ सकते। शायद आपने गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और जिल्लत की जिंदगी नहीं भोगी, वरना आपको पता चल जाता कि कुंठाऐं कैसे पनपती हैं! सपने कैसे

चकनाचूर होते हैं! जिन भाइयों को आठ साल तक साइकिल की पंचर जोड़-जोड़कर, पढ़ा-लिखाकर लायक इंसान बनाया, आज वे ही मदद के नाम पर गलियाँ देते हैं। पागल समझते हैं। आप बता सकते हैं कि ऐसे में मेरी महत्वाकांक्षाऐं दम तोड़ने के सिवा क्या कर सकती हैं.....? खैर, मेरा भी खुदा है। आपने लिखा एहसान किया। मेरे साथ मजाक किया- एहसान यह भी किया। शुक्रिया, फिलहाल मैं श्रीमहावीरजी रह रहा हूँ। आपके गाँव से तो नजदीक ही है। वक्त मिले तो आइयेगा। वहीं बातें होगी। आपके इंतजार में.... । आपका, खलील हिंडौनवी"[111]

उसी प्रकार 'परछायों में गुलाब' कहानी में भी इस शैली को प्रयोग किया गया है-

"निकाह ही तारीख भी बाकायदा इंदर ने पत्र में दी थी। इंदर ने लिखा था- 'ससुराल जाने से पहले वह तुमसे एक बार मिलना चाहती है, तुम्हारी सूरत देखना चाहती है और उसे उम्मीद है कि तुम हर हाल में आओगे।'"[112]

पूर्व दीप्ति शैली: पूर्व दीप्ति शैली को 'फ्लैश बैक' शैली भी कहा जाता है। वर्तमान जिंदगी जीते हुए जब पात्र अपने विगत जीवन की घटना का उल्लेख करते है तब उसे 'पूर्व दीप्ति' शैली कहा जाता है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में भी इस शैली का प्रयोग दिखाई देता है।

'रुदन' कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है। जब कहानी का मुख्य पात्र अतीत के अपने गाँव और परिवार के बारे में सोचता है- "उसे याद आता है- महानगर से अठारह-बीस किलोमीटर दूर तीस साल पहले का अपना गाँव, जो एक साथ हँसता था और एक साथ रोता था। याद आता है- अपने छोटे-बड़े भाइयों के साथ लड़ना-झगड़ना, हँसना। मगर आज न गाँव

बचा और न वे... । घर में हर वक़्त अबोला पसरा रहता। लगता, जैसे सबके सब किरायेदार हों। आजू-बाजू बनते बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स। जिधर देखो, उधर दुकानें-ही-दुकानें। सारे रिश्तों को बाजार लील गया था। गाँव महानगर के विशाल पेट में हज़म हो चुका था। जब माँ थी, तो उससे बड़े लाड़ से कहती, 'बड़के की तरह तू भी अफसर बननाव।' पिता को उम्मीद थी कि वह एक दिन जरूर बड़ा आदमी बनेगा, मगर वह सबकी आशाओं पर तुषारपात कर बना क्या...? कुछ भी तो नहीं। पिता दहाड़ते। माँ अफसोस करती। भाई ताने देकर मुँह बिचकाते। पत्नी अपने नसीब को कसती, 'कविता-कहानी कौन से दुध देंगे? इतनी मेहनत पढ़ाई में की होती, तो आज मैं भी अफसारनी कहलाती।' बच्चे आह भरकर रह जाते और वह स्वयं....। वह स्वयं इन सबसे तटस्थ दूर कहीं खोया अपने में मग्न रहता।"[113]

'बीमार' कहानी में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है-

"तीन बजने में अभी पांच मिनिट शेष थे। ....कि उसे अपना गौना याद आया।

'लालाजी, देवरानी को दबा के रखना। पहले दिन ही तुम्हारा पलड़ा नीचे रहा तो जिंदगी भर कान पकड़े बकरी की तरह म्य-म्य करते रहोगे।' यह उसकी मुँह लगी भाभी की हिदायत थी।

'ओय प्रमोदया स्साले सेर रहना। कहीं हमारी मिट्टी पलीद मत करवा देना।' ये उसके सीनियर-जूनियर दोस्तों की ख़ाहिश थी।

मां ने बड़ी ममतामयी आवाज में समझाया था, 'बेटा! बहू को हमेशा अपने वश में रखना।'

बस ने हॉर्न बजाया। वह वर्तमान में लौटा।"[114]

पात्रहीन शैली: इस शैली में पात्र का कोई नाम नहीं होता। डॉ. शोभा निंबालकर पवार इस शैली को स्पष्ट करते हुए लिखती है- "कुछ कहानीकारों ने पात्राहीन शैली को नए प्रयोग के रूप मे अपनाया है। पात्रों के कोई नाम नहीं मिलते। पात्र सर्वनाम से ही पहचाना जाता है। 'मैं', 'वह', 'तुम', 'उनसे' तथा 'उनको' में कहानी चलती रहती है।"[115]

'बीमार' कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है- "बस स्टॉप तक सवाल उसकी पीठ से चिपका रहा। बस में बैठ चुकने के बाद वह झोले से 'सात आसमान' निकाल, पढ़ने में मन लगाने लगा। आठ-दस पृष्ठ पढ़ने के बाद सवाल फिर प्रेत की तरह 'सात आसमान' के पन्नों पर उतर आया। उसने झटके से किताब बंद की। सिगरेट सुलगायी। बस चलने में अभी देर थी। वह खिड़की की पास वाली सीट पर था। बस लगभग भर चुकी थी।"[116]

चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में प्रभावशाली तथा सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने भावात्मक, अलंकारिक, पात्रानुकूल भाषा के माध्यम से अपनी कहानियों को रोचक बनाया है। मुहावरे, बिम्ब, प्रतीक आदि को प्रयुक्त कर उन्होंने अपनी कहानियों को कलात्मक सौंदर्य से युक्त किया है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में विविध शैलियों का प्रयोग किया है: वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, पूर्व दीप्ति, पत्रात्मक, संवादात्मक,

प्रश्नात्मक शैली एवं पात्रहीन आदि। जिससे इनकी कहानियों की शैली प्रभावशाली बन गई है। भाषा-शैली की दृष्टि से चरण सिंह पथिक की कहानियाँ अत्यंत सफल हैं।

संदर्भ:

1. अंतिम दशक की दिंदी कहानियाँ: संवेदना और शिल्प, डॉ. नीरज शर्मा, पृ. 45

2. शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. पंकज वीरवाल, पृ. 168

3. वही, पृ. 168

4. हिंदी कहानियों का शिल्प विधि का विकास, डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पृ. 04

5. आधुनिक हिंदी महाकाव्यों का शिल्प विधान, डॉ. श्यामनंदन किशोर, पृ. 01

6. हिंदी उपन्यास: शिल्प और प्रयोग, डॉ. त्रिभुवन सिंह, पृ. 240

7. वही, पृ. 25

8. एक दुनिया: समानांतर (भूमिका), राजेंद्र यादव, पृ. 69

9. आधुनिक हिंदी महाकाव्यों का शिल्प विधान, डॉ. श्यामनंदन किशोर, पृ. 136

10. फणीश्वर नाथ रेणु का कथा शिल्प, डॉ. रेणु शाह, पृ. 03

11. हिंदी कहानी: पहचान और परख, डॉ. इंद्रनाथ मदान, पृ. 43

12. हिंदी कहानियों में शिल्प विधि का विकास (भूमिका), डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

13. शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. पंकज वीरवाला, पृ. 169

14. वही, पृ. 169

15. Technique as Discovery Perspective on Fiction, Mark Schorer, P.205

16. The Living Novel, Wtigth Morris, P.121

17. The Craft of Fiction, Percy Lubbock, P.40

18. राइटिंग एडवाइस एंड दिवाइसेस, वाल्टर एस. कैम्बल डबल डे, पृ. 153

19. द वेसिस आर्टिस्ट क्रियेशन इन द फाइन आट्र्स, राइस कारपेंटर, पृ. 41

20. शिवानी के कथा साहित्य में संवेदना और शिल्प, डॉ. पंकज वीरवाला, पृ. 169

21. वही, पृ. 169

22. वही, पृ. 169

23. भाषाविज्ञान की भूमिका, देवेंद्रनाथ शर्मा, दीप्ति शर्मा, पृ. 20

24. भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 51

25. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, बाबूराम सक्सेना, पृ. 66

26. वही, पृ. 22

27. वही, पृ. 22

28. वही, पृ. 21

29. वही, पृ. 21

30. Block and Trager, Out line of Linguistics Malysis

31. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ.14

32. वही, पृ. 23

33. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 80

34. वही, पृ. 82

35. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 98

36. वही, पृ. 99

37. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 116

38. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 54

39. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 77

40. काशीनाथ सिंह का कथा साहित्य, डॉ. जगताप रमेश, पृ. 125

41. मृदुला गर्ग का कथासाहित्य, डॉ. तारा अग्रवाल, पृ. 246

42. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 55

43. वही, पृ. 29

44. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 30

45. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ.30

46. वही, पृ. 51

47. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 30

48. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 59

49. वही, पृ. 54

50. वही, पृ. 46

51. वही, पृ. 71

52. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 29

53. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ.124

54. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 55

55. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 120

56. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 50

57. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 78

58. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 24

59. वही पृ. 24

60. वही पृ. 24

61. वही पृ. 24

62. वही पृ. 24

63.पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 34

64. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 30

65. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 124

66. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 50

67. वही, पृ. 06

68. वही, पृ. 17

69. वही, पृ. 73

70. वही, पृ. 48

71. वही, पृ. 08

72. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 122

73. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 34

74. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 29

75. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 49

76. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 52

77. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 15

78. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 27

79. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 15

80. वही, पृ. 22

81. वही, पृ. 27

82. वही, पृ. 34

83. वही, पृ. 44

84. वही, पृ. 60

85. वही, पृ. 66

86. वही, पृ. 79

87. साहित्यलोचन, श्यामसुंदर दास, पृ. 316

88. धर्मवीर भरती के कथा साहित्य का संरचनात्मक अध्ययन, (अप्रकाशित उपाधिप्राप्त शोधप्रबंध), जयदीप धोबी, असम विश्वविद्यालय, सिलचर (2011), पृ. 237

89. हिंदी उपन्यास कला, डॉ. प्रतापनारयन टंडन, पृ. 296

90. https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/blog-post 19.html

91. https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/blog-post 19.html
92. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
93. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
94. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
95. https://www.knowledgeindiahub.com/2022/02/blog-post.html
96. शैली और शैली विश्लेषण, पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु', पृ. 48
97. वही, पृ. 51
98. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 22
99. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 26
100. वही, पृ. 39
101. श्री लाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, डॉ. पी.बी.कोटमे, पृ. 226
102. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 11
103. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 31
104. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 78
105. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 74
106. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 26
107. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 143
108. वही, पृ. 80
109. वही, पृ. 111

110. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 78

111. वही, पृ. 42

112. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 61

113. वही, पृ. 17

114. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 76

115. हिंदी कहानी और नरी विमर्श, डॉ. शोभा निंबालकर पवार, पृ. 265

116. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 76

षष्ठ अध्याय

समकालीन हिंदी कहानीकारों में चरण सिंह पथिक का स्थान

कहानियाँ हमेशा से हर युग और हर पीढ़ी को प्रभावित करती आ रही हैं। आज भी कहानी का प्रभाव बहुत अधिक है। स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी साहित्य में हिंदी कहानी विधा का जो विकास हुआ है उसमें 'नई कहानी', 'अकहानी', 'साठोत्तरी कहानी', 'सहज कहानी', 'समानांतर कहानी' आदि विभिन्न आन्दोलनों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। डॉ. पुष्पलाल सिंह ने 'समकालीन कहानी: युगबोध का संदर्भ' कृति में कहा है कि- "परिस्थिति के अनुसार जो बदलाव की अपेक्षा व्यक्त की गयी है, वही आंदोलन के रूप में उभर गए हैं।"[1] इस दृष्टि से समकालीन कहानी आंदोलन भी एक प्रकार का आंदोलन है।

समकालीन हिंदी कहानी लेखन: डॉ गंगा प्रसाद 'विमल' को समकालीन हिंदी कहानी का प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने समकालीन आंदोलन को खड़ा किया था। उनके अनुसार- "समकालीन कहानी रचना की कोई नई विधा नहीं है, न ही नए लोगों का कोई रचनात्मक आंदोलन इसे कहा जाना चाहिए, अपितु वे सब रचनाकर जो कम से कम रोमांटिक भाव-बोध से तथा परंपरागत स्थिति से अलग हैं और कथा रचना में अपने समग्र नयेपन का आग्रह रखते है- समकालीन रचना के रचनाकार हैं।"[2]

'समकालीन' शब्द का अर्थ होता है- समसामयिक अर्थात एक ही समय का। समकालीन कहानी वह होती है, जिसमें एक ही समय के कहानीकारों द्वारा एक ही विषय को आधार बनाकर कहानी लिखी गई है। समकालीन में जितने भी कहानीकार होते हैं, वे सब एक ही समय के होते हैं। उनका विषय भी समय सापेक्ष होता है। इसलिए इस समय की कहानियों की विशेषताओं में एकरूपता दिखाई देती है। समकालीन कहनीकारों में विशेषताओं की एकरूपता होने के साथ-साथ एक ही समय से संबन्धित होना भी आवश्यक है। एक ही समय में एक जैसे विषय पर लेखन कार्य करने वाले साहित्यकारों को समकालीन साहित्यकार कहा जाता है। अगर ऐसा होता तो मीराबाई, प्रेमचंद आदि सभी समकालीन ही कहलाते। क्योंकि उनकी कहानियों में समाज का यथार्थ वर्णन मिलता है। पर ऐसा नहीं है। हम इन्हें समकालीन

नहीं कह सकते। समकालीन होने के लिए एक ही समय के साहित्यकार होना आवश्यक है। चूँकि 'समकालीन' शब्द से इस बात का पता चल जाता है कि 'सम' का अर्थ है- 'समान' और 'कालीन' का अर्थ है 'समय का'।

'समकालीन' की विद्वानों ने परिभाषाएँ दी हैं:

डॉ. किरण बाला के अनुसार- "समकालीनता एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुक़ाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।"[3]

डॉ. चन्द्रशेखर के अनुसार- "समकालीनता समसामयिकता की आधुनिकता है अर्थात उसकी सप्रश्नता अथवा प्रश्नशीलता है।"[4]

डॉ.विश्वंभरनाथ उपाध्याय के मतानुसार- "'समकाल' शब्द यह बताता है कि काल के इस प्राचीन खंड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है, इसे उलटकर कहें तो कह सकते हैं कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति को देखकर उसे अंकित, चित्रित करके ही हम समकालीनता की अवधारणा को समझ सकते हैं।"[5]

गंगा प्रसाद विमल के अनुसार- "समकालीन का अर्थ यह नहीं कि दो व्यक्ति एक विशेष कालखंड में जी रहे हों और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीनता की बात की जा रही है उसका शब्दार्थ की धारणा से संबंध नहीं है, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता।"[6]

डॉ.सुखबीर सिंह के अनुसार- "समकालीनता का अर्थ समसामयिकता नहीं होता है। तत्कालीनत से इसका अर्थ लेने से भी इसके अर्थ का बहुत संकोच हो जाता है। वस्तुतः

समकालीनता एक व्यापक एवं बहुआयामी शब्द है और आधुनिकता का आधार तत्व है। जो समकालीन है, वह आधुनिक भी हो, यह आवश्यक नहीं हैं किन्तु जो आधुनिक चेतना से संवलित दृष्टि है। वह निश्चित रूप से समकालीन भी होती है।"[7]

डॉ. नरेंद्र मोहन के अनुसार- "समकालीनता का अर्थ किसी कालखंड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण भर नहीं है, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना, उनके मूल स्त्रोत तक पहुँचना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना है। .....समकालीनता तात्कालिकता नहीं है।"[8] समकालीन कहानियाँ विभिन्न विशेषताओं से परिपूर्ण है: परिस्थिति का यथार्थ चित्रण, कृषक-मजदूर समाज, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री-पुरुष सम्बंध, वस्तुवादी दृष्टिकोण, गाँव से शहर की ओर पलायन, पारिवारिक संबंधों का विघटन, मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ, पीढ़ियों का टकराव आदि।

परिस्थिति का यथार्थ चित्रण- समकालीन कहानीकारों ने अपने चारों ओर घटित यथार्थ को ही अपनी कहानी का वर्ण्य विषय बनाया है। वर्तमान के मनुष्य ने जिस-जिस रूप में जिंदगी को देखा है, भोगा है उसका प्रामाणिक दस्तावेज समकालीन कहानी प्रस्तुत करती है। अमृत राय के मतानुसार- "लेखक के रूप में उनसे अधिकाधिक गहरे और संश्लिष्ट रूप में जुड़ा रहना है, जिससे पता रहे कि समाज के ये विभिन्न अंग क्योंकर अपनी जिंदगी जीते हैं, क्या खाते हैं, कैसे रहते हैं, क्या सोचते हैं, आपस में क्या बातें करते हैं, उनकी ज्वलंत समस्याएँ क्या हैं। यही ठोस ढंग से अपने परिवेश से जुड़ना है, अपने देश-काल को पहचानना है और गहरे पैठकर देखिये तो यही श्रेष्ठ लेखन का असल रक्तमांस है।"[9] इस पीढ़ी के कहानीकारों ने अपने लेखन में जीवन के यथार्थ का साक्षात्कार कराया है: मुक्तिबोध, अमृतराय, ज्ञानरंजन, गंगाप्रसाद

विमल, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया, रमेशचंद्र शाह, सुधा आरोड़ा, काशीनाथ सिंह, जगदीश चतुर्वेदी, माहेश्वर, गिरिराज किशोर, अशोक अग्रवाल, दामोदर सदन, परेश, महेंद्र भल्ला, रमेश उपाध्याय, शशिप्रभा शास्त्री, गोविंद मिश्र, महीपसिंह, कुलभूषण, कृष्णा अग्निहोत्री आदि।

कृषक-मजदूर समाज- समकालीन हिंदी कहानी की एक बड़ी विशेषता गाँव और शहरों में बेहतर जीवन के लिए संघर्षरत किसानों और मजदूरों की जिंदगी के यथार्थ का चित्रण है। गाँवों में मौजूद सामंती व्यवस्था के कारण किसानों और मजदूरों की स्थिति बहुत खराब है। समकालीन कहानीकारों में विभिन्न कहानीकारों ने किसानों और मजदूरों की इन दयनीय स्थिति का वर्णन किया है: विजयकांत की 'बीच का समर', 'मरीधार' कहानी, विजेंद्र अनिल की कहानी 'विस्फोट', सुरेश कांटक की 'एक बनिहार का आत्मनिवेदन', मधुकर सिंह की 'मेरे गाँव के लोग', मिथिलेश्वर की 'मेघना का निर्णय', मेहरुन्निसा परवेज़ की 'आतंक भरा सुख', संजीव की 'तिरबेनी का तड़बन्ना', रामस्वरूप अणखी की 'जोहड़ बस्ती', शिवमुर्ति की 'तिरिया चरितर' आदि। वर्तमान किसानों ने प्रतिरोध करना आरम्भ कर दीया है लेकिन फिरभी उनकी स्थिति सम्पूर्ण रूप से सुधरी नहीं है। उसी प्रकार मजदूर भी समाज व्यवस्था के शोषण और दमन के शिकार हैं साथ ही भूख एवं ऋण जैसी समस्याओं से ग्रस्त है। कई मजदूर स्थितियों का सामना करने में असमर्थ होकर गाँव और समाज छोड़ने के लिए विवश हो जाते हैं। मजदूरों के इन दयनीय स्थिति का वर्णन विभिन्न कहानीकारों ने अपने कहानियों में किया हैं। जैसे- भटनाकर की 'मुन्ने की उम्र' कहानी, हृषिकेश सुलभ की 'बड़े राजकुमार', अरुण प्रकाश की

'भैया एक्स्प्रेस', उदय प्रकाश की 'तेपचू', शिवमुर्ति की 'तिरिया चरित्तर', चंद्रमोहन प्रधान की 'एही नगरिया के विध रहना' आदि।

स्त्री-विमर्श- समकालीन कहानियों की अन्यतम विशेषता है- 'स्त्री विमर्श'। स्त्री विमर्श में स्त्री की अस्मिता को केंद्र में रखकर विचार किया जाता है। सदियों से स्त्रियाँ शोषित होती आ रही हैं और इन स्त्रिओं को अपना हक और अधिकार दिलाना ही स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य है। सदियों से स्त्री को अपने अधिकारों से वंचित किया जाता था। धीरे-धीरे स्त्री के साथ हो रहे इन व्यवहारों में परिवर्तन आने लगा। वर्तमान समाज में भी स्त्री पर होने वाले अत्याचार संपूर्ण रूप से खत्म नहीं हुए हैं। समकालीन कहानियों में स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण के खिलाफ आवाज उठाई गई। विभिन्न कहानीकारों ने स्त्री जीवन को अपनी कहानी का वर्ण्य विषय बनाया जैसे: मिथिलेश्वर कृत 'सावित्री दीदी', 'आखिरी बार', 'रात', पुन्नी सिंह कृत 'लकड़हारे की राखी', 'नंदो', 'बाल वर्ष के बाद कीं माँ', राजी सेठ की 'तीसरी हथेली', विष्णु प्रभाकर की 'नए चेहरे', ज्ञानरंजन कृत 'गोपनीयत', कुसुम अंचल कृत 'टूटी कुर्सी', ममता कालिया कृत 'बोलनेवाली औरत', सुधा अरोड़ा कृत 'काली लड़की का करतब', अर्चना वर्मा कृत 'जोकर', सिम्मी हर्षिता की 'ठहरी हुई बुंदे', मृणाल पांडेय की 'लड़कियाँ', चित्रा मुद्गल की 'लकड़बग्घा', नासिरा शर्मा की 'बिलाव', मैत्रयी पुष्पा की 'गोमा हँसती है', मेहरुन्निसा परवेज की 'टोना' आदि।

दलित-विमर्श- समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श की तरह दलित विमर्श भी एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। 19 वीं सदी में ज्योतिबा फूले और 20 वीं सदी में बाबा साहब अंबेडकर के आंदोलनों और विचारों के कारण हाशिये की जिंदगी व्यतीत कर रहे दलित समाज के

अधिकारों को लेकर बहसें शुरु हुईं। दलितों पर अनेक कहानियों की रचना हुई। इन कहानियों में दलित समाज के जीवंत अनुभवों का यथार्थ चित्रण हुआ है। दलित कहानीकारों में ओम प्रकाश वाल्मीकि का नाम अन्यतम है। उनकी कहानी 'सलाम' दलितों पर लिखी एक सशक्त कहानी है। वाल्मीकि के अलावा अन्य कहानीकारों ने भी दलित कहानी को समकालीन हिंदी कहानी के केंद्र में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैसे- मोहनदास नैमिस राय कृत 'आवाजें', 'अपना गाँव', जयप्रकाश कर्दम कृत 'नो बार', सुशीला टाकभौरे कृत 'सिलिया', स्वयं प्रकाश कृत 'जो हो रहा है', 'सुरज अब निकलेगा', मिथिलेश्वर कृत 'एक और हत्या', 'देर तक', 'न चाहते हुए भी', मणि मधुर कृत 'त्वमेव माता', 'फांसी', पुन्नी सिंह कृत 'होरी', 'कसक', दयानंद बटोही कृत 'सुरंग', एस.आर.हरनोट कृत 'जीनकाठी', कुसुम वियोगी कृत 'अंतिम बयान', श्यौराज सिंह बेचैन कृत 'शोध-प्रबंध', सुरजपाल चौहान कृत 'अहिल्या', प्रह्लाद चंद दास कृत 'लटकी हुई शर्त', शत्रुघन कुमार कृत 'हिस्से की रोटी', रत्नकुमार साम्भरिया कृत 'फुलवा' आदि प्रमुख है।

स्त्री-पुरुष सम्बंध- प्राचीन काल से स्त्री-पुरुष सम्बंधों को लेकर विभिन्न मान्यताएँ प्रचलित रहीं हैं किंतु आधुनिक काल तक आते-आते इन मान्यताओं में परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। पुरुष देवता और स्त्री उसकी अनुगमन कर्ता, ऐसी मान्यताओं को प्राचीन माना गया। वर्तमान स्त्री घर की चार दीवारों से बाहर निकल आयी है। वर्तमान नारी शिक्षित है, स्वतंत्र है, विशेषकर आर्थिक रुप से स्वतंत्र होने लगी है। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध कई प्रकार के हैं। जैसे- पिता-पुत्री, मा-पुत्र, भाई-बहन, पति-पत्नी। वर्तमान समय में पति-पत्नी के सम्बंध में ज्यादातर परिवर्तन देखने को मिलता है। समकालीन कहानीकारों ने स्त्री-पुरुष सम्बंध को अपना विषय बनाया है। जैसे-

ममता कालिया कृत 'बीमारी', मन्नु भंडारी कृत 'क्षय', सुधा अरोड़ा कृत 'घर', नासिरा शर्मा कृत 'प्रोफेशनल वाइफ', मालती जोशी कृत 'मध्यांतर', मृदुला गर्ग कृत 'मेरा', स्वयं प्रकाश कृत 'मेरे और कोहरे के बीच' आदि।

वस्तुवादी दृष्टिकोण- समकालीन कहानीकारों ने हमेशा अपनी कहानियों के जरिये यथार्थ का चित्रण किया है। इन कहानीकारों ने मनुष्य के उस रूप का चित्रण किया है जो मानवीयता का गुण धीरे-धीरे भूल चुके हैं। वर्तमान मनुष्य व्यक्ति से ज्यादा वस्तु केंद्रित होने लगा है। मनुष्य के स्थान पर वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ने लगा है। यह वस्तुवादी दृष्टिकोण समकालीन कहानियों में देखने को मिलता है। उदाहरण स्वरूप ममता कालिया कृत 'सेमिनार' कहानी।

गाँव से शहर की ओर पलायन- लोग हमेशा से अपनी बेहतर जीविका के लिए शहर की ओर गति करते हैं। गाँव का शिक्षित वर्ग गाँव की जमीन से कटकर शहर से जुड़ रहा है साथ ही नौकरी मिलने पर पूरी तरह वहीं से जुड़ जाता था। इसी कारण प्राय: युवा लेखक जो कहानी लेखन में प्रवृत्त हुए वे नगर या महानगर की विभिन्न समस्याओं से जुड़ने लगे। "जीविका की तलाश में गाँव से नगर की ओर पलायन छठे दशक में ही आरम्भ हो गया था। आठवें दशक तक आते-आते इस परिघटना ने नया रूप ग्रहण कर लिया। बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के किसान-मजदूर बड़ी संख्या में खेती के मौसम में पंजाब-हरियाणा आदि राज्यों में पलायन करने लगे। गाँव के कम पढ़े-लिखे युवक भी जीविका की तलाश में दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों की ओर रुख करने लगे। इसके फलस्वरूप मजदूरों को नौकरी दिलाने का धंधा भी पनपने लगा। और शिक्षित युवक तथा कृषक-मजदूर दोनों ही दलालों के शिकार बनने लगे।"[10] इस प्रकार नगर और महानगर के जीवन का चित्रण ही वर्तमान कहानी का मुख्य विषय बन गया है। नगर और महानगर के जीवन के विभिन्न आयामों का चित्रण समकालीन कहानी में प्राप्त होता है।

पारिवारिक संबंधों का विघटन- समकालीन कहानी में जीवन के हर पहलू की यथार्थ अभिव्यति हुई है। देश में बदलते सामाजिक परिस्थितियों के कारण जीवन मूल्य में परिवर्तन आया है। समकालीन कहानीकारों ने बदली हुई जीवन स्थितियों और संबंधों में व्याप्त तनाव, विघटन और जटिलता को अपने कहानियों द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। पारिवारिक विघटन का मूल कारण पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के तौर-तरीकों में अनमेल। वर्तमान समय में लोग पारिवारिक सम्बंधों से ज्यादा धन-दौलत को महत्व देने लगे हैं, फलस्वरूप अपने बुजुर्गों के प्रति आदर भाव कम होने लगा है और दूरिया बढ़ने लगी हैं। समकालीन समय में पारिवारिक सम्बंधों का विघटन का अन्य एक कारण है युवाओं का शहर के प्रति आकर्षित होना। परिवार के युवा जब शहरों की ओर गति करते हैं तब घर के बुजुर्ग असहाय अवस्था में अकेले पड़ जाते हैं। अन्य एक कारण यह भी है कि मध्यम वर्ग के व्यक्ति उच्च वर्ग में जाने की चाह के कारण उसकी अवसरवादिता और महत्वकांक्षा परिवार के विघटन का प्रमुख कारण बन जाता है। अनेक समकालीन कहानीकारों ने इस विषय को अपनी कहानी में चित्रित किया हैं। जैसे- उदय प्रकाश कृत 'छप्पन तोले का करधन', उषा प्रियंवदा कृत 'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'वापसी', मधु कांकरिया कृत 'कीड़े', ज्ञानरंजन कृत 'पिता', भीष्म साहनी कृत 'चीफ की दावत' आदि प्रमुख कहानियाँ हैं।

मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ- समकालीन कहानी की अन्यतम विशेषता है मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ। समकालीन कहानीकारों की अधिकतर कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन पर ही आधारित हैं। मध्यवर्गीय परिवार में बहुत सारी छोटी छोटी समस्याएँ हैं, जो बहुत बड़ी समस्या का रूप धारण कर लेती है। मध्यवर्ग की विभिन्न विसंगतियों को कहानीकारों ने उकेरा हैं। जैसे- रिश्तों में आए तनाव, खासकर पति-पत्नी के बीच की दूरिया। मध्य वर्ग के वे लोग

जो धन-दौलत, शराब, सिगरेट में भटके हुए हैं। बहुत से परिवार निराशा, कुंठा और बेचैनी से भरे हुए हैं उसका चित्रण भी समकालीन कहानियों में मिलता है। मूलत: समकालीन कहानीकारों ने वर्तमान परिवेश के इर्द-गिर्द घटित मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकता को उकेरा है। उदाहरणस्वरूप- ममता कालिया कृत 'बड़े दिन की पूर्व सांझ', 'वे तीन', महेंद्र भल्ला कृत 'एक पत्नी के नोट्स', धर्मवीर भारती कृत 'मरीज नम्बर सात, 'मुर्दों का गाँव', 'धुंवा' आदि।

समकालीन हिंदी कहानी में अनेक कहानीकारों ने अपना लेखन कार्य किया। प्राय: सभी कहानीकारों ने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं जैसे (भ्रष्टाचार, जातिभेद, स्त्री समस्या, सांप्रदायिकता, मानवीय मूल्यों) का यथार्थ चित्रण किया है। समकालीन प्रमुख कहानीकार हैं- भीष्म साहनी, अमरकांत, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, गंगा प्रसाद विमल, शैलेश मटियानी, रामदरश मिश्र, नासिरा शर्मा, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, रवींद्र कालिया, मेहरुन्निमा परवेज आदि।

भीष्म साहनी ने जीवन के विभिन्न संदर्भों में मानवीय संघर्ष बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग के लोगों के जीवन स्थितियों को उन्होंने उजागर किया है, साथ ही सत्ता और व्यवस्था के खोखलेपन को उन्होंने बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। उनकी 'चीफ की दावत' कहानी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इसके साथ-साथ 'अमृतसर आ गया है', 'ओ हरामजादे', 'त्रास' आदि कहानियाँ भी प्रसिद्ध हैं। उनकी कहानियों के बारे में नामवर सिंह कहते हैं- "सादगी और सहजता भीष्मजी की कहानी-कला की ऐसी खूबियाँ हैं, जो प्रेमचन्द के अलावा और कहीं नहीं दिखाई देती हैं। जीवन की विडम्बनापूर्ण स्थितियों की

पहचान भी भीष्म साहनी में अप्रतिम है। यह विडम्बना उनकी अनेक अच्छी कहानियों की जान है।"[11]

अमरकांत ने मध्यवर्ग के जीवन संदर्भों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की पारिवारिक समस्याएँ, स्त्री शोषण, उनका विद्रोह, निराशा, आर्थिक समस्याएँ, उनकी मानसिक स्थिति आदि का सजीव चित्रण किया है। अमरकांत के बारे में नामवर सिंह ने कहा है- "अमरकांत ने अपनी कहानियाँ यहीं से उठायी हैं और इस तरह हमारी आँखों में हमारी ही जिंदगी के जाने कितने पर्दे उठ गये हैं। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियाँ किसी भी नये लेखक के लिए चुनौती हैं।"[12] उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- 'जिंदगी और जोंक, 'दोपहर का भोजन', 'डिप्टी कलेक्टरी', 'सप्ताहन', 'पक्षधरता', 'घर', 'तुफान', 'दुर्घटना', 'उसका जाना और आना' आदि।

कमलेश्वर की कहानियों में सामजिक विसंगतियाँ, मानव अंतर्द्वंद की पीड़ा, आधुनिक बदलते परिवेश, टूटते जीवन मूल्यों आदि का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी 'राजा निरबंसिया', 'खोई हुई दिशाएँ', 'माँस का दरिया' आदि कहानी विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं- 'अच्छा ठीक है', 'दालचीनी के जंगल', 'मेरा भारत महान', 'इंत्जार', 'शोक समारोह', 'चप्पल', 'कोहरा', 'अपने देश में', 'सफेद सड़क', 'इतिहास कथा' आदि।

निर्मल वर्मा ने अपनी अधिकतर कहानियों में पाश्चात्य परिवेश का चित्रण किया है। उनकी 'आदमी और लड़की, 'एक दिन की मेहमान' आदि कहानियों में विदेशी परिवेश का चित्रण हुआ है। इन कहानियों में उन्होंने स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में आने वाली दूरियों का वर्णन

किया है। उनका 'परिंदे' कहानी संग्रह विशेष प्रसिद्ध है। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बंध, स्त्री समस्या, अकेलापन, रिश्तों में आते तनाव, अजनबीपन आदि को उजागर किया है। उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं- 'आदमी और लड़की, 'धूप का एक टुकड़ा, 'कव्वे और काला पानी, 'दूसरी दुनिया' आदि।

गंगा प्रसाद विमल की कहानियों में भ्रष्टाचार, अमानवीयता, जातिभेद, शोषण, रिश्वत खोरी आदि का चित्रण मिलता है। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- 'अगले दिनों में', 'अपहरण', 'आत्महत्या', 'आमने सामने', 'इंतजार', 'इधर उधर','कल से पहले', 'कल्याणी', 'चरित्र', 'छूट', 'जानवर', 'तलाश', 'निर्वासित', 'बच्चा', 'बीच में', 'मैं भी', 'सपनों का सच', 'सन्नाटा' आदि।

शैलेश मटियानी ने अपना जीवन गरीबी से संघर्ष करते हुए गुजारा है और इसका प्रतिफलन उनकी कहानियों में भी दिखाई देती है। उनकी कहानियों में कुमायूँ अंचल के पहाड़, वन, खेत, फूल, पर्व, त्योहार, व्रत, संस्कार, रुढ़ियाँ, विश्वास आदि का चित्रण मिलता है और अन्य तरफ सामान्य जनता और उनके जीवन संघर्ष का भी चित्रण मिलता है। उन्होंने अपनी कहानियों में बदलते मूल्यों की टकराहट को भी रेखांकित किया है। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- 'संगीत भरी एक संध्या', 'माँ, तुम जाओ', 'आंधी से आंधी तक', 'मुड़ मुड़ कर मत देख', 'डेरे वाले', 'सन्नाटा', 'धर्मयुद्ध', 'भैंस', 'उपरांत', 'नदी किनारे का गाँव' आदि।

रामदरश मिश्र की कहानियों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गाँवों के जीवन में आने वाले बदलाव और उसके परिणामस्वरुप बढ़ती हुई गरीबी, अभाव, अशिक्षा और टूटते-बिखरते मूल्यों का सजीव चित्रण हुआ है। उन्होंने महानगरीय जीवन की विसंगतियों को भी अपनी

कहानियों में उकेरा है। मध्यवर्गीय जीवन की कुंठा, निराशा, तनाव, अकेलेपन भी उनकी कहानियों में देखा जाता है। इसके साथ-साथ विद्यार्थी और साहित्यकार भी उनकी कहानियों का विषय बना। जैसे- 'नौकरी' कहानी में विद्यार्थियों के व्याख्याता पद के लिए भटकने और पैरवी और पहुँच क़े बल पर आयोग्य छात्रों की विश्वविद्यालयों में नियुक्ति का चित्रण किया गया है। उसी प्रकार 'सरस्वती पुत्र' कहानी में आत्मप्रशंसा हेतु स्वयं अपना अभिनंदन ग्रंथ छपानेवाले प्रोफेसरों-साहित्यकारों का चित्रण हुआ है। उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। जैसे- 'खाली घर', 'एक वह', 'सर्पदंश', 'वसंत का एक दिन', 'आज का दिन भी', 'एक कहानी लगातार' आदि।

नासिरा शर्मा की कहानियों में रूढ़ियों में जकड़ी किंतु आधुनिक जीवन की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए बेचैन पिछड़े वर्ग की मुसलमान जनता का चित्रण है। आधुनिक सुविधाओं से वंचित देश की गरीब जनता का चित्रण भी उनकी कहानियों में मिलता है। मूल रूप से- मुस्लिम समाज की स्त्रियों का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में है। वे कहती हैं- "पुरुष समाज द्वारा नारी का शोषण हर समाज में होता रहा है और भी नारी चाहे वह किसी धर्म या सम्प्रदाय की क्यों न हो पुरुष समाज के शोषण की शिकार बनी हुई है।"[13] 'पत्थर गली', 'दिलआरा', 'चार बहनें शीशमहल', 'पुराना कानून', 'नयी हुकूमत', 'दूसरा कबूतर', 'खुदा की वापसी', 'बचाव' आदि कहानियों में उन्होंने मुस्लिम समाज की स्त्रियों की स्थितियों के बारे में अभिव्यक्त किया है। इसके साथ उन्होंने ने मुस्लिम समाज की विधवाओं का भी चित्रण किया है। किस प्रकार उनके साथ शोषण होता है और वे आवाज भी नहीं उठा पाती, इसका वर्णन उन्होंने किया है। 'दिलआरा' कहानी इसका उदाहरण है।

हिंदी कहानी क्षेत्र में ममता कालिया का एक विशेष स्थान है। उन्होंने अधिकतर कहानियों में स्त्री जीवन को चित्रित किया है। स्त्रियों की संवेदनाओं, संताप, संघर्ष आदि को उन्होंने अभिव्यक्त किया है। अब नारी का कार्य क्षेत्र घर की चारदीवारी से बाहर होने के कारण दाम्पत्य जीवन में आये सामाजिक आर्थिक विसंगतियों को भी उन्होंने अपनी कहानियों के जरिए चित्रित किया है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के संवेदनाओं को भी अपनी कहानी का हिस्सा बनाया है। 'उमस', 'जांच अभी जारी है', 'रजत जयंती', 'बोलने वाली औरत', 'रोग', 'दाम्पत्य', 'बाथरुम' आदि कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण हुआ है। 'जांच अभी जारी है' कहानी में दफ्तरों में काम करने वाली स्त्रियों के प्रति पुरुष कर्मचारियों के दृष्टिकोण, व्यवहार और विरोध का वर्णन किया गया है। 'दाम्पत्य' कहानी में मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन के बासीपन, सम्बन्धों के ठंडेपन आदि का चित्रण हुआ है।

इसके साथ-साथ ममता कालिया ने समाज में उपेक्षित लोगों की स्थिति का चित्रण किया है और समाज में बुजुर्गों की स्थिति और अकेलेपन का भी चित्रण किया है। 'अनुभव', 'चोट्टिन', 'रोशनी की मार', 'बांगड़ू' आड़ी कहानियों में समाज के हाशिये पर जीनेवाले लोगों का वर्णन मिलता है। 'सेवा', 'तासीर', 'किताबों में कैद आदमी' आदि कहानियों में वृद्धावस्था के आर्थिक अभाव और अकेलेपन का चित्रण है।

रवींद्र कालिया की कहानियों में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। जैसे- 'नौ साल छोटी पत्नी', 'काला रजिस्टर', गरीबी हटाओ', 'चकैया नीम', आदि। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं- 'इतवार नहीं', 'क ख ग', 'खोटे सिक्के', 'गर्म हाथ', 'जरा सी रोशनी', ' थके हुए', 'दादा दुबे', 'दो सौ ग्राम प्रेम

पत्र', 'धक्का', 'नया कुरता', 'पत्नी', 'पनाह', 'पुस्तक पुराण', 'प्रेम', 'बांके लाल', 'मुहब्बत', 'लाल तिकोन', 'विकथा', 'सुंदरी' आदि।

समकालीन कहानी के क्षेत्र में चित्रा मुद्गल का अग्रणी स्थान है। उन्होंने शोषित स्त्रियों का चित्रण यथार्थ रुप में किया है। उन्होंने संघर्षरत नौकरीपेशा नारियों एवं झोपड़पट्टियों में घिसटते हुए निम्नवर्गीय लोगों के जीवन को अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों में आज की बिखरी हुई जिंदगी की तस्वीर देखी जा सकती है। उनकी कहानियों में भिखारी है, संवेदनाहीन ठीकेदार हैं, वेश्याऐं हैं, पत्नियों की अदला-बदली करने वाले बड़े लोगों के क्लब हैं, मेहनत-मजदूरी करके घर चलाने वाली स्त्रियां हैं, लड़कियों से धंधा कराने वाली औरतें हैं तथा अपने अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई लड़ने वाली स्त्रियाँ हैं। उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं- 'जहर ठहरा हुआ', 'अपनी वापसी', 'जिनावर', 'भूख', 'लपते', 'जग्दम्बाबाबू गाँव आ रहे हैं' आदि।

मेहरून्निमा परवेज ने निम्न मध्यवर्ग के दुख-दर्द को मानवीय धरातल पर चित्रित किया है। उनकी कहानियों में आदिम जातियों के अंधविश्वास, महानगरों में खोलियों में रहने वाली स्त्रियों का दुख-दर्द, आर्थिक तंगी में जीवन व्यतीत करते नौकरी पेशा लोगों का मानसिक तनाव, बेमेल विवाह की त्रासदी, महानगरीय मध्यवर्गीय नारियों की घुटन, रिक्तता और द्वंद, तलाकशुदा औरतों की त्रासदी, वर्तमान सामाजिक ढाँचे से मुक्ति चाहती नारी की छटपटाहट आदि का सजीव चित्रण हुआ है। उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं- 'टहनियों पर धूप', 'आदम और हव्वा', 'फालगुनी', 'गलत पुरुष', 'अंतिम चढ़ाई', 'अम्मा', 'समर', 'लाल गुलाब' आदि। उनकी

प्रमुख कहानियाँ हैं- 'चील के झपट्टे सी चीख', 'मलबा', 'बेनूर चेहरों की दावत', 'अंतिम चोट', 'लाल बहू', 'पटरी की पगली', कुएँ का मेढ़क' आदि।

समकालीन हिंदी कहानी में चरण सिंह पथिक का विशेष स्थान है। चरण सिंह पथिक की कहानियाँ समसामयिक सन्दर्भ से जुड़ी हुई हैं और साथ ही अपने समाज की शाश्वत पहचान कराती हैं। पथिक की कहानियों के बारे में चण्डीदत्त शुक्ल कहते हैं- "पथिक की कहानियों की चर्चा इसलिए है, क्योंकि उनमें सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ पूर्ण चित्रण किया गया हैं। दिलचस्प बात ये कि बदलते सिनेमा के दौर में कड़वी सच्चाई से लबालब फिल्मे बनने लगी है, इसलिए पथिक के कथा संसार को सिनेमाई विस्तार भी मिल रहा है।"[14] पथिक की कहानियों की विशेषता बेबाक चित्रण है। उनकी कहानियाँ भारतीय साधारण जनता के यथार्थ को व्यक्त करती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन को उकेरा है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों के जरिये स्त्री की संवेदना और आकांक्षाओं को वाणी दी है। उन्होंने समाज में व्याप्त विभिन्न रीति-रिवाज,अंधविश्वास, जातिभेद, भ्रष्टाचार, शोषण, स्त्री शोषण, सांप्रदायिकता आदि का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों के पात्र साहसी हैं, वे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। सामने चाहे कितने ही बड़े आदमी क्यों न खड़े हो लेकिन उनके पात्र शोषण के खिलाफ आवाज उठाने से नहीं डरते। पथिक ने अपनी कहानियों में निम्न वर्ग के लोगों की वेदना, संताप, उत्पीड़न आदि को अभिव्यक्त किया है।

पथिक की कहानियों में नारी के दो रूपों का चित्रण हुआ है। प्रथम जो अपने ऊपर हुए अत्याचारों को सहन कर लेती है द्वितिय वह नारी जो अपने अधिकार के लिए अवाज उठाती है। अधिकतर कहानियों मे उन्होंने नारी के सबल रूप का ही चित्रण किया है।

'बक्खड़' कहानी में चित्रित स्त्री उसके ससुराल में शोषित होती है, लेकिन अंत में वह अपने लिए खड़ी भी होती है। अपने अधिकार के लिए लड़ती है। कहानी का मूल पात्र है- मूला। मूला की माँ संतो अपनी सास और पति द्वारा शोषित होती है। संतो पर बहुत ही बेरहमी से अत्याचार किया जाता था। संतो को कई-कई दिनों तक भूखी-प्यासी और घायल स्थिति में अंधेरी कोठरी में रख दिया जाता था। घर का सारा काम उसी से करवाया जाता था। सारा काम करने के बाद भी उसे एक भी रोटी नसीब नहीं होती थी। जब वह प्रतिरोध करती भी तब उसकी सास बोलती- "तेरा बाप कमा के रख गया है क्या? बापखाणी मरी नहीं तू...."[15] वह प्रतिरोध करना चाहती थी, लेकिन साहस नहीं जुटा पायी। फिर एक दिन मूला को दादी ने सीढ़ियों से धक्का दे दिया। यह देखने के बाद संतो प्रतिरोध करने लगी। उसने घर का काम करना छोड़ दिया और अगर कोई कुछ कहता है, तो उसके उत्तर में वह कहती है- "मैं क्यों खटू? मैं क्यों चराऊं भैंसों को? क्यों गोबर डालूँ? बाँदी थोड़ी आई हूँ। सात फेरे खाए हैं, काम करे मेरा मुट्ठा। जिसको जो करना है कर ले मेरा, मारेंगे तो सही। पर अन्याय अब एक दिन भी सहन नहीं करूंगी।"[16] इसके बाद वह अपनी ससुराल छोड़ कर मायके चली गयी। इसमें संतो द्वारा स्त्री के सबल रूप का भी चित्रण हुआ है।

'बीमार' कहानी में पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह कहानी एक साहित्यकार और उनकी बीमार पत्नी की है। साहित्यकार अपनी पत्नी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था। जब साहित्यकार की नयी नयी शादी हुयी थी तभी उसके घरवाले और दोस्तों ने उसे सतर्क किया था। उनकी भाभी ने कहा था- "लालाजी, देवरानी को दबा के रखना। पहले दिन ही तुम्हारा पलड़ा नीचे रहा तो जिन्दगी भर कान पकड़े बकरी की तरह म्याँ-म्याँ करते रहोगे।"[17] उनके दोस्तों ने कहा- "ओय प्रमोदया स्साले सेर रहना। कहीं हमारी

मिट्टी पलीद मत करवा दना।"[18] फिर उनकी माँ ने कहा- "बेटा! बहू को हमेशा अपने वश में रखना।"[19] सिर्फ साहित्यकार ही नहीं बल्कि उनके भाई भी उनकी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करते हैं उस पर हाथ उठाते हैं। जब उसकी पत्नी प्रतिरोध करती हुई बोलती है- "उसने मेरे ऊपर हाथ उठाया था।"[20] तब साहित्यकार उत्तर में सिर्फ यही बोलते हैं- "....तो कौन सा आसमान टूट पड़ा! वो आखिर छोटा तो है।"[21] एक बार साहित्यकार एक कहानी पाठ से घर लौटा। दोनों के बीच बातचीत हुई। पत्नी ने कहा- "कैसा रहा कहानी पाठ?"

"ठीक रहा"

"औरतों के पक्ष में अच्छा लिखते हैं आप?"

'हाँ...।"

"मगर घर में कभी झाँक कर नहीं देखा...।"[22]

यह सुन वह कुछ नहीं बोल पाया। अंत में, साहित्यकार को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और वह उन्हें सुधारने लगे। कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी के जरिए पुरुष की उस मानसिकता की ओर इशारा किया है, जहाँ वह स्त्री को हमेशा हेय समझता है।

पथिक ने 'ठंडी गदूलि' नामक कहानी में विधवा स्त्री के सबल रूप का चित्रण किया है। जो बेबाक है औरे समाज के किसी भी बंधन के बारे में नहीं सोचती। कहानी की कथावस्तु विधवा स्त्री अंगूरी और घासी की प्रेम कहानी है। अंगूरी विधवा और एक बच्ची की माँ होने के बाद भी घासी उसे प्रेम करता है और अंगूरी भी घासी के साथ जीवन बिताना चाहती है। घासी अंगूरी को अपनाना तो चाहता है, लेकिन वह अपने समाज से, अपने रिशतेदारों से,

जात-बिरादरी के लोगों से डरता है लेकिन अंगूरी को इन सबसे कोई डर नहीं। इसलिए जब घासी अंगूरी से कहता है- "मेरा भी पिंड छूटेगा। तू सोच ले। जात-बिरादर, नाते-रिश्तेदारी में तेरी फजीहत ज्यादा होगी। केस, मुक़द्दमा, पंचायत में साथ देना होगा। नाथ का जाया हूँ, बात पक्की समझना।"[23] तब जवाब में अंगूरी बोलती है- "अभी कौन सा सुख भोग रही हूँ मैं। सब की निगाह इस शरीर पर लगी है। तेरे कौल पर भरोसा है।"[24] अंगूरी और घासी लोगों की परवाह किए बिना गाँव छोड़कर भाग गए। विवेच्य कहानी के द्वारा कहानीकार ने विधवा विवाह की ओर संकेत किया है, साथ ही स्त्री की साहसिकता को दर्शाया है।

पथिक ने साम्प्रदायिकता को भी अपनी कहानी का विषय बनाया है। एक ही गाँव में मिल-जुल कर रहने वाले हिंदू-मुस्लिम के बीच भेदभाव आ जाता है और वह अपनापन, प्यार, भाईचारा खत्म हो जाता है। 'दंगल' कहानी में सांप्रदायिकता का सजीव चित्रण मिलता हैं।

'दंगल' कहानी में पथिक ने मच्छीपुरा गाँव में होने वाले दंगल के माध्यम से साम्प्रदायिकता का सजीव चित्रण किया है। दंगल का गवैया है पीरू तेली, बाबू उस्ताद की ढोलक, रमजानी सक्का का हारमोनियम, प्रह्लाद कुम्हार और काडुनाथ के मंजीरे। कहानी पढ़ने से ऐसा लगता है कि कहानी सिर्फ गाँव में होने वाला दंगल और उससे उत्पन्न होता मनमुटाव के बारे में है। कहानी की गहराई में जब हम जाते है तब पता चलता है यह सिर्फ दंगल तक सीमित नहीं है बल्कि साम्प्रदायिकता और जातिवाद जैसे विषयों को भी पथिक ने उकेरा हैं। जहाँ पहले गाँव में अलग-अलग सम्प्रदाय के, अलग जाति के अलग वर्ग के लोग एक साथ भाईचारा के साथ दंगल करते थे वही अब साम्प्रदायिकता और जातिवाद ने सबको अलग कर दिया। अब सब अपना अपना दल बनाने लगे हैं। साम्प्रदायिकता किस प्रकार धीरे-धीरे,

बिना शोर किए गाँव तक पहुँच गयी है इसकी उपलब्धि किसी को नहीं है। साम्प्रदायिकता वर्तमान में हर जगह पनप रही है और यही बात 'दंगल' कहानी कहती है।

'परछाइयों में गुलाब' कहानी बसंत और रुखसाना की प्रेम कहानी है जो अधूरी रह गई। सदियों से चलती आ रही साम्प्रदायिकता के कारण यह प्रेम कहानी भी अधूरी रह गई। बसंत हिन्दू है और रुखसाना मुसलमान। जाहिर सी बात है कि दोनों का मिलन होना आसान नहीं था। रुखसाना गूंगी थी। वह बसंत को बहुत चाहती थी और बसंत भी रुखसाना को बहुत चाहता था। वह गूंगी होने के बावजूद बसंत उसकी हर बात को समझता था। दोनों चाहे कितना भी प्यार करे लेकिन दोनों अलग संप्रदाय से थे। रुखसाना की शादी दूसरे लड़के से कर दी गई लेकिन वह उसे बहुत मारता-पीटता था, कई-कई दिनों तक उसे खाना नहीं दिया जाता था। रुखसाना इतना कष्ट सह नहीं पाई और अंत में उसने मौत को गले लगा लिया। प्रस्तुत कहानी में पथिक ने प्रेम के सहारे साम्प्रदायिकता का यथार्थ चित्रण किया है।

चरण सिंह पथिक ने पति-पत्नी सम्बंध, रिश्तों में आई कृत्रिमता, किसान जीवन, उच-नीच, राजनीतिक भ्रष्टाचार, विकलांग व्यक्ति आदि का वर्णन किया है।

'कैसे उड़े चिड़िया' कहानी में पति-पत्नी के सम्बन्धों द्वारा यह दिखाया गया है कि एक रिश्ते में स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार होना कितना महत्वपूर्ण है। कहानी में चित्रित पत्नी हमेशा अपनी बातों को, इच्छाओं को अपने अंदर ही दबाई रखती थी। प्रस्तुत कहानी में चरण सिंह पथिक ने चिड़ा-चिड़ी के एक जोड़ा के माध्यम से पत्नी के मन की बातों को स्पष्ट किया है। एक दिन चिड़ा-चिड़ी के बीच झगड़ा हो गया और दोनों दूर-दूर खड़े एक दूसरे को देख रहे थे। यहाँ पति-पत्नी भी बैठकर दोनों को देख रहे थे। पति ने चिड़ा से कहा- "बेटा....! इसकी गरज़ होगी तो ख़ुद आएगी तेरे पास। तुझे नहीं जाना।"[25] यह सुन पत्नी बोली-

"इसकी क्या गरज़ जो आएगी और कब तक आएगी...? मैं कहती हूँ ये मर जाएगी लेकिन जाएगी नहीं...।"[26] पत्नी फिर बोली- "सुन भैणा....। तेरी हार सिर्फ तेरी नहीं... इस धरती की हार है। धरती हार गई तो प्रलय होगी....। तू चाहे मेरी अंगियाँ में घेसुआ बना ले। चाहे मेरे घाघरे में अंडा दे ले। पर हारना मत..."[27] पति पत्नी की बात सुनकर हतप्रभ था। सदियों तक हारते जाने की टीस पत्नी की आँखों से बहने लगी थी। पति अब भी सन्न था। बात इस हद तक पहुँच जाएगी उसे कभी अंदाजा नहीं था। विवेच्य कहानी के द्वारा कहानीकार ने उन महिलाओं की ओर इशारा किया है जो हमेशा से अपने रिश्तों के लिए अपनी इच्छाओं को दबाती आ रही हैं, बिना प्रतिरोध किए हारी आ रही हैं।

'फिरने वालियाँ' कहानी में पथिक ने भारतीय ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों को दिखाया हैं। यह कहानी विभिन्न पहलुओं के बारे में हैं जैसे- रिश्तों का बदलता रूप, कृत्रिमता, असहनशीलता और अपनों के बीच आई दूरियाँ। लेखक की पत्नी की बुआ का देहांत हो जाता है। सभी कुटुंबी बुआ के घर फिरने जाने वाले थे लेकिन रिश्तों में अब पहले जैसी गर्माहट नहीं रही। गाँव के सभी कुटुंबी तभी बुआ के घर जाने के लिए तैयार हुए जब लेखक ने जीप की व्यवस्था की। कोई भी बस से जाने के लिए तैयार नहीं था। अब किसी के पास अपनो के लिए जैसे कोई अपनापन या सहानुभूति नहीं रही। कहानी में पथिक ने रिश्तों में आई कृत्रिमता का सजीव वर्णन किया है। शोक सभा में जाने के लिए औरतें सजने सवारने पर ध्यान दे रही थी। औरतों का ध्यान सिर्फ कपड़ों, चप्पलों, नाक की सींक, कानों की झुमकी और गले की माला आदि पर ही था। सिर्फ यही नहीं। बुआ के घर पहुँचने के बाद कौन रोते हुए जाएगा और कौन गंगा जी का भजन गाते हुए इस बात पर औरतों के बीच बहस होने लगी। अंत में लेखक की दोनों चाची और गुलबी ताई गंगाजी के भजन गाती आगे आगे चल रही थी और पीछे लेखक

की पत्नी और अन्य पाँच औरतें ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई आ रही थी। लेखक यह देखकर एकदम हैरान रह गया। इस वर्णन से ही रिश्तों में आई कृत्रिमता का पहचान किया जा सकता है।

समकालीन अन्य कहानीकारों के तरह चरण सिंह पथिक ने भी किसान जीवन को अपने कहानियों में उकेरा है। उन्होंने ग्राम्य अंचल के किसानों का कष्ट, उत्पीड़न, उनपर होते अत्याचार का यथार्थ चित्रण किया है। साधारण किसानों के ऊपर गाँव के प्रधानों का किस प्रकार शोषण होता है उसे पथिक ने बखूबी दिखाया है।

'बांध टूट गया' कहानी में पथिक ने भरोसी नामक किसान के जरिए उच्च वर्ग के पटेलों द्वारा किया गया शोषण का यथार्थ वर्णन किया है। सुभाष चंद्र कुशवाहा ने इस कहानी के बारे में कहा है- "'बांध टूट गया' कहानी ने मिट्टी के बांध और सब्र के बांध को तोड़ते हुए हिंदी कहानी के सामंती उत्पीड़न का बेपर्दा करने का प्रयास किया है।"[28] गाँव का हर किसान सालों से धनजी पटेल से प्रतारित हैं। उनमें से एक है भरोसी। धनजी पटेल हर किसान की जमीन हड़प लेता है। अगर कोई किसान प्रतिरोध करने की कोशिश करता है तो उसे अधमरा बना देता है। यहाँ तक उसकी पत्नी को भी वह नहीं छोड़ता।

'सर्पदंश' कहानी का मुख्य पात्र है ग्यारस्या जो एक किसान है। ग्यारस्या उन तमाम किसानों का प्रतिनधि है जिनके खेत अति बारिश के कारण या अन्य कारणों से नष्ट हो जाते हैं और अंत में वे मृत्यु को गले लगा लेते हैं। ग्यारस्या कर्ज में डूबा हुआ था। वह कर्ज चुकाने के बारे में सोच ही रहा था कि एकदिन बहुत जोड़ से बारिश होने लगी। खेतों में घुटनों तक पानी भर गयी। पंद्रह-बीस दिन तक खेत पानी में डूबे रहे। ग्यारस्या पागल हो चुका था। जब मौसम साफ हुआ तो अतिवृष्टि से हुए नुकसान का आकलन करने गाँव-गाँव घर-घर में सरकारी लोग जाने लगे। टी.वी. पर किसानों के हुए नुकसान की भरपाई कैसे हो इस पर चैनलों में बहस शुरू

हो चुका था। उसी सुबह सरकार के लोग ग्यारस्या के गाँव में गया। सरकारी लोगों के साथ गाँव का सरपंच, ग्राम-सचिव, ग्राम-सेवक, पटवारी आदि सब ग्यारस्या के खेतों पर पहुंचे। सरपंच ने ग्यारस्या के झोपड़ी में झाँक कर देखा तो वह खाट पर मरा पड़ा था। खाट के नीचे कीटनाशक की एक खाली शीशी पड़ी हुई थी। उसकी मुट्ठी में एक कागज था जहाँ लिखा हुआ था- "इंदर राजा थारी...सरकारी थारी।"[29] सरपंच, ग्राम सेवक, पटवारी आदि सबको ग्यारस्या की आत्महत्या का कारण पता था लेकिन अगले दिन स्थानीय अखबारों में खबर छपी- "खेत से चारा काटने वक्त सर्पदंश से एक किसान की मौत।"[30]

पथिक ने सरकारी कार्यालयों में होने वाले भ्रष्टाचार का सजीव चित्रण किया है। गाँव के पंचायत से लेकर शहर के दफ्तरों के भ्रष्टाचार से घिरा हुआ है। इसका लाभ उच्च पद में रहने वाले लोग उठाते हैं और साधारण कर्मचारियों को भुगतना पड़ता हैं।

'मुर्गा' कहानी अध्यापक गंगाराम की कहानी है। गंगाराम को मामूली सी बात पर ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने एपीओ बनाकर जिला शिक्षा अधिकारी ऑफिस भेज दिया। शिक्षा अधिकारी के बारे में गंगाराम ने सुना था की वह बहुत खुर्राट किसम का आदमी है। गंगाराम उनसे बात करने के लिए भी डर रहा था। पहली बार उसकी 20 साल की साफ-सुथरी अध्यापकी पर यह ब्रजपात था। जब गंगाराम अधिकारी के पास जाकर अपनी बात बताने लगा तब उन्होंने कहा "आप तो आज के हर अखबार में छा रहे हो माट'साब....! हर अख़बार में आपकी खबर है। आपने शिक्षा विभाग का नाम रोशन किया है।"[31] अधिकारी ने दिनेश पंडित को अख़बार पढ़ने के लिए कहा। दिनेश पंडित ने अपनी भड़ास निकालते हुए कहा- "सर एससी/एसटी वालों ने हर डिपार्टमेन्ट की बैंड बाजा रखी है। रिज़र्वेशन से नौकरी मिल जाती है। काम के नाम पर गुलसप्पा। कुछ कहो तो एससी की धमकी देते हैं।"[32] गंगाराम को अन्य

एक अधिकारी फूलबाबू के पास भेजा गया। फूलबाबू भी एससी था। लेकिन खुद एससी होकर भी फूलबाबू ने गंगाराम के साथ दुर्व्यवहार किया। फूलबाबू ने गंगाराम को चाई भी परोसने दिया। एपीओ का पहला दिन था और वह एक हाथ में केतली और दूसरे में नमकीन लिए खड़ा था। फूलबाबू बहुत चालाक आदमी था। उसने गंगाराम के द्वारा ही अपने दुकान की उधारी भी चुकाई। गंगाराम ने एकबार फूलबाबू का जब अपने मुक्ति के बारे में पूछा तब फूलबाबू ने कहा- "मुक्ति होगी। जरूर होगी। मगर चौदह अप्रेल के बाद। उस दिन आंबेडकर पार्क में रात का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन होगा। दिन में शहर भर की गलियों में मोटरसाइकिल रैली निकाली जाएगी। बाबा के योगदान पर विद्वान लोग चर्चा करेंगे। झंडे-बैनर,पोस्टर से शहर पाता जाएगा। इस सब में पैसा लगता है। सब कुछ चंदे से होगा।"[33] फूलबाबू ने रसीद बुक गंगाराम के सामने रख कर कहा- "अपनी मर्जी से जितना चाहो भर दो। 16 अप्रैल को पोस्टिंग ऑर्डर आपकी जेब में होगा। ठीक है।"[34] गंगाराम ने पैंट की जेब से 11000 निकालकर फूलबाबू को दिया। लेकिन फूलबाबु ने सिर्फ 500 की ही रसीद बनाई। जब गंगाराम ने इस बारे में प्रश्न किया तो फूलबाबू ने कहा- "कवि सम्मेलन, परिचर्चा, झंडे, बैनर, पोस्टर, रैली, खर्चे ही खर्चे हैं। ये कौन करेगा...? अकेले मुझे आरक्षण मिला था क्या...? या जाटवों को ही अलग से मिला...? बाबा ने सारे दलितों के लिए किया था तो सभी का योगदान चाहिए की नहीं...?"[35] सिर्फ इतना ही नहीं फूलबाबू गंगाराम से और भी खर्च कराता है। यहाँ तक दारू और मांस भी उसी से लेता है। यह कहानी भ्रष्टाचार पर एक बेहतरीन कहानी है। कहानी में पथिक ने वर्ग भेद को भी स्पष्ट रूप से दिखाया है। पथिक ने इस कहानी में जातिभेद का सजीव चित्रण किया है। दिनेश पंडित और शिक्षा अधिकारी जैसे पात्रों द्वारा यह स्पष्ट रूप से चित्रित हुआ है। पथिक ने भ्रष्टाचार को भी इस प्रकार से दिखाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि

इंसान चाहे कोई भी हो वह भ्रष्टाचार कर सकता है। अपने जाति-धर्म, भाई-बंधु के साथ भी लोग भ्रष्टाचार करने से नहीं चूकते।

पथिक ने जाति व्यवस्था का बखूबी से चित्रण किया है। सदियों से उच्च जाति निम्न जाति को शोषित करता आ रहा है और आज भी प्राय: जगह यह प्रचलित है। जातिभेद इस प्रकार से लोगों के जहन में घुसा हुआ है कि लोग अपने गाँव, अंचल कें लोगों को पहचान नहीं पाते हैं और उन पर अत्याचार करने पर उतर आते हैं।

'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया' कहानी मोहरसिंह नामक एक साधारण शिक्षक के जीवन दशा पर आधारित है। कहानी में पथिक ने मोहरसिंह के जीवन द्वारा वर्ग भेद को बहुत ही सुंदर रूप से दिखाया है। मोहरसिंह के गाँव में सरकार के तरफ से गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों के लिए एक योजना आया जिसमें ऐसे लोगों को चयन करना था जिसकी वार्षिक आय बीस हजार से कम है, जिसके पास पक्का मकान, ट्रेक्टर या अन्य कोई वाहन नहीं है। जिसके पास दो हेक्टर से ज्यादा जमीन नहीं है और जिसकी मासिक आय पंद्रह सौ रूपए से ज्यादा नहीं है। चयनित करने का गुरु दायित्व प्राप्त हुआ मोहरसिंह को। मोहरसिंह ने भी बड़ी ईमानदारी के साथ लोगों का चयन किया और उसका एक लिस्ट बनाया लेकिन गाँव के कुछ उच्च वर्ग के जनप्रतिनिधि को यह लिस्ट पसंद नहीं आया। इसका कारण यह था कि उस लिस्ट में उच्च वर्ग के लोगों का एक भी नाम नहीं था। गाँव के प्रधान ने मोहरसिंह को फसाने के लिए अन्य सहकर्मियों के साथ मिलकर एक दूसरी सूची बनाई। उस सूची केवल गाँव के उच्च वर्ग के लोगों का ही नाम था, जिनके पास बहुत सारी सम्पत्ति थी। जब यह सूची कलेक्टर के पास गया तब कलेक्टर ने मोहरसिंह को सस्पैंड कर दिया। जातिभेद के कारण एक ही गाँव से होने बावजूद मोहरसिंह के खिलाफ षड्यंत्र रचा गया और मोहरसिंह को अपनी नौकरी से हाथ धोनी पड़ी।

'चौकी' कहानी ग्राम्य जीवन की उस चित्र को चित्रित करता है जहाँ उच-नीच, जात-पात, भ्रष्टाचार भरा हुआ था। कहानी का मुख्य पात्र बाबु जो भंगी जाति का है। वह एक चौकी में झाड़ू लगाने का काम करता था। चौकी पर रहते रहते उसके स्वभाव पर बदलाव आने लगा। जो लोग पहले उसके हाथों से पानी तक नहीं पीते थे वह अब उसके हाथों का बना खाना खाते थे। बाबु का साहस और आत्मविश्वास बढ़ने लगा था। बाबु के गाँव के भंगियों को किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं होती थी। कोई भी सरकारी योजना भंगियों तक नहीं पहुँच पाता। गाँव के सरपंच, सचिव और पटवारी यही कहकर बात को टाल देते थे- "भंगियों को जरूरत क्या है? माँगकर खाओ और मौज करो"।[36]

एक बार बाबू के गाँव में कलेक्टार, एस.पी., एस.डी.एम., तहसीलदार, बी.डी.ओ. और रसद अधिकारी आया। लोगों से जब समस्या पूछा गया तब बाबू खड़ा हुआ और बोलने लगा- "हुजूर, सरकार और प्रशासन की तो क्या कमी बताऊँ! कमी तो ग्राम पंचायत के कर्ता-धर्ताओं की है। यहाँ गरीबों की कोई सुनवाई नहीं करता। हम चार घर हरिजनों के आज तक काम से बंचित हैं। हमारे पास बी.पी.एल. होने के कारण मिलने वाला गेहूँ पिछले दो साल से नहीं मिला है। आप इसकी जाँच कर सकते हैं। हमें न कुओं से पानी भरने दिया जाता है और न ही टैंकर से....हमारे बच्चे खाय पानी पी-पीकर बीमार हो गए हैं। हमारी किसी भाई से कोई जाती-दुश्मनी नहीं है। हम तो काम चाहते हैं। अपना हक चाहते हैं। पीने के लिए मीठा पानी चाहते हैं बस!"[37] बाबू की बातें सुनने के बाद कलेक्टर ने रसद अधिकारी और एस.डी.एम. को ठीक से जाँच कर रिपोर्ट देने का आदेश दिया। हरिजनों के साथ जीतने भी गरीब लोग काम से वंचित थे उन लोगों को काम मिलने लगा। हरिजन मुहल्ले में पीने की पानी का व्यवस्था किया गया। कलेक्टर ने ग्राम सचिव और पटवारी को निलम्बित कर दिया। तहसीलदार का तबादला कर दिया और साथ ही राशन डीलर का लाइसेन्स छह महीने के लिए निलम्बित किया गया।

हर जगह बाबू की तारीफ होने लगी लेकिन तहसीलदार, सरपंच, सचिव और रासन डीलर बाबू की जान के दुश्मन बन चुके थे। एक रात बाबू जब चौकी से लौट रहा था तो रास्ते में चार नाकाबपोश ने उसे बेरहमी से मारा। वह तीन दिन तक बेहोश था। सब जानते थे कि वह चार नकाबपोश किसके आदमी थे लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा, यहाँ तक कि चौकी के पुलिस ने भी नहीं। एक दिन जब बाबू चौकी पर गया तो वहाँ सरपंच, राशन डीलर, थानेदार के साथ बैठकर दारू पी रहे थे। बाबू बोला "अपराधी तो पुलिस के मेहमान हो चुके हैं।"[38] बाबू के मुँह से यह बायत सुनकर सब लोग गरम हो गए और बाबू को जलील करने के लिए उसे नंगा कर दिया। साथ ही साथ उसको जोरजबरदस्ती पिलाया गया। अगले दिन सुबह बाबू ने मुहल्ले में सबको इकट्ठा करके कहा- "ऐसी ज़िंदगी से तो मौत बेहतर। न्याय और हक मांगेंगे तो एक दिन सबका यही हाल होगा।"[39] मुहल्ले के सभी लोग कलेक्टर के सामने आमरण-अनशन के लिए बैठ चुके थे। दो दिन तक उनको किसी ने पूछा तक नहीं और जब वह एस.पी. और कलेक्टर से मिलना चाह रहे थे उन्हें मिलने नहीं दिया गया। तीसरे दिन निमोनिया से पीड़ित बच्चे के चित्र के साथ अखबारों में छपा- 'अमुक गाँव के हरिजनों पर जुल्म। सभी ने आतंक से गाँव छोड़ा।'[40] खबर पढ़कर कलेक्टर और एस.पी. ने बाबू से बात की और बाबू ने साफ साफ कह दिया- "जब तक सरपंच, राशन डीलर, थानेदार और मुंशी को वाजिब सजा नहीं मिलती, वे यही मरेंगे।"[41] प्रशासन समझौता करना चाहता था लेकिन बाबू और अन्य लोग अपने बात पर अटल रहे। अंत में सरपंच और राशन डीलर की गिरफ्तारी का आदेश दिया गया और साथ ही साथ मुंशी और थानेदार को निलम्बित किया गया।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण हुआ है। राजनीति के कारण साधारण जनता को जो कष्ट सहना पड़ता है उसका यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में देखा जाता है।

'प्रधान की कुतिया' कहानी के जरिए पथिक ने राजनीति और भ्रष्टाचार को दिखाया है। राजनीति के लिए लोग किसी भी हद तक जा सकते हैं और कुछ भी कर सकते हैं। कहानी में कुतिया के जरिए नेताओं के द्वारा किया जाने वाला भ्रष्टाचार को दिखाया है। यह कहानी एक प्रधान की कुतिया सफेदी के बारे में है जिसपर प्रधान ने बहुत अत्याचार किया था। प्रधान की कुतिया बहुत ही सुंदर थी और हर कोई प्यार करता था। प्रधान की कुतिया को राजधानी के एम.एल.ए. का कुत्ता 'रॉकी' के लिए पसंद किया गया। प्रधान कुछ सरकारी सेंक्शन को पाने लिए अपनी कुतिया 'सफेदी' का सौदा किया और 'सफेदी' को एम.एल.ए. के घर छोड़कर चला आया। 'सफेदी' भी एम.एल.ए. के घर में रहने वाली नहीं थी वह रॉकी को घायल करके अपने घर चली आई लेकिन यह बात प्रधान को बिल्कुल पसंद नहीं आयी। एम.एल.ए. ने भी वह सेंक्शन कैन्सल कर दिया। इससे प्रधान को गुस्सा आया और उसने सफेदी को बहुत मारा-पीटा और कमरे में बंद कर दिया। सफेदी मुक्त जीवन जीना चाहती थी और वह बाहर जाने का मौका ढूंढ रही थी। एक दिन सफेदी भाग गई और गाँव में जाकर झबरू नामक कुत्ते से मिली। सफेदी को झबरू से प्यार हो गया लेकिन प्रधान को इस बात की जब खबर हुई तो उसने झबरू को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। झबरू का मालिक एक धोबी था। प्रधान ने उसे भी नहीं छोड़ा। उसने धोबी काजोड़या को धमकी दी- "स्साले sss तेरी इतनी औकात कि तू मेरी कुतिया को चुराकर अपने पिल्ले के साथ रखे। बलात्कार के आरोप में जेल में सड़वा दूंगा तुझे।"[42] कुछ दिनों बाद सफेदी गर्भवती हुई। जब प्रधान को इस बात की खबर हुई तो प्रधान ने सफेदी का गर्भपात करके उसे बाँझ बना दिया। यहाँ तक भी प्रधान को शांति नहीं मिली और एक दिन नशे में उसने अपने पट्ठों से बोला- "सफेदी को मैंने बेटी जैसा पाला है। मैं इसे अपने हाथ से मारना नहीं चाहता। तुम एक काम करो। इसे आज शाम को गाँव से दूर ले जाओ और इसकी कमर पर मार्शल जीप के टायर फेर दो ताकि ये किसी कुत्ते के काम की न रहे और

जीवन भर अपाहिज होकर दर-दर डंडे खाती फिरे। यही आखिरी सजा है इसकी।"[43] प्रधान ने जैसा कहा वैसा ही हुआ। सफेदी की कमर टूट गई, वह दर दर भटकी रही और अंत में उसकी मृत्यु हो गई। एक कुतिया के जरिए कहानीकार वर्तमान समाज में घटित घटनाओं की ओर संकेत किया है। राजनीतिक स्वार्थ के कारण लोग हत्या-हिंसा पर भी उतर जाते है, उसी संदर्भ में पथिक ने इस कहानी का यथार्थ चित्रण किया है।

'पागल कुत्ते' कहानी में चरण सिंह पथिक ने गाँव की राजनीति का चित्रण किया है। गाँव में चुनाव लड़ा जा रहा है। चुनाव के हर उम्मीदवार अपने-अपने पैंतरे और तरीके से लोगों से वोट माँग रहा है। उसी समय गाँव का चौथी धोबी को गिरकर कूल्हे में चोट आई। चौथी धोबी की पत्नी बादामी और लड़का श्रीचंद उसके देख-भाल में लग गए। चौथी धोबी धोबियों का पटेल था। उसके इशारे से ही गाँव के सभी धोबी अपना वोट डालेंगे। सभी उम्मीदवारों को पता था कि चौथी धोबी के तरफ से तीस वोट आने वाला हैं इसलिए सभी उम्मीदवार उसकी सेवा में लग गए। चौथी के चारपाई के पास अंगूर, सेब, केले, दूध, बिस्कुट और दवाइयों का इतना ढेर लग चुका था कि वह आँख फाड़े हैरत से बस देखे जा रहा था। हर उम्मीदवार आकर बादामी को बोलता था- "पैसों की फिक्र मत करना ताई। एक से लाख तक लगा देंगे। यहाँ से लेकर जयपुर-दिल्ली तक इलाज होगा।"[44] चौथी का हालत खराब हो गया था और उसे अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में सारे उम्मीदवार चौथी को देखने गया। उन उम्मीदवारों में से ही एक था पृथ्वीराज जो चौथी से और अन्य धोबियों से ज्यादा आशा लगाकर बैठा हुआ था। चौथी को बीमारी के साथ-साथ चिंता ने जकड़ लिया था। उसको पता था कि चुनाव के बाद सबको पैसा लौटाना होगा। 'सेवा' के नाम पर सब जो खर्च कर रहे हैं वह चुनाव के बाद ही माँगने के लिए टपक जाएँगे। ये सब चिंता में चौथी पगला गया था। गाँव में ये बात आग की तरह फैल गयी। गाँव के ही अंगुरी खटीकन ने कहा- "वो तो इन

गैबियों(उम्मीदवारों) ने तरह-तरह कि गोलियाँ खिला खिलाकर यही गाँव में पागल कर दिया था, वरना कूल्हे कि हड्डी तो कभी कि ठीक हो गयी थी। आग लगे ऐसे चुनाव और ऐसे इलाज-इलाजियों में...।"[45] चौथी बच नहीं पाया। हरलाल चुनाव जीत गया था और यह बात पृथ्वीराज हजम नहीं कर पा रहे थे, चौथी के घरवालों ने अर्थी तैयार किया और अर्थी उठने ही वाली थी कि वहाँ पृथ्वीराज पहुँच गया और अपने पैसे माँगने लगा। "पहले बीस हजार...फिर अर्थी उठाना।"[46] बादामी जैसे-तैसे बोल पड़ी- "कौन गैबी तुम्हारे द्वार गया था झोली फैलाकर। तुमने वोटों की खातिर हमारी मनाही के भी खर्चा किया। अब हार गए, तो पैसे माँगने आ गए। मेरे धणी की लाश आँगन में राखी है। शर्म नहीं आयी तुझे.. । कितना बड़ा जागीरदार है तू...। कितना बड़ा रईस है तू...। वोटों की खातिर कल परसो भीख माँग रहा था हमसे! हमारा वोट! जिसको मना कर दिया। मेरे धणी का हत्यारा है तू...। पागल कुत्ते हो तुम... । हड़क गए...हड़क गए।"[47] किस प्रकार चुनाव के लिए, राजनीति के लिए और पैसों के लिए लोग असंवेदनशील होते जा रहे है पथिक ने उसे सुंदर रूप से चित्रित किया है।

पथिक ने विकलांग व्यक्तियों के बारे में भी अपनी कहानी में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने ऐसे व्यक्ति के बारे में भी उल्लेख किया है जो संपूर्ण रुप से विकलांग नहीं होते हुए भी उन्हें कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। उनकी जीवन इतनी सीमित हो जाती हैं कि उन्हें अपने जीवन से कोई अपेक्षा नहीं रहती यहाँ तक उनके सपने भी छोटे हो जाते है।

'सपने' कहानी के जरिए पथिक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आशा-आकांक्षा जिस प्रकार से छोटे होते हैं उसी प्रकार उनके सपने भी छोटे होते हैं। बंशी बाबू के घुटनों में बहुत दर्द रहता है, वह अच्छे से चल-फिर नहीं पाते है। एक बार बंशीलाल के सपने में प्रधानमंत्री जी आए और उन्होंने बंशीलाल को एक माँग रखने

के लिए कही। जो भी बंशीलाल माँगेगा प्रधानमंत्री वह माँग पूरा करेंगे। बंशीलाल ने सपने में यही कहा- "मेरी एक माँग यही थी कि... साहब मैं गठिया से बहुत परेशान हूँ। उठने-बैठने में बड़ी तकलीफ होती है। एक किलोमीटर पैदल चलकर दूध लाना पड़ता है। चला नहीं जाता। लगता है, अब जान निकली कि बस पैर लड़खड़ाए...कि अब बस गिरने ही वाला हूँ। इसलिए साहब, आप जैसी एक छड़ी तो मैंने खरीद ली, मगर घुटनों का महँगा ऑपरेशन नहीं करवा सकता। सो मेरे घुटने का ऑपरेशन करवा दो, बस्स sss।"[48]

'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता' कहानी गुठली की जीवन की कहानी है। गुठली उर्फ गुट्ठल के कुल तीन भाई हैं और वह मंझला था। वह दसवीं में फेल हो गया था और तभी उसकी पढ़ाई छूट गई थी। पढ़ाई छूटने के बाद भी पड़ोसी गाँवों से लेकर देश के हर बड़े शहर में कमाने के बाद विदेश भी होकर (हाल ही में ओमान से) लोटा था। लेकिन उसकी एक कमी ने उसकी ज़िंदगी बदल डाली। गुट्ठल की बायीं आँख में फर्क थी जिस कारण वह कभी अपना घर नहीं बसा पाया। एक बार लड़की भी ठीक हो चुकी थी लेकिन लड़की के बाप अचानक बोला- "सा'ब गलती की माफी चाहता हूँ। बिचले लड़के का सम्बंध नहीं करेंगे।"[49] जब उसे कारण पूछा गया तो उसने बताया- "बिचले लड़के की बायीं में फर्क है सा'ब। हम इसे छेक कर छोटे और बड़े लड़के की सगाई के लिए तैयार हैं।"[50] इस घटना के बाद गुट्ठल की शादी के लिए तमाम कोशिश की गयी लेकिन गाँव के कुछ अपने ही इसमें बाधा बन गए। जब कोई सगाई के लिए आता था तो उसे यह कहकर भगा दिया जाता था कि- "लड़का भैंगा है। एक आँख लपझप करती है।"[51] कोई तो यह भी कहता है- "डिपर मारता है।"[52] गुट्ठल हमेशा अकेला ही रह गया और पता नहीं कितने गुट्ठल आज भी अकेला है।

समकालीन हिंदी कहानीकार और चरण सिंह पथिक की कहानियों का विवेचन करने के बाद कई समानताएँ और असमानताएँ परिलक्षित होती हैं। वह निम्नलिखित हैं-

समानताएँ: समकालीन हिंदी कहानीकार और चरण सिंह पथिक की कहानियों में कई समानताएँ प्राप्त होती हैं। अन्य कहानीकारों के तरह पथिक की कहानियों में भी स्त्री जीवन का चित्रण सशक्त रूप से हुआ है। अपनी अस्मिता के लिए लड़ने वाली स्त्री पात्र का भी स्पष्ट चित्रण मिलता है। ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में मिलता है। समकालीन अन्य कहानियों की भाँति उनकी कहानियों में मानव मूल्यों का चित्रण मिलता है। पथिक की कहानियों में जातिभेद, उच्च-नीच, सांप्रदायिकता आदि का वर्णन मिलता है। उन्होंने पारिवारिक विघटन, तनाव, स्त्री-पुरुष सम्बंधों को भी अपनी कहानियों का वर्ण्य विषय बनाया हैं। समकालीन अन्य कहानियों की तरह ही बस्तुवाद, बाजारबाद आदि का भी चित्रण पथिक की कहानियों में प्राप्त होती है।

असमानताएँ: चरण सिंह पथिक की कहानियों में अन्य समकालीन कहानियों की तरह समानताएँ तो प्राप्त होती हैं किंतु ज्यादातर उनकी कहानियों में असमानताएँ प्राप्त होती हैं। जिससे उनकी कहानियों को अन्य कहानियों से भिन्न करती हैं।

पथिक ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण सजीव रूप में किया है। उनके स्त्री पात्र अधिकतर गाँव के हैं। उन्होंने नौकरीपेशा औरतों का चित्रण बहुत कम किया है। उनके ज्यादातर स्त्री पात्र निम्न जाति के हैं और शोषित हैं। उनके स्त्री पात्र की विशेषता यह है कि वह आर्थिक रूप से सक्षम न होने पर भी अपने ऊपर हुए अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाती हैं। वह चुपचाप अत्याचार को सहन नहीं करती बल्कि अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती हैं चाहे वह अपने सास के खिलाफ हो, पति के खिलाफ, गाँव के पटेलों के खिलाफ ही क्यों न हो? इसके साथ-साथ पथिक ने ग्राम्य अंचल में स्त्री के द्वितीय विवाह को साधारण

रूप में चित्रित किया है। विधवा विवाह का वर्णन भी उनकी कहानियों में प्राप्त है। नगर अंचल में यह बात वर्तमान साधारण रूप में देखी जाती है किंतु ग्राम अंचल में अभी भी लोग इसे साधारण रूप से स्वीकार नहीं कर पाते किंतु पथिक ने इन बातों को बड़े ही साधारण रुप से चित्रित किया है।

पथिक की कहानियों के सिर्फ स्त्री पात्र ही नहीं बल्कि पुरुष पात्र भी शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं। निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों द्वारा किए गए अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हैं। उन्होंने ऐसे किसानों का चित्रण किया है, जिन पर गाँव के पटेलों द्वारा शोषण होता है, किंतु वे साधारण किसान होने पर भी उन पटेलों क़े खिलाफ अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं। निम्न जाति के पात्र भी अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं चाहे वह गाँव के प्रधान के खिलाफ या सरकार के खिलाफ ही क्यों न हो?

जहाँ अन्य कहानीकारों की कहानियाँ शहरों की ओर गति कर रही हैं वहीं पथिक की कहानियाँ गाँव की ओर गति कर रही हैं। उनके अधिकतर पात्र ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए हैं। पथिक खुद गाँव से संबन्ध रखते हैं। उन्होंने अपना जीवन गाँव में व्यतीत किया है। अपनी कहानियों के पात्रों को उन्होंने खुद देखा है, उन परिस्थितियों को खुद भोगा है। इसलिये उनकी कहानियों में पात्रों का सजीव चित्रण हुआ है और इसी कारण उन्हें अन्य कहानीकारों से अलग करते हैं।

संदर्भ:

1. समकालीन कहानी: युगबोध का संदर्भ, डॉ. पुष्पलाल सिंह (उद्धृत), पृ. 55

2. समकालीन हिंदी कहानी और समाजवादी चेतना, डॉ. किरणबाला(उद्धृत), पृ.15

3. वही, पृ. 21

4. वही, पृ. 09

5. समकालीन कहानी रचना मुद्रा, डॉ. पुष्पलाल सिंह(उद्धृत), पृ. 21

6. स्त्री चिंतन की चुनौतियां, रेख्ता कस्त्वार(उद्धृत), पृ.16

7. समकालीन हिंदी कहानी: दलित विमर्श, श्री मोहम्मद रफी एवं हंचिलाल(उद्धृत), पृ. 44

8. समकालीन कहानी रचना मुद्रा, डॉ. पुष्पलाल सिंह(उद्धृत), पृ. 22

9. समकालीन कहानी: युगबोध, डॉ. पुष्पलाल सिंह(उद्धृत), पृ. 86

10. हिंदी कहानी का इतिहास 1976-2000, गोपाल राय, पृ.19

11. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, पृ. 308

12. वही, पृ. 310

13. हिंदी कहानी का इतिहास, भाग-3, गोपाल राय, पृ.125

14. दैनिक भास्कर, चण्डीदत्त शुक्ल, सितम्बर, 2020

15. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 29

16. वही, पृ. 32

17. वही, पृ. 76

18. वही, पृ. 76

19. बात यह नहीं है, चरण सिंह पथिक, पृ. 76

20. वही, पृ. 76

21. वही, पृ. 76

22. वही, पृ. 79

23. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 98

24. वही, पृ. 98

25. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 58

26. वही, पृ. 59

27. वही, पृ. 59

28. हिंदी कहानी और किसान अनुभूति, सुभाष चंद्र कुशवाहा, मार्च 2016, विशेषांक 2

29. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 46

30. वही, पृ. 46

31. वही, पृ. 48

32. वही, पृ. 48

33. वही, पृ. 53

34. वही, पृ. 53

35. वही, पृ. 54

36. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 45

37. वही, पृ. 48

38. पीपल के फूल, चरण सिंह पथिक, पृ. 51

39. वही, पृ. 52

40. वही, पृ. 52

41. वही, पृ. 52

42. वही, पृ. 112

43. वही, पृ. 114

44. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 117

45. वही, पृ. 118

46. वही, पृ. 120

47. वही, पृ. 120

48. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ. 59

49. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, चरण सिंह पथिक, पृ. 05

50. वही, पृ. 05

51. वही, पृ. 06

52. वही, पृ. 06

उपसंहार

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है। हिंदी कहानियाँ विविध विशेषताओं के साथ समय का अतिक्रम करके वर्तमान स्थिति तक पहुँची है। पहले कहानियाँ मौखिक होती थीं। उन मौखिक कहानियों को लोक कथा की संज्ञा दी गयी। वे कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रचलित रहीं। धीरे-धीरे कहानियों ने लिखित रूप लेना प्रारम्भ किया। हिंदी कहानी का विकास क्रम है- प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी (1850-1918), प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी (1919-1936), प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी (1937 से आज तक)। हिंदी कहानियों का उद्देश्य मनोरंजन एवं प्रेरणा देने वाला है। चरण सिंह पथिक समकालीन हिंदी कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं।

चरण सिंह पथिक का जन्म 15 जुलाई, 1963 को ग्राम रौंसी, जिला करौली (राजस्थान) में हुआ। पथिक जी ने कक्षा एक से आठवीं तक की शिक्षा अपने ही गाँव रौंसी से प्राप्त की। उन्होंने दसवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री महावीर जी, करौली (राजस्थान) से 1980 में की। बारहवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1982 में की। एस.टी.सी. (टीचर ट्रेनिंग) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1988 में की। 1 जुलाई, 1989 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बाँसलई, प्रतापगढ़ (राजस्थान) में शिक्षक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वे 31 जुलाई, 2023 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाड़ा नादौती, करौली (राजस्थान) से शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हुए।

चरण सिंह पथिक के चार कहानी संग्रह हैं: 'बात यह नहीं है', 'पीपल के फूल', 'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस', 'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता'।

'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह में दस कहनियाँ हैं- 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया', 'दुकान', 'खिलौना', 'बक्खड़', 'लाल किले का जिन्न', 'कसाई', 'बांध टूट गया', 'दंगल', 'बात यह नहीं है', 'बीमार'। इन कहानियों में स्त्री जीवन, लोक विश्वास, लोक परम्परा आदि का चित्रण हुआ है।

'पीपल के फूल' कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं- 'फिरने वालियाँ', 'कलुआ', 'मूँछें', 'चौकी', 'जल फोड़वा', 'बेरी का पेड़', 'वह अब भी नंगा है', 'दो बहनें', 'ठंडी गदुली', 'प्रधान की कुतिया', 'पीपल के फूल'। प्रस्तुत कहानियों में जाति भेद, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण किया गया है।

'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस' कहानी संग्रह में दस कहानियाँ है- 'हत्यारे समय का कोलाज', 'रुदन', 'एक निकम्मे की तीन टक्करें', 'सपने', 'परछाइयों में गुलाब', 'यात्रा', 'कोई जादू है क्या', 'पागल कुत्ते', 'रोजड़े', 'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस'। इस संग्रह की कहानियों में आर्थिक स्थिति, लोक परमपरा के साथ-साथ लोक जीवन के पहलुओं को दर्शाया गया है।

'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता' कहानी संग्रह में चार कहानियाँ हैं- 'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता', 'सर्पदंश', 'मुर्गा', 'कैसे उड़े चिड़िया'। प्रस्तुत कहानियों में पारिवारिक विघटन, स्त्री जीवन की विद्रुपताओं, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण किया गया है।

उक्त कहानी संग्रहों में लोक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने लोक जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को उकेरा है।

'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शन' धातु से 'घञ' प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ 'देखना' होता है, जिसका लट् लकार में अन्य पुरुष एक वचन का रूप 'लोकते' है। अतः 'लोक' शब्द का अर्थ है 'देखने वाला'। इस प्रकार वह समस्त जन समुदाय जो इस कार्य को करते है 'लोक' कहलाएगा। इस शब्द के प्रचलित अर्थ हैं- एक तो विश्व अथवा जनसाधारण।

साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है, किन्तु इस दृष्टि से केवल गाँवों में ही नहीं वरन नगरों, जंगलों, पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव समाज जो अपने परंपरा, रीति-रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित या अल्प सभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है।

आधुनिक सभ्यता से दूर, अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली, तथाकथित अशिक्षित एवं असंस्कृत जनता को लोक कहते हैं जिनका आचार-विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है।

लोक संस्कृति के अंतर्गत लोक विश्वास, लोक संस्कार, त्योहार, धार्मिक मान्यताएँ आती हैं। सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, नदी, पर्वत, जीव-जंतु, वृक्ष-लता आदि से सम्बंधित विभिन्न लोक विश्वास प्रचलित है। भारतीय समाज में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों का पालन किया जाता है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में कुछ संस्कारों का ही वर्णन मिलता है। उसी प्रकार भारतीय जन-जीवन के विभिन्न त्योहारों (होली, दिवाली आदि) के साथ-साथ धार्मिक मान्यताओं (शिव, गणेश, कुल देवी-देवता आदि) का भी वर्णन किया है।

सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख की अभिव्यंजना, जिस साहित्य में प्रकट होती है, उसे लोक साहित्य कहते हैं। ऐसी मौलिक अभिव्यक्ति जो लोक की युग-युगीन साधना में समाहित रहते हुए, जिसमें लोक मानस प्रतिबिम्बित रहता है, वही लोक साहित्य है। वही मौलिक अभिव्यक्ति है और सामान्य जनसमूह उसे अपना मानता है।

लोक साहित्य के अंतर्गत लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक सुभाषित आते हैं। लोकगीत का मूल आशय है- लोक में प्रचलित गीत। सामान्य रूप से लोक में

प्रचलित, लोक द्वारा रचित और लोक के लिए गाए जाने वाले गीतों को लोकगीत कहा जाता है। लोक कथाएँ इतनी पुरानी हैं कि यह बता पाना मुश्किल है कि पहले लोक कथा किसने शुरू की थी। लोक कथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक स्थान से दूसरे स्थान में जाती रहती है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने से इन लोक कथाओं का स्वरूप भी बदलता है। लोककथा के लिए अंग्रेज़ी में फोक टेल (Folk Tale) शब्द का प्रयोग होता है। लोक कथाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समान रूप से आकर्षण का केंद्र रही हैं। ये लोक कथाएँ मानव जीवन के विश्वासों, परम्पराओं, प्रथाओं आदि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

'लोकगाथा' के लिए अंग्रेजी में 'वैलेड' शब्द का प्रयोग होता है। 'बैलेड' शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के 'वेल्पर' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- 'नृत्य करना'। लोकगाथा सम्पूर्ण लोक जीवन की सहज-सरल अभिव्यक्ति होती है। इसमें जन जीवन की प्राय: सभी अनुभूतियों (हर्ष- विषाद, उमंग-उत्साह, आशा-आकांक्षा, भय-आश्चर्य, वीर-करुण आदि) की अभिव्यक्ति है। लोक नाट्य लोक में, लोक के मनोरंजन के लिए अभिनीत किए जाते हैं। लोक नाट्य का लोक जीवन से घनिष्ठ संबंध है। लोक से संबन्धित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों के समय इनका अभिनय किया जाता है। लोक सुभाषित के अंतर्गत लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ आदि आते हैं। लोक मानस अपने दैनिक जीवन में लोकोक्तियों, मुहावरों और पहेलियों का प्रयोग करता है। लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं पहेलियाँ लोक जीवन की सुदीर्घ परंपरा के वाहक हैं। समकालीन हिंदी कहानीकारों की कहानियों में लोक जीवन की छवियों को उकेरा है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में जाति व्यवस्था का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया' कहानी में जाति व्यवस्था का वर्णन हुआ है। यह मोहर सिंह नामक एक शिक्षक की कहानी है। कहानीकार ने मोहर सिंह के जरिए गाँव में होने वाले भ्रष्टाचार के साथ-साथ उच्च जाति के लोगों का निम्न जाति के लोगों के प्रति भेदभाव को दिखाया है। मोहर सिंह के गाँव में सरकार की तरफ से गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए एक योजना आयी, जिसमें ऐसे लोगों का चयन करना था, जिसकी वार्षिक आय बीस हजार रुपये से कम है, जिसके पास पक्का मकान, ट्रेक्टर या अन्य कोई वाहन नहीं है, जिसके पास दो हेक्टर से ज्यादा जमीन नहीं है और जिसकी मासिक आय पंद्रह सौ रुपये से ज्यादा नहीं है। लोगों को चयनित करने का दायित्व मोहर सिंह को दिया गया। मोहर सिंह ने बड़ी ही

ईमानदारी के साथ यह काम किया और एक सूची निकाली। उस सूची में केवल गरीब और निम्न जाति के लोगों के नाम ही शामिल थे। यह सूची गाँव के प्रधान को पसंद नहीं आयी। प्रधान सूची बनाने के समय मोहर सिंह के पास जाकर एक सूची दे आए थे, जिसमें सिर्फ उच्च जाति के लोगों का नाम था, जो लोग आर्थिक रूप से सबल थे। उन्होंने जब सूची में अपने दिए हुए एक भी नाम को नहीं देखा तो प्रधान ने मोहर सिंह को नौकरी से निकलवाने के लिए जाल बिछाया। अंत में प्रधान के जाल में मोहर सिंह फस गया और नौकरी से निकाल दिया गया।

'मूंछे' कहानी एक फौजी की कहानी है, जो जाटव जाति का है। फौजी का नाम है रामराज। रामराज के जरिए कहानीकार ने राजस्थान में हुए गूजरों और मीणा के आंदोलन की ओर इशारा किया है। रामराज को फौज में भर्ती हुए तीन साल हो गए थे। साल भर से उसने अपनी पत्नी का मुंह नहीं देखा था। 15 दिन की छुट्टी लेकर वह घर आया था। घर आते ही वह अपनी हीरोहोंडा मोटरसाईकल लेकर पत्नी को लाने ससुराल निकल गया। रामराज ससुराल पहुँच ही नहीं पाया। वह रास्ते पर ही गुजरों और मीणा के आरक्षण मांग के हिंसक आंदोलन में फंस गया था। घर से निकलने से पहले ही उसकी माँ ने उसे यह कह कर समझाने की कोशिश भी की थी कि- तेरी ये छोटी छोटी छल्लेदार मूंछे और ये फौजी कट बाल...? कहीं गुजर तुझे मीणा और मीणा तुझे गुजर समझ बैठे तो...? मां की आशंका सच बन गई। रास्ते में उसको खतरनाक भीड़ दिखाई दी जहां सत्तर साल के बूढ़े से लेकर दस साल के बच्चे तक के हाथ में कुछ न कुछ ख़तरनाक हथियार मौजूद था। भीड़ में से ही किसी ने उसको अपना जात पूछा और उसने जवाब में जाटव कहा। उसकी छोटी छोटी मूंछें और फौजी कटिंग बाल देखकर किसी ने उसका विश्वास नहीं किया। उलटा कहने लगे कि चमारों के पुरखे भी गए हैं कभी फौज में...? उन लोगों ने उसे गुजर समझकर बेरहमी से मार-पीट की। रामराज जैसे-तैसे अपनी जान बचाते हुए आगे बढ़ा लेकिन वह बच नहीं पाया। कुछ दूर जाने के बाद मीणाओं के झुंड ने उसे घेर लिया। फिर से उससे जात पूछी गयी। इस बार उसने झूठ बोला और खुद को

मीणा बताया लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका गोत्र पूछा जाएगा। वह गोत्र नहीं बता पाया और फिर से उस पर लात-घूंसे बरसने लगे। उसकी मूंछे काट दी गयी। आरक्षण मांग के इस आक्रोश में रामराज ऐसे ही पिसा गया और अधमरी अवस्था में एक पेड़ के नीचे पड़ा रहा।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण हुआ है। परिवार हर समाज की एक आवश्यक इकाई है। एक एक परिवार जुड़कर ही समाज बनता है। पथिक ने अपनी कहानियों में परिवार के विभिन्न रूपों को उजागर किया है। 'खिलौना' नामक कहानी दो अलग-अलग परिवारों के विषय में हैं। जहाँ एक परिवार को दो वक्त की रोटी के लिए चिंतित होना पड़ता है, वहीं दूसरा परिवार ऐसा है, जिसे कभी पैसों के बारे में सोचना नहीं पड़ता। कहानी का पात्र भरोसी जो मि.दीपक के घर में काम करता है और भरोसी की पत्नी विमली सड़क पर गिट्टी डालने का काम करती है। उनके दो बच्चे हैं। चारों जैसे-तैसे जीवन का गुजारा कर रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी है कि बच्चों को घूँट भर दूध भी नसीब नहीं होता। सिर्फ एक कप चाय से ही काम चलाना पड़ता है। दूसरी तरफ मि.दीपक सिन्हा जिसका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का लंबा-चौड़ा कारोबार है। उसकी पत्नी मिसेज सिन्हा कॉलेज में लेक्चरर है। उनके एक बच्चा सोनू, जिसकी देखभाल भरोसी करता है। मि.दीपक भरोसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था, लेकिन भरोसी सिर्फ अपने परिवार के लिए सब सह लेता था। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह चित्रित किया है कि अपने परिवार की खुशी के लिए लोग कितना संघर्ष करते हैं।

चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में नारी जीवन का सजीव चित्रण किया है। 'बीमार' कहानी एक साहित्यकार और उनकी बीमार पत्नी की कहानी है। साहित्यकार अपनी पत्नी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था, यहाँ तक कि वह अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाता था। अंत में साहित्यकार को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और वह उन्हें सुधारने लगा।

कहानीकार ने आलोच्य कहानी के माध्यम से समाज की उस मानसिकता की ओर इशारा किया है, जहाँ स्त्री को हमेशा पुरुष से कम आँका जाता है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में सामाजिक लोक विश्वास एवं परम्पराओं का भी चित्रण मिलता है। 'कसाई' कहानी का मुख्य पात्र है- सुंदर। सुंदर जो राजनीतिक लोभ के कारण अपने पिता के हाथों ही मारा गया। इस बात को छुपाने के लिए उसके पिता ने सुंदर की मृत्यु को ऊपर की हवा बताई। पूरे गाँव में यह बात फैल गयी कि किसी कसाई ने सुंदर की हत्या की है। लोगों को हर जगह सिर्फ कसाई दिखने लगा। उस कसाई को भगाने के लिए एक तांत्रिक को बुलाया गया। शराब, लौंग का जोड़ा, धूप, अगरबत्ती, इत्र, जायफल, उड़द के दाने, तिल, लाल कपड़ा के साथ सारा सामान मँगा लिया गया। तांत्रिक विभिन्न प्रकार का ढोंग करता गया और झूठ बोलता गया। लोग तांत्रिक की सारी बातें मानते गए। इस कहानी के जरिए कहानीकार ने लोगों के अंधविश्वास को दिखाया है।

चरण सिंह पथिक ने लोक जीवन के राजनीतिक पक्ष का यथार्थ चित्रण किया है। 'पागल कुत्ते' कहानी में चरण सिंह पथिक ने मेन गाँव की राजनीति का चित्रण किया है। गाँव में चुनाव होने जा रहा है। चुनाव का हर उम्मीदवार अपने-अपने पैंतरे और तरीके से लोगों से वोट माँग रहे हैं। उसी समय गाँव के चौथी धोबी को गिरकर कूल्हे में चोट आई। चौथी धोबी की पत्नी बादामी और लड़का श्रीचंद उसकी देख-भाल में लग गए। चौथी धोबी धोबियों का पटेल था। उसके इशारे से ही गाँव के सभी धोबी अपना वोट डालेंगे। सभी उम्मीदवारों को पता था कि चौथी धोबी की तरफ से तीस वोट आने वाली हैं, इसलिए सभी उम्मीदवार उसकी सेवा में लग गए। चौथी की चारपाई के पास अंगूर, सेब, केले, दूध, बिस्कुट और दवाइयों का इतना ढेर लग चुका था कि वह आँख फाड़े हैरत से बस देखे जा रहा था। हर उम्मीदवार आकर बादामी को बोलता था- पैसों की फिक्र मत करना ताई। एक से लाख तक लगा देंगे। यहाँ से लेकर जयपुर-दिल्ली तक इलाज होगा। चौथी बच नहीं पाया। अर्थी तैयार की गयी। अर्थी उठने ही वाली थी कि लोग अपने-अपने पैसे माँगने लगे। किस प्रकार चुनाव के लिए, राजनीति के लिए और पैसों के लिए लोग असंवेदनशील होते जा रहे हैं पथिक ने उसे बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

चरण सिंह पथिक की प्राय: सभी कहानियों में आर्थिक पक्ष का चित्रण हुआ है। 'कोई जादू है क्या' कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार की है। कहानी के मुख्य पात्र के पास एक पुरानी

होंडा मोटर साइकिल है जिसे वह बहुत सालों से चलाता आ रहा है। वह एक नयी मोटर साइकिल खरीदना चाहता है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं है कि वह एक नयी मोटर साइकिल खरीद सके। वह एक मास्टर है और उसकी पत्नी मास्टरनी। उनके पास एक भैंस थी और मास्टरनी उसे अपने बच्चे जैसा प्यार करती है। एक दिन मास्टर के घर एक फौजी आया और उस समय मास्टरनी घर पर नहीं थी। फौजी के पास स्प्लेंडर प्लस मोटर साइकिल थी जो मास्टर जी को पसंद आ गयी और फौजी को मास्टर की भैंस पसंद आ गयी। मास्टर ने मोटर साइकिल के साथ भैंस का सौदा कर लिया। इस कहानी में पथिक ने निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपने और उनकी मजबूरी का चित्रण किया है। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण मास्टर जी अपनी मन पसंद मोटर साइकिल नहीं ले पाया और अपने सपने के खातिर न चाहते हुए भी उसने भैंसों का सौदा किया।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष का भी चित्रण हुआ है। 'यात्रा' कहानी में लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष का वर्णन है। यात्रा कहानी में पथिक ने ग्राम्य अंचल में होनी वाली धार्मिक पदयात्राओं का वर्णन किया है। एक ही गाँव में दो-दो पदयात्राओं का आयोजन किया जाता है। एक तरफ बजरंगदास की छत्रछाया में गोवर्धन महाराज की पदयात्रा और दूसरी तरफ भगत शिरोमणि के सान्निध्य में कैलादेवी की पदयात्रा। गाँव के सभी लोग कैसे दो तरफ बट जाते हैं। पदयात्रा में किस प्रकार का परिवेश होता है, उसका वास्तविक चित्रण पथिक ने अपनी इस कहानी में किया है। इस कहानी के माध्यम से लोक परम्परा, धार्मिक मान्यता और समय के साथ आए परिवर्तन का चित्रण हुआ है।

किसी भी कहानीकार के लिए भाषा का ज्ञान और भाषा पर अधिकार होना आवश्यक है, तभी उसकी रचना सार्थक होगी। भाषा के सहारे ही कहानीकार अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज आदि शब्दों का प्रयोग किया है। पथिक ने अपनी कहानियों में मुहावरे और लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है, जिससे भाषा रोचक होने के साथ-साथ सजीव भी हो उठी है। अलंकारों के प्रयोग से उनकी भाषा में मनोरमता आयी है।

कहानी में शैली का प्रयोग भी बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक कहानीकार की अपनी विशेष शैली होती है। पथिक की कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों (वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक,

आत्मकथात्मक, संवादात्मक, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक, पूर्वदीप्ति, पात्रहीन) का सजीव वर्णन मिलता है।

चरण सिंह पथिक की कहानियाँ, समकालीन हिंदी कहानियों में प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन हिंदी कहानियों से अलग हैं। पथिक ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण सजीव रूप में किया है। उनके स्त्री पात्र अधिकतर गाँव के हैं। उन्होंने नौकरीपेशा स्त्रियों का चित्रण बहुत कम किया है। उनके ज्यादातर स्त्री पात्र निम्न जाति के हैं और शोषित हैं। उनके स्त्री पात्र की विशेषता यह है कि वे आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होने पर भी अपने ऊपर हुए अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं। वे चुपचाप अत्याचार को सहन नहीं करतीं बल्कि अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती हैं। चाहे वह अपनी सास के खिलाफ हो, पति के खिलाफ, गाँव के पटेलों के खिलाफ ही क्यों न हो? पथिक ने स्त्री के द्वितीय विवाह को सामान्य रूप में चित्रित किया है। विधवा विवाह का वर्णन भी उनकी कहानियों में प्राप्त है। नगर अंचल में यह बात वर्तमान में सामान्य ढंग में देखी जाती है किंतु ग्राम्य अंचल में अभी भी लोग इसे साधारण रूप से स्वीकार नहीं कर पाते किंतु पथिक ने इन बातों को बड़े ही साधारण रूप से चित्रित किया है।

पथिक की कहानियों के सिर्फ स्त्री पात्र ही नहीं बल्कि पुरुष पात्र भी शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं। निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों द्वारा किये गए अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। उन्होंने ऐसे किसानों का भी चित्रण किया है, जिन पर गाँव के पटेलों द्वारा शोषण होता है किंतु वह साधारण किसान होने पर भी उन पटेलों क़े खिलाफ अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं। उनके अन्य निम्न जाति के पात्र भी अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं, चाहे वह गाँव के प्रधान के खिलाफ हो या फिर सरकार के खिलाफ ही क्यों न हो?

जहाँ अन्य कहानीकारों की कहानियाँ शहरों की ओर गति कर रही हैं वहीं पथिक की कहानियाँ गाँव की ओर गति कर रही हैं। उनके अधिकतर पात्र ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए हैं। पथिक खुद गाँव से सम्बंध रखते हैं। उन्होंने अपना जीवन गाँव में ही व्यतीत किया है। अपनी कहानियों के पात्रों को उन्होंने खुद देखा है, उन परिस्थितियों को खुद भोगा है। इसलिए उनकी कहानियों में पात्रों का सजीव चित्रण है, इसी कारण उन्हें अन्य कहानीकारों से अलग करते हैं।

समकालीन हिंदी कहानी लेखन परम्परा में चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानी लेखन

शैली से ही अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। उनकी कहानियों की अन्यतम विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी कहानियों में वर्तमान जीवन में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। समाज के प्रायः सभी पहलुओं को उन्होंने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1. चरण सिंह पथिक की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं।

2. पथिक की अधिकतर कहानियों में स्त्री के सबल रूप का चित्रण हुआ है। उनके स्त्री पात्र हमेशा अपने अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

3. पथिक की कहानियों के पुरुष पात्रों में भी यह सबल रूप दिखाई देता है। चाहे वह साधारण किसान हो अथवा ऑफिस का कर्मचारी हो।

4. चरण सिंह पथिक ने अपने पात्रों को जीया है। जिसके कारण वे कहानियों में यथार्थ वर्णन कर पाए हैं।

5. पथिक की कहानियों में लोक में प्रचलित विभिन्न प्रथाओं का सजीव वर्णन है।

6. चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में पर्यावरण संरक्षण को भी महत्व दिया है।

7. पथिक ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन की चुनौतियों को उकेरा है।

8. पथिक ने अपनी कहानियों में गरीबी, भुखमरी का सजीव चित्रण किया है।

9. पथिक की कहानियों में राजस्थान की माटी, रहन-सहन और आंचलिक जीवन शैली का चित्रण मिलता है।

10. पथिक की कहानियों में भूमंडलीकरण का सजीव वर्णन है।

11. चरण सिंह पथिक की कहानियों की भाषा-शैली सरल और सुबोध है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ:

1. चरण सिंह पथिक, बात यह नहीं है, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, 2005
2. चरण सिंह पथिक, पीपल के फूल, अरू पब्लिकेशंस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2010
3. चरण सिंह पथिक, गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, अरू पब्लिकेशंस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2014
4. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, कलमकार मंच, जयपुर, 2019

सहायक ग्रंथ:

1. अभिमन्यु सिंह, लोक साहित्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमान, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. अमरसिंह वाधान, समकालीन हिंदी कहानी, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1987
3. कमला प्रसाद, राजेंद्र शर्मा, स्त्री: मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
4. कुन्दनलाल उप्रेती, लोक साहित्य के प्रतिमान, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2017
5. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, 1957
6. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014
7. खगेंद्र ठाकुर, कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
8. गिरिधारी लाल शर्मा, कहानी एक कला, ग्रंथ माला प्रकाशन, बांकीपुर, 1941
9. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

10. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
11. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास-3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
12. दानबहादुर पाठक एवं डॉ. मनोहरगोपाल भार्गव, भाषा विज्ञान, प्रकाशन केंद्र लखनऊ, 2015
13. देवीशंकर अवस्थी, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
14. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013
15. नरेंद्र मोहन, समकालीन हिंदी कहानी की पहचान, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
16. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
17. नीरज शर्मा, अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ: संवेदना और शिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
18. प्रेमलता तिवारी, कथाकार राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन, लोक हित प्रकाशन, लखनऊ, 2010
19. प्रेम सिंह, भ्रष्टाचार: विरोध, विभ्रम और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
20. प्रवेश कुमार, लोक साहित्य, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
21. पुष्पलाल सिंह, समकालीन हिंदी कहानी, हरियाणा साहित्य अकादेमी, चंदीगढ़, 1987
22. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012
23. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

24. भारत यायावर (सं), हिंदी भाषा (महावीर प्रसाद द्विवेदी), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
25. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
26. मयंक मुरारी, लोक जीवन पहचान, परंपरा और प्रतिमान, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे, महाराष्ट्र, 2021
27. डॉ. रवींद्र भ्रमर, हिंदी साहित्य में लोक तत्व, भारत साहित्य मंदिरा, दिल्ली, 1965
28. राघव प्रकाश, शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1983
29. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
30. राजेंद्र यादव, कहानी स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
31. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
32. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
33. रामविलास शर्मा, लोक जीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1955
34. रैल्फ फोक्स, उपन्यास और लोक जीवन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 1957
35. विवेक शंकर, हिंदी साहित्य, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादेमी, जयपुर, 2016
36. डॉ. शरर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, हिंदुस्तानी एकाडेमी, इलाहाबाद
37. शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
38. श्याम सुंदर दुबे, लोक परम्परा पहचान और प्रवाह, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2003
39. श्याम परमार, भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1954

40. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1992
41. सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल एंड कम्पनी, आगरा, 1971
42. सुरेंद्र यादव, हिंदी कहानी रचना और परिस्थिति, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, 2009
43. सुरेश सिन्हा, हिंदी कहानी: उद्भव और विकास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967

कोश:

1. धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान सं), हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2013
2. बदरीप्रसाद साकरिया, भूपतिराम साकरिया (सं), राजस्थानी हिंदी शब्द कोश, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1993
3. भोलानाथ तिवारी, हिंदी मुहावरा कोश, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2010

पत्रिकाएँ:

1. द्विभाषी राष्ट्रसेवक, सं. क्षीरदा कुमार शइकीया, अंक 10, जनवरी 2024
2. संकल्य, सं. आर. एस. सरार्जु, अंक 2, अप्रैल-जून, 2024

शोधार्थी का जीवन-वृत्त

1. नाम	: बर्णाली खाउंड
2. पिता का नाम	: प्रशांत खाउंड
3. माता का नाम	: प्रतिमा दास
4. पता	: मरिगाँव, असम- 782411
5. जन्मतिथि	: 02-07-1997
6. शैक्षणिक योग्यता	: एम.ए. (हिंदी)
7. मोबाइल	: 6002718375
8. ईमेल	:bornalikhound73@gmail.com
9. प्रकाशन	:

क) बर्णाली खाउंड एवं सीनियर प्रो. सुशील कुमार शर्मा, 'बात यह नहीं है' कहानी संग्रह में अभिव्यक्त लोक जीवन का सामाजिक पक्ष, द्विभाषी राष्ट्रसेवक, अंक: 10, जनवरी, 2024

ख) बर्णाली खाउंड एवं सीनियर प्रो. सुशील कुमार शर्मा, चरण सिंह पथिक की कहानियों में चित्रित लोक जीवन, संकल्य, अंक: 2, अप्रैल, 2024

10. संगोष्ठियों में पत्र वाचन:

क) चरण सिंह पथिक की कहानियों में मानव अधिकार, आयोजक: हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय), 31 मार्च एवं 01 अप्रैल, 2023

ख) चरण सिंह पथिक की कहानियों में पर्यावरण एवं प्रकृति ('पीपल के फूल' कहानी संग्रह के संदर्भ में), आयोजक: मानविकी एवं भाषा संकाय, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल, 27-29 फरवरी, 2024

बर्णाली खाउंड

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम	: बर्णाली खाउंड
शिक्षा	: पी-एच.डी.
विभाग	: हिंदी
शोध-प्रबंध का शीर्षक	: चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन
प्रवेश शुल्क के भुगतान की तिथि	: 03-11-2020
शोध प्रस्ताव की संतुस्ति:	
1. विभागीय शोध समिति की तिथि	: 06-04-2021
2. बी. ओ. एस. की तिथि	: 04-05-2021
3. स्कूल बोर्ड की तिथि	: 20-05-2021
मिज़ोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	: 2010702
पी-एच.डी. पंजीयन संख्या	:MZU/Ph.D./1678 of 03.11.2020

(प्रो. सुशील कुमार शर्मा)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन
CHARAN SINGH PATHIK KI KAHANIYON MEIN LOK JEEVAN

(मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश)

AN ABSTRACT SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

बर्णाली खाउंड

BORNALI KHOUND

MZU REGN. NO: 2010702

Ph.D. REGN. NO: MZU/Ph.D./1678 of 03.11.2020

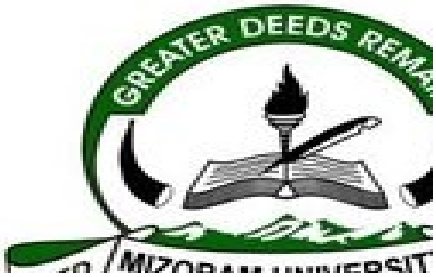

हिंदी-विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

फरवरी, 2025

FEBRUARY, 2025

चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन
CHARAN SINGH PATHIK KI KAHANIYON MEIN LOK JEEVAN

अनुसंधित्सु
बर्णाली खाउंड
हिंदी-विभाग
By
BORNALI KHOUND
DEPARTMENT OF HINDI

शोध-निर्देशक
वरिष्ठ आचार्य सुशील कुमार शर्मा
SUPERVISOR
SENIOR PROFESSOR SUSHIL KUMAR SHARMA

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजॉल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश

Submitted
In partial fulfillment of the requirement of the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

विषयानुक्रमणिका

शोध-प्रबंध का सारांश

चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है। हिंदी कहानियाँ विविध विशेषताओं के साथ समय का अतिक्रम करके वर्तमान स्थिति तक पहुँची है। पहले कहानियाँ मौखिक होती थीं। उन मौखिक कहानियों को लोक कथा की संज्ञा दी गयी। वे कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रचलित रहीं। धीरे-धीरे कहानियों ने लिखित रूप लेना प्रारम्भ किया। हिंदी कहानी का विकास क्रम है- प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी (1850-1918), प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी (1919-1936), प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी (1937 से आज तक)। हिंदी कहानियों का उद्देश्य मनोरंजन एवं प्रेरणा देने वाला है। चरण सिंह पथिक समकालीन हिंदी कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय है- **"चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन"**। प्रस्तुत शोध-प्रबंध छ: अध्यायों में नियोजित है।

शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय- **'चरण सिंह पथिक का जीवन एवं रचना-संसार'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय- **'चरण सिंह पथिक का जीवन: विविध पड़ाव'** है। इस उप-अध्याय में चरण सिंह पथिक के जीवन का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। चरण सिंह पथिक का जन्म 15 जुलाई, 1963 को ग्राम रौंसी, जिला करौली (राजस्थान) में हुआ। पथिक जी ने कक्षा एक से आठवीं तक की शिक्षा अपने ही गाँव रौंसी से प्राप्त की। उन्होंने दसवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री महावीर जी, करौली (राजस्थान) से 1980 में की। बारहवीं कक्षा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1982 में की। एस.टी.सी. (टीचर ट्रेनिंग) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, करौली (राजस्थान) से 1988 में की। 1 जुलाई, 1989 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बाँसलई, प्रतापगढ़ (राजस्थान) में शिक्षक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वे 31 जुलाई, 2023 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाड़ा नादौती, करौली (राजस्थान) से शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हुए।[1]

द्वितीय उप-अध्याय- **'चरण सिंह पथिक का रचना-संसार'** है। इस उप-अध्याय में चरण सिंह पथिक के रचना संसार पर प्रकाश डाला गया है। चरण सिंह पथिक के चार कहानी संग्रह हैं: 'बात यह नहीं है', 'पीपल के फूल', 'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस', 'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता'।

1. बात यह नहीं है (2005): इस कहानी संग्रह में दस कहनियाँ हैं- 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया', 'दुकान', 'खिलौना', 'बक्खड़', 'लाल किले का जिन्न', 'कसाई', 'बांध टूट गया', 'दंगल', 'बात यह नहीं है', 'बीमार'। इन कहानियों में स्त्री जीवन, लोक विश्वास, लोक परम्परा आदि का चित्रण हुआ है।

2. पीपल के फूल (2010): इस कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं- 'फिरने वालियाँ', 'कलुआ', 'मूँछें', 'चौकी', 'जल फोड़वा', 'बेरी का पेड़', 'वह अब भी नंगा है', 'दो बहनें', 'ठंडी गदुली', 'प्रधान की कुतिया', 'पीपल के फूल'। प्रस्तुत कहानियों में जाति भेद, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण किया गया है।

3. गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस (2014): इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ है- 'हत्यारे समय का कोलाज', 'रुदन', 'एक निकम्मे की तीन टक्करें', 'सपने', 'परछाइयों में गुलाब', 'यात्रा', 'कोई जादू है क्या', 'पागल कुत्ते', 'रोजड़े', 'गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस'। इस संग्रह की कहानियों में आर्थिक स्थिति, लोक परमपरा के साथ-साथ लोक जीवन के पहलुओं को दर्शाया गया है।

4. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता (2018): इस कहानी संग्रह में चार कहानियाँ हैं- 'मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता', 'सर्पदंश', 'मुर्गा', 'कैसे उड़े चिड़िया'। प्रस्तुत कहानियों में पारिवारिक विघटन, स्त्री जीवन की विद्रुपताओं, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण किया गया है।

उक्त कहानी संग्रहों में लोक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उन्होंने लोक जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को उकेरा है।

द्वितीय अध्याय- **"लोक जीवन: अवधारणा और स्वरूप"** है। इसके अंतर्गत 'लोक' शब्द का अर्थ, परिभाषा और लोक संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। 'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शन' धातु से 'घञ' प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ 'देखना' होता है,

जिसका लट् लकार में अन्य पुरुष एक वचन का रूप 'लोकते' है। अतः 'लोक' शब्द का अर्थ है 'देखने वाला'। इस प्रकार वह समस्त जन समुदाय जो इस कार्य को करते है 'लोक' कहलाएगा। "लोक शब्द के प्रचलित अर्थ हैं- एक तो विश्व अथवा जनसाधारण। साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है, किन्तु इस दृष्टि से केवल गाँवों में ही नहीं वरन नगरों, जंगलों, पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव समाज जो अपने परंपरा, रीति-रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित या अल्प सभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है।"[2]

"आधुनिक सभ्यता से दूर, अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली, तथाकथित अशिक्षित एवं असंस्कृत जनता को लोक कहते हैं जिनका आचार-विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है।"[3] लोक संस्कृति के अंतर्गत लोक विश्वास, लोक संस्कार, त्योहार, धार्मिक मान्यताएँ आती हैं। सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, नदी, पर्वत, जीव-जंतु, वृक्ष-लता आदि से सम्बंधित विभिन्न लोक विश्वास प्रचलित है। भारतीय समाज में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों का पालन किया जाता है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में कुछ संस्कारों का ही वर्णन मिलता है। उसी प्रकार भारतीय जन-जीवन के विभिन्न त्योहारों (होली, दिवाली आदि) के साथ-साथ धार्मिक मान्यताओं (शिव, गणेश, कुल देवी-देवता आदि) का भी वर्णन किया है।

तृतीय अध्याय- **"समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन"** है। इस अध्याय के दो उप-अध्याय हैं। प्रथम उप-अध्याय **'लोक जीवन और साहित्य'** है। "सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख की अभिव्यंजना, जिस साहित्य में प्रकट होती है, उसे लोक साहित्य कहते हैं।"[4] "ऐसी मौलिक अभिव्यक्ति जो लोक की युग-युगीन साधना में समाहित रहते हुए, जिसमें लोक मानस

प्रतिबिम्बित रहता है, वही लोक साहित्य है। वही मौलिक अभिव्यक्ति है और सामान्य जनसमूह उसे अपना मानता है।"[5]

लोक साहित्य के अंतर्गत लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक सुभाषित आते हैं। लोकगीत का मूल आशय है- लोक में प्रचलित गीत। सामान्य रूप से लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित और लोक के लिए गाए जाने वाले गीतों को लोकगीत कहा जाता है। लोक कथाएँ इतनी पुरानी हैं कि यह बता पाना मुश्किल है कि पहले लोक कथा किसने शुरू की थी। लोक कथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक स्थान से दूसरे स्थान में जाती रहती है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने से इन लोक कथाओं का स्वरूप भी बदलता है। लोककथा के लिए अंग्रेज़ी में फोक टेल (Folk Tale) शब्द का प्रयोग होता है। लोक कथाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए समान रूप से आकर्षण का केंद्र रही हैं। ये लोक कथाएँ मानव जीवन के विश्वासों, परम्पराओं, प्रथाओं आदि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

'लोकगाथा' के लिए अंग्रेजी में 'बैलेड' शब्द का प्रयोग होता है। 'बैलेड' शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के 'वेल्पर' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है- 'नृत्य करना'। लोकगाथा सम्पूर्ण लोक जीवन की सहज-सरल अभिव्यक्ति होती है। इसमें जन जीवन की प्राय: सभी अनुभूतियों (हर्ष- विषाद, उमंग-उत्साह, आशा-आकांक्षा, भय-आश्चर्य, वीर-करुण आदि) की अभिव्यक्ति है। लोक नाट्य लोक में, लोक के मनोरंजन के लिए अभिनीत किए जाते हैं। लोक नाट्य का लोक जीवन से घनिष्ठ संबंध है। लोक से संबन्धित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों के समय इनका अभिनय किया जाता है। लोक सुभाषित के अंतर्गत लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ आदि आते हैं। लोक मानस अपने दैनिक जीवन में लोकोक्तियों, मुहावरों और पहेलियों का प्रयोग करता है। लोकोक्तियाँ, मुहावरें एवं पहेलियाँ लोक जीवन की सुदीर्घ परंपरा के वाहक हैं।

द्वितीय उप-अध्याय- **'समकालीन हिंदी कहानी और लोक जीवन'** है। इस उप-अध्याय में समकालीन हिंदी कहानी की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए समकालीन हिंदी कहानीकारों की कहानियों का विश्लेषण किया गया है, जिनमें लोक जीवन की छवियों को उजागर किया गया है।

चतुर्थ अध्याय- **'चरण सिंह पथिक की कहानियों में लोक जीवन'** है। इस अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय- **'लोक जीवन का सामाजिक पक्ष'** है। इसके अंतर्गत समाज के प्रमुख पहलुओं- जाति व्यवस्था, पारिवारिक जीवन, नारी विषयक धारणा, सामाजिक लोक विश्वास एवं परंपराओं का उदाहरण सहित विवेचन किया गया है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में जाति व्यवस्था का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'कलेक्टर आया! कलेक्टर आया' कहानी में जाति व्यवस्था का वर्णन हुआ है। यह मोहर सिंह नामक एक शिक्षक की कहानी है। कहानीकार ने मोहर सिंह के जरिए गाँव में होने वाले भ्रष्टाचार के साथ-साथ उच्च जाति के लोगों का निम्न जाति के लोगों के प्रति भेदभाव को दिखाया है। मोहर सिंह के गाँव में सरकार की तरफ से गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए एक योजना आयी, जिसमें ऐसे लोगों का चयन करना था, जिसकी वार्षिक आय बीस हजार रुपये से कम है, जिसके पास पक्का मकान, ट्रेक्टर या अन्य कोई वाहन नहीं है, जिसके पास दो हेक्टर से ज्यादा जमीन नहीं है और जिसकी मासिक आय पंद्रह सौ रुपये से ज्यादा नहीं है। लोगों को चयनित करने का दायित्व मोहर सिंह को दिया गया। मोहर सिंह ने बड़ी ही ईमानदारी के साथ यह काम किया और एक सूची निकाली। उस सूची में केवल गरीब और निम्न जाति के लोगों के नाम ही शामिल थे। यह सूची गाँव के प्रधान को पसंद नहीं आयी। प्रधान सूची बनाने के समय मोहर सिंह के पास जाकर एक सूची दे आए थे, जिसमें सिर्फ उच्च जाति के लोगों का नाम था, जो लोग आर्थिक रूप से सबल थे। उन्होंने जब सूची में अपने दिए हुए एक भी नाम को नहीं देखा तो प्रधान ने मोहर सिंह को नौकरी से निकलवाने के लिए जाल बिछाया। अंत में प्रधान के जाल में मोहर सिंह फस गया और नौकरी से निकाल दिया गया।

'मूंछे' कहानी एक फौजी की कहानी है, जो जाटव जाति का है। फौजी का नाम है रामराज। रामराज के जरिए कहानीकार ने राजस्थान में हुए गूजरों और मीणा के आंदोलन की ओर इशारा किया है। रामराज को फौज में भर्ती हुए तीन साल हो गए थे। साल भर से उसने अपनी पत्नी का मुंह नहीं देखा था। 15 दिन की छुट्टी लेकर वह घर आया था। घर आते ही वह अपनी हीरोहोंडा मोटरसाईकल लेकर पत्नी को लाने ससुराल निकल गया। रामराज ससुराल

पहुँच ही नहीं पाया। वह रास्ते पर ही गुजरों और मीणा के आरक्षण मांग के हिंसक आंदोलन में फंस गया था। घर से निकलने से पहले ही उसकी माँ ने उसे यह कह कर समझाने की कोशिश भी की थी कि- तेरी ये छोटी छोटी छल्लेदार मूंछे और ये फौजी कट बाल...? कहीं गुजर तुझे मीणा और मीणा तुझे गुजर समझ बैठे तो...? मां की आशंका सच बन गई। रास्ते में उसको खतरनाक भीड़ दिखाई दी जहां सत्तर साल के बूढ़े से लेकर दस साल के बच्चे तक के हाथ में कुछ न कुछ ख़तरनाक हथियार मौजूद था। भीड़ में से ही किसी ने उसको अपना जात पूछा और उसने जवाब में जाटव कहा। उसकी छोटी छोटी मूंछें और फौजी कटिंग बाल देखकर किसी ने उसका विश्वास नहीं किया। उलटा कहने लगे कि चमारों के पुरखे भी गए हैं कभी फौज में...? उन लोगों ने उसे गुजर समझकर बेरहमी से मार-पीट की। रामराज जैसे-तैसे अपनी जान बचाते हुए आगे बढ़ा लेकिन वह बच नहीं पाया। कुछ दूर जाने के बाद मीणाओं के झुंड ने उसे घेर लिया। फिर से उससे जात पूछी गयी। इस बार उसने झूठ बोला और खुद को मीणा बताया लेकिन उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका गोत्र पूछा जाएगा। वह गोत्र नहीं बता पाया और फिर से उस पर लात-घूंसे बरसने लगे। उसकी मूंछे काट दी गयी। आरक्षण मांग के इस आक्रोश में रामराज ऐसे ही पिसा गया और अधमरी अवस्था में एक पेड़ के नीचे पड़ा रहा।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण हुआ है। परिवार हर समाज की एक आवश्यक इकाई है। एक एक परिवार जुड़कर ही समाज बनता है। पथिक ने अपनी कहानियों में परिवार के विभिन्न रूपों को उजागर किया है। 'खिलौना' नामक कहानी दो अलग-अलग परिवारों के विषय में हैं। जहाँ एक परिवार को दो वक्त की रोटी के लिए चिंतित होना पड़ता है, वहीं दूसरा परिवार ऐसा है, जिसे कभी पैसों के बारे में सोचना नहीं पड़ता। कहानी का पात्र भरोसी जो मि.दीपक के घर में काम करता है और भरोसी की पत्नी विमली सड़क पर गिट्टी डालने का काम करती है। उनके दो बच्चे हैं। चारों

जैसे-तैसे जीवन का गुजारा कर रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी है कि बच्चों को घूँट भर दूध भी नसीब नहीं होता। सिर्फ एक कप चाय से ही काम चलाना पड़ता है। दूसरी तरफ मि.दीपक सिन्हा जिसका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट का लंबा-चौड़ा कारोबार है। उसकी पत्नी मिसेज सिन्हा कॉलेज में लेक्चरर है। उनके एक बच्चा सोनू, जिसकी देखभाल भरोसी करता है। मि.दीपक भरोसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था, लेकिन भरोसी सिर्फ अपने परिवार के लिए सब सह लेता था। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह चित्रित किया है कि अपने परिवार की खुशी के लिए लोग कितना संघर्ष करते हैं।

चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में नारी जीवन का सजीव चित्रण किया है। 'बीमार' कहानी एक साहित्यकार और उनकी बीमार पत्नी की कहानी है। साहित्यकार अपनी पत्नी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था, यहाँ तक कि वह अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाता था। अंत में साहित्यकार को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और वह उन्हें सुधारने लगा। कहानीकार ने आलोच्य कहानी के माध्यम से समाज की उस मानसिकता की ओर इशारा किया है, जहाँ स्त्री को हमेशा पुरुष से कम आँका जाता है।

चरण सिंह पथिक की कहानियों में सामाजिक लोक विश्वास एवं परम्पराओं का भी चित्रण मिलता है। 'कसाई' कहानी का मुख्य पात्र है- सुंदर। सुंदर जो राजनीतिक लोभ के कारण अपने पिता के हाथों ही मारा गया। इस बात को छुपाने के लिए उसके पिता ने सुंदर की मृत्यु को ऊपर की हवा बताई। पूरे गाँव में यह बात फैल गयी कि किसी कसाई ने सुंदर की हत्या की है। लोगों को हर जगह सिर्फ कसाई दिखने लगा। उस कसाई को भगाने के लिए एक तांत्रिक को बुलाया गया। शराब, लौंग का जोड़ा, धूप, अगरबत्ती, इत्र, जायफल, उड़द के दाने, तिल, लाल कपड़ा के साथ सारा सामान मँगा लिया गया। तांत्रिक विभिन्न प्रकार का ढोंग करता गया और झूठ बोलता गया। लोग तांत्रिक की सारी बातें मानते गए। इस कहानी के जरिए कहानीकार ने लोगों के अंधविश्वास को दिखाया है।

द्वितीय उप-अध्याय- **'लोक जीवन का राजनीतिक पक्ष'** है। चरण सिंह पथिक ने लोक जीवन के राजनीतिक पक्ष का यथार्थ चित्रण किया है। 'पागल कुत्ते' कहानी में चरण सिंह

पथिक ने मेन गाँव की राजनीति का चित्रण किया है। गाँव में चुनाव होने जा रहा है। चुनाव का हर उम्मीदवार अपने-अपने पैंतरे और तरीके से लोगों से वोट माँग रहे हैं। उसी समय गाँव के चौथी धोबी को गिरकर कूल्हे में चोट आई। चौथी धोबी की पत्नी बादामी और लड़का श्रीचंद उसकी देख-भाल में लग गए। चौथी धोबी धोबियों का पटेल था। उसके इशारे से ही गाँव के सभी धोबी अपना वोट डालेंगे। सभी उम्मीदवारों को पता था कि चौथी धोबी की तरफ से तीस वोट आने वाली हैं, इसलिए सभी उम्मीदवार उसकी सेवा में लग गए। चौथी की चारपाई के पास अंगूर, सेब, केले, दूध, बिस्कुट और दवाइयों का इतना ढेर लग चुका था कि वह आँख फाड़े हैरत से बस देखे जा रहा था। हर उम्मीदवार आकर बादामी को बोलता था- "पैसों की फिक्र मत करना ताई। एक से लाख तक लगा देंगे। यहाँ से लेकर जयपुर-दिल्ली तक इलाज होगा।"[6] चौथी बच नहीं पाया। अर्थी तैयार की गयी। अर्थी उठने ही वाली थी कि लोग अपने-अपने पैसे माँगने लगे। किस प्रकार चुनाव के लिए, राजनीति के लिए और पैसों के लिए लोग असंवेदनशील होते जा रहे हैं पथिक ने उसे बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

तृतीय उप-अध्याय- **'लोक जीवन का आर्थिक पक्ष'** है। चरण सिंह पथिक की प्राय: सभी कहानियों में आर्थिक पक्ष का चित्रण हुआ है। 'कोई जादू है क्या' कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार की है। कहानी के मुख्य पात्र के पास एक पुरानी होंडा मोटर साइकिल है जिसे वह बहुत सालों से चलाता आ रहा है। वह एक नयी मोटर साइकिल खरीदना चाहता है लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं है कि वह एक नयी मोटर साइकिल खरीद सके। वह एक मास्टर है और उसकी पत्नी मास्टरनी। उनके पास एक भैंस थी और मास्टरनी उसे अपने बच्चे जैसा प्यार करती है। एक दिन मास्टर के घर एक फौजी आया और उस समय मास्टरनी घर पर नहीं थी। फौजी के पास स्प्लेंडर प्लस मोटर साइकिल थी जो मास्टर जी को पसंद आ गयी और फौजी को मास्टर की भैंस पसंद आ गयी। मास्टर ने मोटर साइकिल के साथ भैंस का सौदा कर लिया। इस कहानी में पथिक ने निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सपने और उनकी मजबूरी का चित्रण किया है। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण मास्टर जी अपनी मन पसंद मोटर साइकिल नहीं ले पाया और अपने सपने के खातिर न चाहते हुए भी उसने भैंसों का सौदा किया।

चतुर्थ उप-अध्याय- **'लोक जीवन का सांस्कृतिक पक्ष'** है। चरण सिंह पथिक की कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष का मार्मिक चित्रण हुआ है। 'यात्रा' कहानी में लोक जीवन के सांस्कृतिक पक्ष का वर्णन है। यात्रा कहानी में पथिक ने ग्राम्य अंचल में होनी वाली धार्मिक

पदयात्राओं का वर्णन किया है। एक ही गाँव में दो-दो पदयात्राओं का आयोजन किया जाता है। एक तरफ बजरंगदास की छत्रछाया में गोवर्धन महाराज की पदयात्रा और दूसरी तरफ भगत शिरोमणि के सान्निध्य में कैलादेवी की पदयात्रा। गाँव के सभी लोग कैसे दो तरफ बट जाते हैं। पदयात्रा में किस प्रकार का परिवेश होता है, उसका वास्तविक चित्रण पथिक ने अपनी इस कहानी में किया है। इस कहानी के माध्यम से लोक परम्परा, धार्मिक मान्यता और समय के साथ आए परिवर्तन का चित्रण हुआ है।

पंचम अध्याय- **"चरण सिंह पथिक की कहानियों का शिल्प-विधान"** है। इस अध्याय के अंतर्गत दो उप-अध्याय हैं। प्रथम उप-अध्याय- **'भाषा'** है। इसके अंतर्गत भाषा का अर्थ, परिभाषा एवं चरण सिंह पथिक की कहानियों की भाषा को सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है। किसी भी कहानीकार के लिए भाषा का ज्ञान और भाषा पर अधिकार होना आवश्यक है, तभी उसकी रचना सार्थक होगी। भाषा के सहारे ही कहानीकार अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज आदि शब्दों का प्रयोग किया है। पथिक ने अपनी कहानियों में मुहावरे और लोकोक्ति का भी प्रयोग किया है, जिससे भाषा रोचक होने के साथ-साथ सजीव भी हो उठी है। अलंकारों के प्रयोग से उनकी भाषा में मनोरमता आयी है।

द्वितीय उप-अध्याय- **'शैली'** है। कहानी में शैली का प्रयोग भी बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक कहानीकार की अपनी विशेष शैली होती है। पथिक की कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों (वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, प्रश्नात्मक, पत्रात्मक, पूर्वदीप्ति, पात्रहीन) का सजीव वर्णन मिलता है।

षष्ठ अध्याय- **"समकालीन हिंदी कहानीकारों में चरण सिंह पथिक का स्थान"** है। इसके अंतर्गत समकालीन हिंदी कहानीकारों की कहानियाँ तथा चरण सिंह पथिक की कहानियों की विवेचना की गई है। समकालीन हिंदी कहानियाँ और चरण सिंह पथिक की कहानियों की समानताओं-असमानताओं को विवेचित किया गया है। समकालीन कहानीकार हैं- कमलेश्वर, भीष्म साहनी, रामदरश मिश्र, ममता कालिया, 'चित्रा मुद्गल', 'रवींद्र कालिया', 'मेहरुन्निमा परवेज' आदि।

चरण सिंह पथिक की कहानियाँ, समकालीन हिंदी कहानियों में प्रमुख स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ समकालीन हिंदी कहानियों से अलग हैं। पथिक ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण सजीव रूप में किया है। उनके स्त्री पात्र अधिकतर गाँव के हैं। उन्होंने नौकरीपेशा स्त्रियों का चित्रण बहुत कम किया है। उनके ज्यादातर स्त्री पात्र निम्न जाति के हैं और शोषित हैं। उनके स्त्री पात्र की विशेषता यह है कि वे आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होने पर भी अपने ऊपर हुए अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं। वे चुपचाप अत्याचार को सहन नहीं करतीं बल्कि अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती हैं। चाहे वह अपनी सास के खिलाफ हो, पति के खिलाफ, गाँव के पटेलों के खिलाफ ही क्यों न हो? पथिक ने स्त्री के द्वितीय विवाह को सामान्य रूप में चित्रित किया है। विधवा विवाह का वर्णन भी उनकी कहानियों में प्राप्त है। नगर अंचल में यह बात वर्तमान में सामान्य ढंग में देखी जाती है किंतु ग्राम्य अंचल में अभी भी लोग इसे साधारण रूप से स्वीकार नहीं कर पाते किंतु पथिक ने इन बातों को बड़े ही साधारण रूप से चित्रित किया है।

पथिक की कहानियों की सिर्फ स्त्री पात्र ही नहीं बल्कि पुरुष पात्र भी शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं। निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों द्वारा किए गए अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। उन्होंने ऐसे किसानों का भी चित्रण किया है, जिन पर गाँव के पटेलों द्वारा शोषण होता है किंतु वह साधारण किसान होने पर भी उन पटेलों के खिलाफ अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं। उनके अन्य निम्न जाति के पात्र भी अपने अधिकार के लिए लड़ते हैं, चाहे वह गाँव के प्रधान के खिलाफ हो या फिर सरकार के खिलाफ ही क्यों न हो?

जहाँ अन्य कहानीकारों की कहानियाँ शहरों की ओर गति कर रही हैं वहीं पथिक की कहानियाँ गाँव की ओर गति कर रही हैं। उनके अधिकतर पात्र ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए हैं। पथिक खुद गाँव से सम्बंध रखते हैं। उन्होंने अपना जीवन गाँव में ही व्यतीत किया है। अपनी कहानियों के पात्रों को उन्होंने खुद देखा है, उन परिस्थितियों को खुद भोगा है। इसलिए उनकी कहानियों में पात्रों का सजीव चित्रण है, इसी कारण उन्हें अन्य कहानीकारों से अलग करते हैं। समकालीन हिंदी कहानी लेखन परम्परा में चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानी लेखन शैली से ही अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। उनकी कहानियों की अन्यतम विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी कहानियों में वर्तमान जीवन में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया है। समाज के प्रायः सभी पहलुओं को उन्होंने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ:

1. टेलीफोनिक साक्षात्कार, 16 अप्रैल 2021

2. हिन्दी साहित्य में लोक तत्व, डॉ रवीन्द्र भ्रमर, पृ.03

3. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.11

4. वही, पृ. 20

5. लोक साहित्य, धीरेंद्र वर्मा, पृ.85

6. गौरु का लपटॉप और गोर्की की भैंस, चरण सिंह पथिक, पृ.117

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

1. चरण सिंह पथिक की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं।

2. पथिक की अधिकतर कहानियों में स्त्री के सबल रूप का चित्रण हुआ है। उनके स्त्री पात्र हमेशा अपने अधिकार और सम्मान के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

3. पथिक की कहानियों के पुरुष पात्रों में भी यह सबल रूप दिखाई देता है। चाहे वह साधारण किसान हो अथवा ऑफिस का कर्मचारी हो।

4. चरण सिंह पथिक ने अपने पात्रों को जीया है। जिसके कारण वे कहानियों में यथार्थ वर्णन कर पाए हैं।

5. पथिक की कहानियों में लोक में प्रचलित विभिन्न प्रथाओं का सजीव वर्णन है।

6. चरण सिंह पथिक ने अपनी कहानियों में पर्यावरण संरक्षण को भी महत्व दिया है।

7. पथिक ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन की चुनौतियों को उकेरा है।

8. पथिक ने अपनी कहानियों में गरीबी, भुखमरी का सजीव चित्रण किया है।

9. पथिक की कहानियों में राजस्थान की माटी, रहन-सहन और आंचलिक जीवन शैली का चित्रण मिलता है।

10. पथिक की कहानियों में भूमंडलीकरण का सजीव वर्णन है।

11. चरण सिंह पथिक की कहानियों की भाषा-शैली सरल और सुबोध है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ:

1. चरण सिंह पथिक, बात यह नहीं है, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, 2005
2. चरण सिंह पथिक, पीपल के फूल, अरू पब्लिकेशंस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2010
3. चरण सिंह पथिक, गौरू का लैपटॉप और गोर्की की भैंस, अरू पब्लिकेशंस प्रा.लि., नई दिल्ली, 2014
4. मैं बीड़ी पीकर झूँठ नी बोलता, कलमकार मंच, जयपुर, 2019

सहायक ग्रंथ:

1. अभिमन्यु सिंह, लोक साहित्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रतिमान, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. अमरसिंह वाधान, समकालीन हिंदी कहानी, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1987
3. कमला प्रसाद, राजेंद्र शर्मा, स्त्री: मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
4. कुन्दनलाल उप्रेती, लोक साहित्य के प्रतिमान, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2017
5. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, 1957
6. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014
7. खगेंद्र ठाकुर, कहानी परंपरा और प्रगति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
8. गिरिधारी लाल शर्मा, कहानी एक कला, ग्रंथ माला प्रकाशन, बांकीपुर, 1941
9. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

10. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
11. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास-3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
12. दानबहादुर पाठक एवं डॉ. मनोहरगोपाल भार्गव, भाषा विज्ञान, प्रकाशन केंद्र लखनऊ, 2015
13. देवीशंकर अवस्थी, नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
14. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013
15. नरेंद्र मोहन, समकालीन हिंदी कहानी की पहचान, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
16. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
17. नीरज शर्मा, अंतिम दशक की हिंदी कहानियाँ: संवेदना और शिल्प, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
18. प्रेमलता तिवारी, कथाकार राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन, लोक हित प्रकाशन, लखनऊ, 2010
19. प्रेम सिंह, भ्रष्टाचार: विरोध, विभ्रम और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
20. प्रवेश कुमार, लोक साहित्य, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
21. पुष्पलाल सिंह, समकालीन हिंदी कहानी, हरियाणा साहित्य अकादेमी, चंदीगढ़, 1987
22. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012

23. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
24. भारत यायावर (सं), हिंदी भाषा (महावीर प्रसाद द्विवेदी), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
25. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
26. मयंक मुरारी, लोक जीवन पहचान, परंपरा और प्रतिमान, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे, महाराष्ट्र, 2021
27. डॉ. रवींद्र भ्रमर, हिंदी साहित्य में लोक तत्व, भारत साहित्य मंदिरा, दिल्ली, 1965
28. राघव प्रकाश, शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1983
29. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
30. राजेंद्र यादव, कहानी स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
31. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
32. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
33. रामविलास शर्मा, लोक जीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1955
34. रैल्फ फोक्स, उपन्यास और लोक जीवन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 1957
35. विवेक शंकर, हिंदी साहित्य, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादेमी, जयपुर, 2016
36. डॉ. शरर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, हिंदुस्तानी एकाडेमी, इलाहाबाद

37. शशिभूषण शीतांशु, शैली और शैली विश्लेषण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
38. श्याम सुंदर दुबे, लोक परम्परा पहचान और प्रवाह, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2003
39. श्याम परमार, भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1954
40. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1992
41. सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल एंड कम्पनी, आगरा, 1971
42. सुरेंद्र यादव, हिंदी कहानी रचना और परिस्थिति, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, 2009
43. सुरेश सिन्हा, हिंदी कहानी: उद्भव और विकास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967

कोश:

1. धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान सं), हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2013
2. बदरीप्रसाद साकरिया, भूपतिराम साकरिया (सं), राजस्थानी हिंदी शब्द कोश, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1993
3. भोलानाथ तिवारी, हिंदी मुहावरा कोश, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2010

पत्रिकाएँ:

1. द्विभाषी राष्ट्रसेवक, सं. क्षीरदा कुमार शइकीया, अंक 10, जनवरी 2024
2. संकल्य, सं. आर. एस. सरार्जु, अंक 2, अप्रैल-जून, 2024